जुलाई-दिसम्बर, 1998

10 रुपये

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

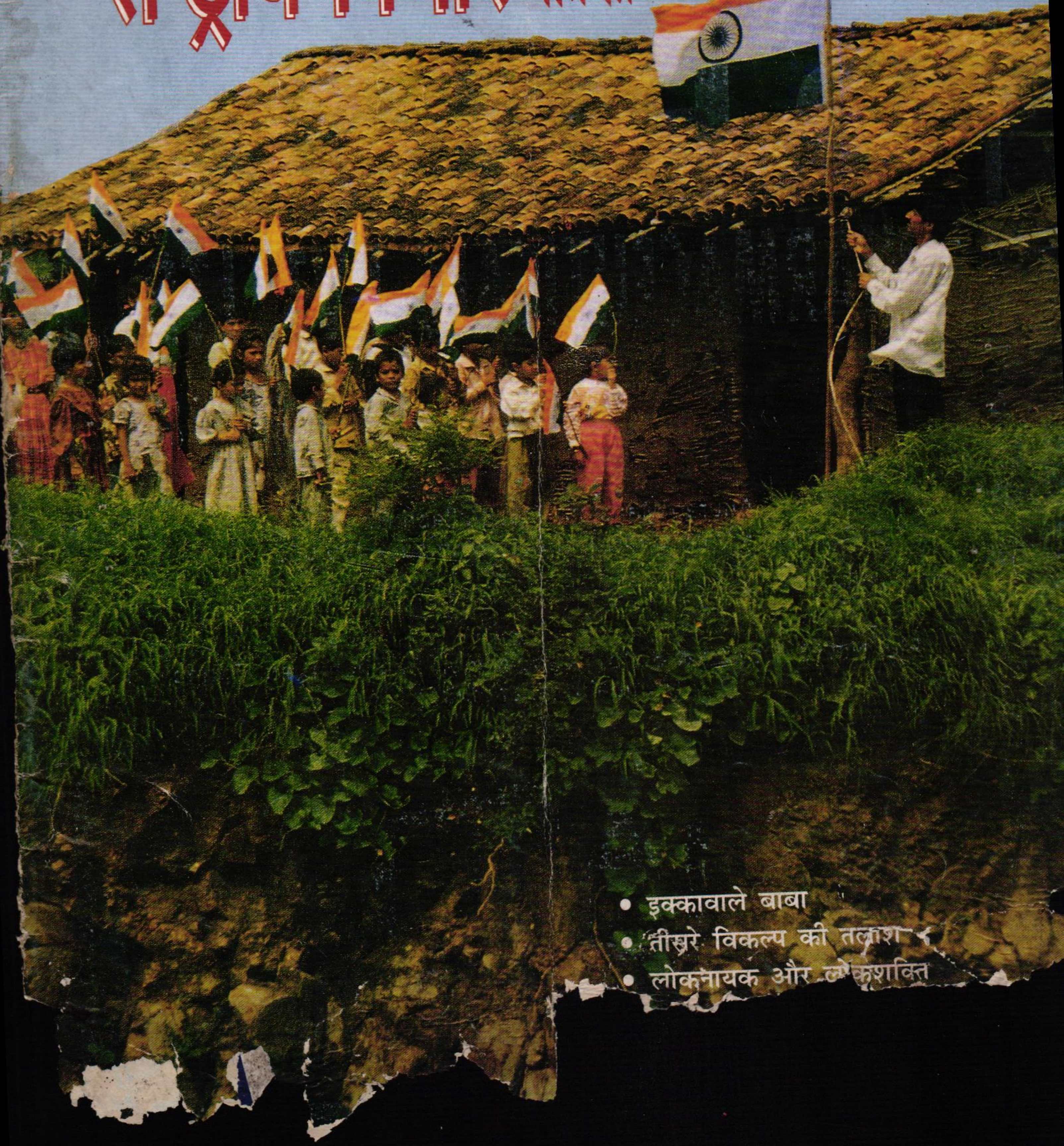

- इक्कावाले बाबा
- तीसरे विकल्प की तलाश
- लोकनायक और लोकशक्ति

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

8954777 (O)
544471 (R)

Office :
Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai - 400 068

Factory :
Plot No.10, Dewan & Sons, Udyog Nagar, Palghat, Distt.-Thane
Mumbai (Maharashtra)

राष्ट्रीय विचार

पत्रिका

राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित
मंच का वैचारिक मुख पत्र
वर्ष-2, जुलाई-दिसम्बर, 1998 अंक-3

पत्रिका-परिवार

संरक्षक :
मान्य. न्यायाधीश श्री बनवारी लाल यादव
पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि
श्री जियालाल आर्य, भा.प्र.से.
श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव

प्रधान संपादक :
सिद्धेश्वर

प्रबंध संपादक :
डॉ. एस. एफ. रब

संपादक :
डॉ. हीरालाल सहनी

सह संपादक :
कामेश्वर मानव

सहायक संपादक :
राधेश्याम, सुधीर रंजन

संपादन सहायक :
मनोज कुमार, शिव कुमार सिंह

संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना - 800 001

विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक :
राम प्रताप सिंह

सहायक प्रबंधक :
अरुण कुमार गौतम

साज-सज्जा :
सुतेन्द्र कुमार, एन. रहमान

कार्यालय सहायक :
विष्णुदेव प्रसाद, दिलीप कुमार

मूल्य : एक प्रति 10 रुपये

आजीवन सदस्य : एक हजार रुपये

प्रकाशक :
राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001
दूरभाष : 228519

कम्पोजिंग :
कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना, फोन : 231708

मुद्रक :
वैशाली प्रिन्टर्स
श्रीकृष्णापुरी, पटना, फोन : 220568

सृजन और सृजनहार

पाठकीय पन्ना 2

सम्पादकीय 6

विचार/चिंतन

राष्ट्रीय एकता की अन्त:धाराएं □ नन्दलाल 8

लोकनायक और लोकशक्ति □ डॉ. विनोद कु. सिन्हा 10

साहित्य

- इक्कावाले बाबा (कहानी) □ कृष्ण कुमार राय 11
- औकात, लूट (लघु कथाएं) □ डॉ. संतोष दीक्षित 16
- न्याय (लघु कथा) □ डॉ. अनिल कु. सिंह 'शलभ' 16
- दलित साहित्य का समाज पर प्रभाव □ जियालाल आर्य 17
- बंजर में बीज : एक दृष्टि □ डॉ. राजवंश पाण्डेय 20
- साहित्य एवं संस्कृति में दलित अस्मिता की पहचान □ हरीन्द्र विद्यार्थी 22

समाज :

- देह व्यापारी का अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह □ डॉ. शुभंकर बनर्जी 25
- दलितों पर दमन आखिर कब तक ? □ रा.वि. संवाददाता 26

राजनीतिक नजरिया :

- तीसरे विकल्प की तलाश □ राधेश्याम 27
- अन्नाद्रमुक की अव्वल अम्मा : वाजपेयी सरकार की दुखती रग 28
- कांग्रेस पर सोनिया गांधी का बढ़ता शिकंजा : कार्यालय प्रतिनिधि 29
- क्षेत्रीय दलों की दरकती दीवारें □ सिद्धेश्वर 30

काव्य-कुंज :

- याचना □ डॉ. वीरेन्द्र कु. वसु 31
- इतिहास अंधेरों का □ वीणा जैन 31
- पाँच हाइकु □ डॉ. भगवतशरण अग्रवाल 31
- स्वर्ण जयंती □ विद्यासागर जोशी 32
- ग़ज़ल □ मृत्युंजय मिश्र 'करूणेश' 32
- पाँच तीर टिकोरे □ रामवचन सिंह आनन्द 32
- ग़ज़ल □ जोगेश्वर जख्मी 32
- सच का उत्ताप □ डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद 33
- क्षणिकाएं □ डॉ. हीरालाल सहनी 33
- ग़ज़ल □ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव 33

नई-पीढ़ी :

- प्रणय-सूत्र □ आशाराम राजपूत 34
- ग़ज़ल □ सरोज कुमार 34
- प्रभु से विनती □ पन्ना लाल 'प्यासा' 34
- ग़ज़ल □ प्रतिभा सिंह 35
- स्वरूप □ मुल्कराज आनन्द 35
- घनश्याम की दो ग़ज़लें : 35

लेखक के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं

हास्य-व्यंग्य :

- कवि व्यभिचारी चोर □ प्रो. डी.आर. ब्रह्मचारी 36
- ऑपरेशन ब्लैक स्टार □ ल. बालसुब्रह्मण्यम 38
- घोटाला : कला या बला □ डॉ. राम भगवान सिंह 40
- नरसंहार में मरने की इच्छा □ अरूण कु. गौतम 42

संस्कृति :

- दहेज के बहाने □ डॉ. कृष्णानन्द द्विवेदी 43

विज्ञान :

- परमाणु परीक्षण : डॉ. कलाम का कमाल □ सुधीर रंजन 45

न्याय जगत :

- अनुच्छेद 356 और राज्य सरकारें □ डॉ. साधुशरण 46

नारी-जगत :

- अधर में लटका महिला आरक्षण विधेयक □ सिद्धेश्वर 47

सेहत-सलाह :

- योग: शरीर और मन के विकास का वैज्ञानिक साधन □ डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव 49

साहित्य-समाचार :

- केरल के कम उम्र के कथाकार 51
- भारतीय भाषा सम्मेलन का अधिवेशन 51
- बिहार के राज्यकर्मियों के लिए फिटमेंट कमेटी की सिफारिशें 51
- राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति समारोह का आयोजन 51

भेंट-वार्ता :

- एड्स वेश्यावृति का परिणाम-डॉ. भागवत प्रसाद- □ सुधीर रंजन 53

पर्यावरण :

- लुप्त होते छोटानागपुरी जंगल □ डॉ. एच.एन सिंह 55

गतिविधियां :

- मंच के बढ़ते कदम 58
- श्रद्धांजलि : काश ! 'अनहद गरजे' शिव प्र. सिंह पूरा कर पाते ! 61
- पत्रिका के शुभेच्छु चल बसे 61

फिल्मावलोकन :

- बिहारी बाबू : सत्रह रन पर नॉट आउट 62
- गायक दलेर मेंहदी को रेकर्ड रकम 62
- राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कवि प्रदीप 62

समाचार-दर-समाचार :

- देश के गौरव : प्रो. अमर्त्य सेन 63
- क्यों दिल दे बैठे मंडेला ग्रेसा को ? 63
- कद जितना छोटा दिल उतना ही बड़ा 63
- शरद पवार के बयान स्वागत योग्य 63
- डी. लिट्. उपाधि का परित्याग 63

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के अंक-2 पर सुधी पाठकों के ढेर सारे पत्र एवं शुभकामनाएं प्राप्त हुई हैं जिससे पत्रिका-परिवार को प्रोत्साहन मिला है क्योंकि पाठकों के स्नेहिल दृष्टि ही पत्र-पत्रिकाओं के प्रेरणा के स्रोत और सम्बल होते हैं । तो यहाँ प्रस्तुत हैं प्राप्त पत्रों के कुछ अंश । –प्रधान संपादक

वाद-प्रतिवाद से परे एक विशिष्ट पत्रिका

पत्रिका विशिष्ट प्रकार की है, यह चिरायु रहे । विचार-प्रधान पत्रिकाओं की कमी को दूर करने के लिए यह पत्रिका त्रैमासिक की जगह मासिक हो । व्यावसायिक पत्रिकाएं नए-से लगनेवाले या एंटीएस्टाब्लिशमेंट प्रकार के विचारों को नहीं देती जिससे लेखकों पर परोक्ष रूप से सेंसर का फीता कस जाता है, जिसे आपकी जैसी पत्रिकाएं ही काट सकती हैं ।

पत्रिका को किसी वाद-प्रतिवाद से न जोड़ने और हर प्रकार के विचारों को खुले हाथ स्वागत करने की आपकी नीति सराहनीय है ।

पत्रिका के लेखकों को उचित पारिश्रमिक दिया जाय । पत्रिका में यों तो हर वर्ग के लिए रचनाएं हैं पर बच्चों के लिए एक भी रचना नहीं । इसलिए बच्चों के लिए एक पृष्ठ अवश्य रख छोड़ें ।

वेलायुद्धन
सी-105, प्रीमियर अपार्टमेन्ट्स, बोडकदेव, अहमदाबाद-380015

संपूर्ण सामग्री विचारोत्तेजक

इस अंक में प्रकाशित प्रायः सम्पूर्ण सामग्री पर्याप्त विचारोत्तेजक हैं । विधा-वैविध्य इसकी उल्लेखनीय विशेषता है । आपको स्थापित रचनाकारों का सहयोग प्राप्त है ।

डॉ. गणेश दत्त सारस्वत
सम्पादक, 'मानस चन्दन', सीतापुर-261001

सामाजिक बदलाव के लिए एक सच्ची कोशिश

पत्रिका के मुखपृष्ठ देखकर ही अच्छा लगा । जैसे-जैसे पढ़ रही हूँ लग रहा है ऐसी पत्रिकाओं की कितनी जरूरत है हमें । बिहार जिसे पिछड़ा प्रदेश समझा जाता है लेकिन जिसका इतिहास स्वर्णिम है, उसी बिहार से यह एक सच्ची कोशिश स्वागत योग्य है । सामाजिक बदलाव के लिए तो बड़ी बात होगी । यह पत्रिका अपनी ऊँचाइयों को छूए ऐसी अभिशंसा है । मेरी ओर से सहयोग की अपेक्षा कर सकते हैं ।

डॉ. [illegible] जैन, कलकत्ता

पर्याप्त पठनीय सामग्री

आपकी पत्रिका जीवन के सभी क्षेत्रों को स्पर्श करती है, अतः इसमें सभी वर्ग और रुचिवाले लोगों के लिए पर्याप्त पठनीय सामग्री है । इसमें राजनीतिक टिप्पणियाँ भी हैं, साहित्यिक भी, सामाजिक और राष्ट्रीय भी । सब कुछ समेटने का प्रयत्न किया है आपने एक लघु काया में । सभी निबंध विचारोत्तेजक हैं ।

डॉ. जगदीश्वर प्रसाद
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष जी.एल.ए. कॉलेज,
डालटनगंज-822101

सुन्दर, साफ-सुथरी एवं विचारोत्तेजक

अब, जबकि बिहार में प्रायः हर पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो चुका है, आपने 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' जैसी सुन्दर, साफ-सुथरी, विचारोत्तेजक पत्रिका निकालकर मर्दानगी का काम किया है ।

रामवचन सिंह 'आनन्द', चक्रधरपुर

विवेक, विचार जगाने का पत्रिका ने बीड़ा उठाया

जब चारों ओर राष्ट्र-समाज नैतिकता-मानवता विरोधी प्रवृत्तियों का तांडव हो रहा हो, तब उनके-प्रतिकार के लिए विवेक, विचार एवं संवेदनाएं जगाने के लिए इस सुरुचिपूर्ण पत्रिका ने बीड़ा उठा लिया है । इसे देखकर तो अनायास ही भगवान कृष्ण की अमरवाणी याद आती है–यदा यदा हि धर्मस्य...।'

निर्मला जोशी, भोपाल

राष्ट्रीय एकता का सूत्रपात

आज के समय में गहन निष्ठा एवं मिशनरी भाव से निकलनेवाली पत्रिकाओं की संख्या यद्यपि अत्यल्प है, फिर भी जो प्रकाशित हो पा रही हैं उनकी ऊर्जा से विद्वत वर्ग अनभिज्ञ नहीं हैं । विविध पृष्ठभूमियों पर आधारित रचनाकर्मियों को जोड़कर निस्संदेह ही आपने राष्ट्रीय एकता का सूत्रपात किया है, साथ ही हिन्दी के बहुआयामी नेतृत्व को भी रेखांकित किया है । आशा है आपका यह प्रयास अनवरत चलता रहेगा ।

डॉ. दिनेश चमोला, संपादक 'विकल्प', देहरादून

पत्रिका की सामग्री परिपक्व वैविध्य के परिचायक

पत्रिका की सामग्री को अपने कुशल चयन एवं संपादन द्वारा आपने अत्यन्त उच्चस्तरीय बना दिया है । चुनावों के विश्लेषण से लेकर, विचार-चिन्तन, समाज, साहित्य, स्वास्थ्य, फिल्म एवं विज्ञान के साथ हास्य-व्यंग्य के पुट, परिपक्व वैविध्य के परिचायक हैं । नारी जगत के अन्तर्गत 'कदम उठाती औरत की पदचाप' भविष्य के नारी समाज की कल्पना की पदचाप होने की संभावना है । किस किस लेख की प्रशंसा करूँ ?

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, अहमदाबाद

सामग्री उच्च कोटि की

पूर्वापेक्षा अंक में काफी निखार आया है। विभिन्न विधाओं से युक्त पत्रिका की सामग्री भी उच्च कोटि की है । अपने शैशवकाल में ही पत्रिका जिस सुन्दर और आकर्षक ढंग से विशिष्ट सामग्री सहित प्रस्तुत की जा रही है, उसे देखते हुए इसका भविष्य निःसंदेह उज्ज्वल प्रतीत होता है । आश्चर्य नहीं कि शीघ्र ही यह पत्रिका देश की गिनी-चुनी श्रेष्ठ पत्रिकाओं में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना ले ।

कृष्ण कुमार राय, वाराणसी

संपादकीय एक चुनौती भरी चेतावनी

जनतंत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ होने के कारण पत्र-पत्रिकाएं किसी राष्ट्र का तापमान मापक-यंत्र होती है । सुखद है कि आप इस तरफ पूर्ण साकांक्ष हैं ।

सेवकाई की गली से प्रभुताई पानेवालों के लिए आपका संपादकीय तथा 'फिर बेताल उसी डाल' एक चुनौती भरी चेतावनी है ।

प्रो. डी.आर. ब्रह्मचारी, समस्तीपुर

व्यापक फलक से भरपूर

पत्रिका का स्वरूप व्यापक फलक से जुड़ा हुआ है । यदि यह पत्रिका टूटते बिखरते मानव-मूल्यों को संरक्षित, सुरक्षित करने में परिवेश का निर्माण कर सके तो निश्चय ही महती सफलता होगी ।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

इतनी उच्च स्तरीय पत्रिका के लम्बे अन्तराल की अवधि पर निकलना प्रतीक्षा की विफलता को तीव्रतर बना रहा है । कारण तो सर्वविदित है ही कि आर्थिक अड़चने दीवार बन जाती हैं । उफ्, कैसी विवशता है यह ?

डॉ. वीरेन्द्र कुमार वसु, सीतामढ़ी

एक तरह के विचार वालों को एकत्र करना आवश्यक

इस पत्रिका के माध्यम से आपने विचार-क्षेत्र में जिस तरह प्रवेश किया है वह निश्चित रूप से स्वागत योग्य है । सचमुच, आज के माहौल में अपना विचार रखना जितना महत्वपूर्ण है उससे कम महत्वपूर्ण एक तरह के विचार वालों को एकत्र करना नहीं है । पत्रिका का वैचारिक स्वल्प विचार-रचना से स्पष्ट होगा । विचार-पत्रिका का प्रकाशन विचार-भ्रष्ट अथवा विचारहीन रचनाओं के एकत्रीकरण से नहीं हो सकता । उसके लिए आपको निर्मम होना पड़ेगा । आप चल रहे हैं, यही काफी नहीं है । आप चलकर कहाँ पहुंचना चाहते हैं इस जानकारी के साथ चलना महत्वपूर्ण है ।

मोहन भारद्वाज, 5/25, आर ब्लॉक, पटना-1

ललित-निबंध की कमी खली

पत्रिका का आवरण अत्यन्त चित्ताकर्षक है दृष्टि पड़ते ही मन मुग्ध हो जाता है । अंतरंग भी विषय-वैविध्य से परिपूर्ण है । ललित-निबंध की कमी खली । रचनाओं के संकलन में आपके संपादकीय कौशल का परिचय मिलता है पत्रिका रचनाओं के कारण संपूर्ण ही नहीं आधुनिक भी है । फिर भी पत्रिका स्तरीयता के शिखर बिन्दु को स्पर्श करने से अभी दूर है । परन्तु आपकी मिहनत आश्वस्त करती है । रामाधार सिंह ब्रह्मणवाद की वकालत कर भी हिन्दू समाज को स्वस्थ नहीं देख पा रहे हैं । विद्यार्थी और अंजुम की गज़लें अच्छी लगीं । शेष रचनाएं कमजोर लगीं । कुशल संपादन के लिए बधाई ।

प्रो. लखन लाल सिंह 'आरोही', बाँका

पत्रिका राष्ट्रीय अभिव्यक्ति का सशक्त अक्स लगी, इसके लिए बधाई ।

शैली बलजीत, ढांग रोड, पठानकोट (पंजाब)

चेतना और दिशा-निर्देश करने वाली पत्रिका

ऐसी उच्च स्तरीय पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद । आज समाज को ऐसी ही पत्रिका की परमावश्यकता है जो समाज में चेतना के साथ दिशा-निर्देश भी करे ।

डॉ. एच.एन. सिंह, राँची

चित्र, रेखांकन, कार्टून का प्रयोग आवश्यक

निश्चित ही सभी वर्गों के लिए पठनीय पत्रिका है । कुछेक सामग्री ने तो काफी प्रभावित किया । 'फिर बेताल उसी डाल' आपका चुनावी विश्लेषण भी महत्वपूर्ण है । चुनाव पर विशेष सामग्री है जो अंक को संग्रहणीय बना रही है । अन्य सामग्री भी सुपाच्य है । कविताओं के चयन में अभी निर्ममता की आवश्यकता है अधिक से अधिक चित्र, रेखांकन, कार्टून का प्रयोग पत्रिका में निखार लाएगा ।

अशोक अंजुम, अलीगढ़

लघु-कथा का समावेश

कलेवर एवं तेवर दोनों पसंद आए । साहित्य एवं समसामयिक विचार का संगम है यह पत्रिका लेकिन विचारों की धारा के समक्ष साहित्य की धारा थोड़ी पतली पड़ गई है । कथा-साहित्य के नाम पर मात्र एक कहानी दी गई है । लघुकथा का सिरे से गायब होना मुझे अच्छा नहीं लगा । काव्य-पक्ष ठीक है । रचनाओं के चयन एवं साम्य में सावधानी बरतें । पत्रिका दीर्घायु हो ।

कृष्णमनु, धनबाद

कला वैरण्य प्रस्तवन और शुद्धमुद्रण की पत्रिका

पटना क्या सम्पूर्ण बिहार से निकलने वाली पत्रिकाओं में इस त्रैमासिक की द्वितीयता नहीं है । कला वैरण्य प्रस्तवन और प्रायः शुद्धमुद्रण इस पत्रिका की चिन्हित करने योग्य विशेषता है । आस्वाद-वैविध्य से संकलित सामग्री के परिवेषण की प्रक्रिया भूपशः श्लाध्य है ।

डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव, पटना-6

महापुरुषों के पत्र एवं डायरी भी प्रकाशित करें

देश व समाज की वर्तमान समस्याओं को लेकर यह अंक अपने आप में रचनात्मक स्तर पर सभी सुधीजनों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम है । 'साहित्य समय की चुनौतियाँ स्वीकारें' का आन्तरिक विषय तो सुन्दर एवं सटीक है किन्तु यह जितनी गहराई की मांग करता है-लेखिका उतनी गहराई तक नहीं जा पायीं । वहीं प्रो. लखन लाल सिंह 'आरोही' रेणु की कथाओं में विचारधारात्मक संघर्ष को अभिव्यक्त करने में पूरी तरह सफल रहे हैं । डॉ. शिवनारायण ने भी त्रिशंकु संसद के साथ न्याय किया है । किन्तु कविताओं ने उस सीमा तक संतुष्ट नहीं किया जिस सीमा को आज कविता स्पर्श कर रही है । आज हिन्दी कविता विश्व के धरातल पर अपनी पहचान बना चुकी है । कविता में थोड़ी सख्ती की आवश्यकता है ।

आपका संस्मरण ठीक है । आप से आग्रह है कि महापुरुषों के पत्र एवं डायरी के पृष्ठ भी प्रकाशित करें । ये विधाएं भी अनिवार्य हैं । विश्वास है प्रत्येक नया अंक नयी ताजगी के साथ प्रस्तुत होगा ।

डॉ. सतीशराज पुष्करणा, महेन्द्रू, पटना-6

युग धर्म का निर्वाह करती पत्रिका

यह पत्रिका युगधर्म का निर्वाह करती है । आज के युग में ऐसी पत्रिका की नितान्त आवश्यकता है । कुछ रचनाएं बहुत अच्छी लगीं । बधाई ।

जगन्नाथ महंती

क्वार्टर नं. 37/एन-1 टाईप रोड, नं-6

जी.पी. स्लोप, पो-कदमा, जमशेदपुर-831005

समस्त लेख ज्ञानवर्द्धक

बिहार से पहली बार इतनी सुन्दर, पठनीय व विचारोत्तेजक पत्रिका प्रकाशित हुई है । प्रवेशांक एवं अंक-2, दोनों अंकों के आवरण पृष्ठ से ये स्पष्ट संकेत है कि स्वतन्त्रता की 50वीं वर्षगांठ पर देश के हिन्दी प्रेमियों के सामने आप अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले हैं ।

असीम कुमार सिन्हा

'राम भवन', गंजपर, रहुई, चन्दौर, नालन्दा-803119

सामाजिक संक्रमण की प्रसव-पूर्व वेदना

यह गागर में सागर है । इसमें समाचार है साहित्य है, गहन चिन्तन है, राजनीति की तरंगे हैं और सामाजिक संक्रमण की प्रसव-पूर्व वेदना है । पत्रिका का यह सुन्दर, स्वस्थ स्वरूप बना रहे, यही मेरी कामना है ।

प्रो. राम भगवान सिंह, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष

बी.एस. कॉलेज, लोहरदगा (बिहार)

पत्रिका का स्तर निखार पर

पत्रिका का स्तर निखार पर है । आप विविध प्रकार की सामग्री से इसे समृद्ध बना रहे हैं । मुझे पूरी आशा है कि आपको अच्छे

रचनाकारों की गंभीर रचनाएं प्रकाशनार्थ मिलेंगी। पत्रिका का कागज, छपाई सुन्दर है। पत्रिका की आर्थिक स्थिति से भी अबगत कराएं।

चन्द्रकान्ता

बी-769 पालम बिहार, गुड़गांव-122017, हरियाणा

बेताल को पुनः डाल पर उतारने में हम सभी आप के साथ भागीदार

राष्ट्रीय विचारों से ओत-प्रोत इस पत्रिका के आलेखों को देखकर प्रसन्नता हुई। निःसंदेह आज के इस संक्रमण काल में ऐसी ही विचारधारा वाली पत्रिकाओं की जरूरत है। यह पत्रिका अपने जन्मकाल के साथ ही राष्ट्रीय पहचान कायम कर ली है। अपने संपादकीय में आपने जो अंधेरे के विरुद्ध दीया जलाने की बात कही है, उसका प्रकाश दिक्-दिगंत में फैलेगा ही। बेताल को पुनः डाल से उतारने की तैयारी में हम सभी आपके साथ भी भागीदार हैं।

'भिक्षावृति एक सामाजिक कलंक' के द्वारा कृष्ण कुमार राय ने समाज की एक कुरीति पर सटीक उंगली उठाई है। सुशीला झा ने अपने लेख में जहाँ साहित्यकारों को ललकारा है, उसी पर जैसे व्यंग्य करता है रावि प्रतिनिधि का प्रतिवेदन "रचनाधर्मियों की संवेदनहीनता का एक नमूना"। प्रो. डी. आर. ब्रह्मचारी का व्यंग्य-'संप्रभुता' जहाँ पसन्द आया, वहीं 'किशु' जी का व्यंग्य 'महिला मुक्ति मोर्चा' साधारण लगा।

अंक की एक मात्र कहानी 'नई पीढ़ी' बहुत पसंद आई। डॉ. राजनारायण राय ने कम शब्दों में ही पीढ़ियों के अन्तराल और सोच को सामने रख दिया है। दरअसल जबतक नयी पीढ़ी के स्वार्थ पर दबाव नहीं पड़ेगा वह बुजुर्गों की भावनाओं को यूं ही नजर अंदाज और दर-किनार करते रहेंगे।

चितरंजन भारती, असम

आशा की कहानी सुबह लेकर आई पत्रिका

पत्रिका का दूसरा नयनाभिराम अंक मेरे सामने है। वाह्य जितना आकर्षक, अन्तरंग उससे भी अधिक। वाह्य जितना आँखों को तृप्ति देता है, अन्तरंग मन को गहरे तक आंध्यापित करता है। सहज ही आपकी शक्ति पर भरोसा किया जा सकता है। आपमें संगठन की क्षमता है और संकल्प की दृढ़ता भी।

पत्रिकाओं की खत्म होती जा रही आवाज के बीच आपकी 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' आशा की सुहानी सुबह लेकर आई है। पत्रिका की रचनाएं स्तरीय है। कई ऐसी उल्लेख्य रचनाएं हैं, जिनके कारण पाठकों की जानकारी में इजाफा हुआ है। ऐसी ही रचनाओं में 'मराठी भाषा के शीर्षस्थ कवि नारायण सुर्वे' के सम्मान की विस्तृत रिपोर्ट है या फिर 'क्या साहित्यकार जाफरी के जीवन से सीखेंगे ? 'युगबोधी रचनाओं में डा. उषा मेहता का संवाद, डॉ. शिवनारायण का 'त्रिशंकु संसद', 'योग की उपादेयता', 'फिर बेताल उसी डाल'। सिद्धेश्वर जी, रूबी भूषण 'कदम उठाती औरत की पदचाप', अटल जी की कविताएं देकर आपने अपने साहित्य में रुचि रखने वाला पाठकों को एक अच्छा उपहार दिया है। निर्मला जोशी का पूरा गीत अच्छा लगा। किन्तु पहला छंद टूटा सा लगा। छंद गंधी रचनाओं में टूटन अखर जाता है। संपादक स्वयं कविताओं को देखें।

श्री रघुनाथ प्रसाद 'विकल' जी की रचना श्रेष्ठता का प्रमाण है। पत्रिका का अंक सुरुचिपूर्ण तो है ही साथ ही युग चेतना का संवाहक भी। मैं आपकी इस बात से सहमत हूं कि रचनाएं अच्छी होंगी तो पाठक स्वयं खिचे आएंगे।

विन्ध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, पटना

पाठकों की एक अच्छी खासी खुराक

आपकी लगन, परिश्रम, मनोयोग, सूझ-बूझ और दूरदृष्टि ने पत्रिका को सर्वप्रिय और सर्वोपयोगी बना दिया है। साहित्य, समाज, संस्कृति, राजनीति सबको समेटकर रचनात्मकता की ओर अग्रसर होने का आपका प्रयास और उद्देश्य सर्वथा सराहनीय है। विविध विषयों और विविध विधाओं से संबंधित सामग्रियाँ पाठकों को एक अच्छी खुराक देती हैं। चुनाव'98 पर आपका विश्लेषण, प्रो. वीरकेश्वर प्र. सिंह का लोकतन्त्र से सम्बन्धित आलेख, कृष्ण कुमार राय का भिक्षावृत्ति तथा डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक का सुभद्रा कुमारी चौहान के लेख पठनीय है। महिला लेखिकाओं में सुशीला झा और रूबी भूषण के लेख उपयोगी बन पड़े हैं। इन्हें और भी लिखने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पत्रिका का बहिरंग चक-दक वाला है ही, अन्तरंग भी कम दम-खम वाला नहीं है। पत्रिका की लोकप्रियता और व्यापक प्रचार-प्रसार का प्रमाण तो मैं 'पाठकीय पन्ना' को ही दे देता हूँ-'हाथ कंगन को आरसी क्या' ?

मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', लोहिया नगर, पटना

साहित्य व समाज के लिए रचनात्मक कार्य

आज के इस घोर व्यावसायिक युग में अपने स्तर पर पत्रिका का प्रकाशन बड़ी बात है। सच में आप साहित्य व समाज के लिए एक रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेख आदि स्तरीय हैं, पठनीय हैं। पत्रिका के लिए मेरी ओर से शुभकामनाएं स्वीकारें।

सतीश सागर, उपसंपादक, हिन्दुस्तान दैनिक, नई दिल्ली

हिन्दी डाइजेस्ट का रूप ग्रहण करती पत्रिका

पत्रिका का यह अंक साहित्यिक रचनाओं के साथ राजनीतिक समाचारों से युक्त, वैज्ञानिक उपलब्धियों सहित अपने आकर्षक रूप में एक अच्छा मनोहर हिन्दी डाइजेस्ट का रूप ग्रहण कर लिया है। आपने अपने संपादकीय निबंध में 'फिर बेताल उसी डाल' कहकर राजनीतिज्ञों और मतदाताओं को आत्ममंथन करने का निमंत्रण दिया है।

उर्दू की कहावत है कि 'सनद की दिशा बदलती है-नशा नहीं।' परन्तु लोकनायक जयप्रकाश कहते थे कि मात्र दिशा नहीं दशा और नशा भी बदलो। सरकार बदलने से कुछ नहीं होगा। समाज को बदल डालो। आपने अटल जी की कविताओं को छापकर यह कहना चाहा है कि राजनीति मनुष्य को पशु से भी बदतर बना देती है। परन्तु कविता उसे पशु बनने से रोकती है। अटल जी कवि पहले हैं-प्रधानमंत्री बाद में, यह हर भारतीय जान ले और स्वयं अटल जी भी इस सत्य को भूल न जायें-इसकी याद तीन कविताएं दिलाती रहेंगी।

ईश्वर करे आपकी कलम परवान चढ़े और आपकी पत्रिका हिमालय की उच्चता का स्पर्श करे।

डॉ. विनोद कुमार सिन्हा, सीतामढ़ी

नन्दा जी याद आए

इस अंक में काफी पठनीय सामग्री हैं। नन्दा जी का पुण्य स्मरण हो आया, अतीत के कई पृष्ठ सजीव हो उठे। बिहार की धरती पत्र-पत्रिकाओं की कब्रगाह रही है। साधनों की कमी, उत्साह के अभाव, अतिव्यावसायिकता, योग्य लेखकों के असहयोग, जनसाधारण की उपेक्षा और सत्ता के दंश

आदि कारणों से यहाँ की पत्रिकाएं दीर्घजीवी नहीं होतीं । आशा है आप इन दुष्ट ग्रहों से बचते हुए सोद्देश्य पत्रकारिता के मिशन में सफल होंगे । छपाई, सफाई आकर्षक हैं । सामग्री सुरुचिपूर्ण हैं, बधाई ।

डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल', जमशेदपुर

यात्रा वृतान्त पठनीय

पत्रिका बहुत अच्छी है तथा इसमें सभी विषयों का समावेश हुआ है । मुझे 'वन्देमारतम' कविता अच्छी लगी तथा आपका यात्रा-वृतान्त पठनीय है ।

आदित्य प्रकाश सिंह, गर्दनीबाग, पटना

पत्रिका नूतन आशा की किरणें

अंक-2 की प्राप्ति के उपरान्त हृदयान्तर्गत एक अपूर्व उमंगोत्साह की लहरें उद्वेलित होने लगीं । आज देश में लुप्त हो रही सामाजिक-साहित्यिक पत्रिकाओं के झंझावात में यह पत्रिका एक नूतन आशा की क़िरणें विकिर्ण कर रही है । पत्रिका हर तरह की सामाजिक, साहित्यिक व सर्वोपयोगी सामग्रियों से ओत-प्रोत है । इसके विचारोत्तेजक, प्रभावोत्पादक एवं सटीक सम्पादकीय विवश कर देता है चिन्तन को । सम्पादकीय 'गागर में सागर' और 'बिन्दु में सिन्धु-सा' है । पत्रिका सामाजिक गुलशनों को अपनी सौरभ से सुभाषित करेगी ।

डॉ. हरिकृष्ण 'अग्रहरि', भेलाही, पू. चम्पारण

मुद्रण आवरण सभी श्रेष्ठ

ईर्ष्या होती है ऐसी उत्कृष्ट पत्रिका देखकर । मुद्रण, सामग्री चयन, आवरण सभी श्रेष्ठ हैं । एक ही पत्रिका में इतने सारे स्तम्भ देखकर मन हर्षित हो गया ।

प्रो. रामनारायण पटेल 'राम', भुक्ता, डडीसा

धारदार विचारोत्तेजक संपादकीय

पटना से ऐसी स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन स्वागत योग्य है । आकर्षक आवरण व रोचक पठनीय अंतरंग सामग्री ने पत्रिकाओं को संग्रहणीय बना दिया है । धारदार विचारोत्तेजक संपादकीय के साथ-साथ सभी रचनाएं एक पर एक हैं ।

राजीव नयन तिवारी, संपादक-'मंदारश्री', भागलपुर

अवलोकनोपरान्त मन प्रफुलित हो गया कि राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीयता की संवाहक पत्रिका पटना से प्रकाशित हो रही है । इसमें लघुकथाओं को भी स्थान दिया जाय तो एक विधा को फलने-फूलने का अवसर मिलेगा । साथ ही एक अच्छा पाठक वर्ग भी मिल जाएगा ।

ज्वाला सांध्यपुष्प, 'परम्परा', समस्तीपुर

अनुपम सज्जा-साज

राष्ट्रीय विचार का मिला, अंक दूसरा आज ।
सुन्दरम, मुखपृष्ठ है, अनुपम सज्जा-साज ।।
चौसठ पृष्ठों में भरा, रूचिर रम्य साहित्य ।
गजलें, व्यंग्य-आलेख बढ़ा रहे लालित्य ।।

रामचन्द्र निर्मोही 'शिक्षक', दरभंगा

सत-चिन्तन की वर्तिका

राष्ट्रीय विचार की सतत आवश्यकता आज ।
सत-चिन्तन की वर्तिका, ज्योति करे समाज ।।
ज्योतित करे समाज सुरभि, साहित्य की अनुपम ।
श्री सिद्धेश्वर के संपादन का सुफल यह उत्तम ।।

प्रो. विनोद विश्वास, मधुबनी

गागर में सागर

राष्ट्रीय विचार पत्रिका का, अभिगत हुआ द्वितीय अंक
गागर में सागर समाहित किया, उद्भासित चत्वारि मरांक
प्रशस्ति पत्र लोकप्रियता के प्रतीक है अपने आप में सहज समाधान
संपादक का स्तुत्य योगदान, हिन्दी भाषा का वर्चस्व महान

डॉ. रामलखन राय, समस्तीपुर

संगठन हो या संगोष्ठी, पत्रिका का प्रकाशन हो या पुस्तक का, मैं आपकी सामर्थ्य का कायल रहा हूँ । स्वतंत्रता की पचासवीं वर्षगांठ पर बूंद-बूंद बटोर कर आपने अपनी पत्रिका को जैसे सागर बना दिया है । क्या कुछ नहीं है इसमें ? मैं तो चकित हूँ । बधाई !

आपका आमुख-आलेख 'फिर बेताल उसी डाल' पढ़कर मुझे इधर की लिखी कविता की ये पंक्तियां याद आ गईं–

संविधान निर्माता जय
मतपेटी, मतदाता जय
जन-गण मन ठन ठन गोपाल
भारत भाग्य विधाता जय
वही ढाक के पत्ते तीन
उसी डाल पर फिर बेताल
यह पचासवां आया साल !

'चिन्तन', 'समाज', और राष्ट्र के अन्तर्गत छपे आलेख अपेक्षित गम्भीरता से लिखे गए हैं । किन्तु, काव्यांजलि स्तम्भ में कुछ कमजोर रचनाएं भी आ गई हैं । 'समाचार-दर-समाचार' के आलेख सोचने को विवश करते हैं । 29वां अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह की रिपोर्टिंग अच्छी है ।

इस उत्कृष्ट पत्रिका के सम्पादन के लिए पुन:बधाई ।

सत्यनारायण, कदमकुआँ, पटना

सुरूचिपूर्ण सामग्रियों का चयन

पत्रिका में सामग्री का चयन सुरूचिपूर्ण है और विषयों की विविधता उसकी संप्रेषणीयता को सार्थकता प्रदान करती है । कथा-साहित्य संबंधी सामग्री कुछ बढ़ाएं तो श्रेयस्कर होगा । साहित्यिक कृतियों की समीक्षा को भी समय-समय पर स्थान देने का प्रयास करें । कुल मिलाकर पत्रिका पठनीय है और मुझे विश्वास है कि अच्छी पत्रिकाओं के अकाल के युग में ज्योति-स्तंभ का कार्य कर सकेगी ।

गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव
अपर उपनियंत्रक महालेखापरीक्षक, नई दिल्ली

कुछ और पत्र

डॉ. एस. बशीर, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, चेन्नई । डॉ. हीरालाल नन्दा प्रभाकर, संपादक 'ऋतम्बरा', मुम्बई । गंगा प्र. रोसड़ापुरी 'गंगेश', रोसड़ा, समस्तीपुर । गोपाल सिंह, सरदार पटेल चौक, मोतिहारी । डॉ. शुभंकर बनर्जी, स्वतंत्र लेखक, नई दिल्ली । डॉ. सुरेन्द्र प्र. जमुआर, दुजरा, पटना । डॉ. राजेन्द्र परदेशी, भारतीय कला साहित्य संस्थान, देवरिया । कौशल किशोर आर्य, कपरपुरा, मुजफ्फरपुर । डॉ. अनिल कुमार सिंह 'शलभ', वलीपुर, प्रतापगढ़ (उ.प्र.), मुल्कराज आनन्द, पसराहा, खगड़िया । जयशंकर बाबु, युगमानस, गुन्तकल, आ.प्र. । प्रभात कुमार धवन, सव्य ज्योति पुस्तकालय, पटना सिटी । राकेश प्रियदर्शी, पुनायचक, पटना । रमाकान्त सुधांशु, डुमरा-इसमायलपुर, गया । प्रजापति चरणदास, स्वतंत्र पत्रकार, पन्ना, म.प्र. । सत्यनारायण नाटे, नावाटोली, डालटनगंज । नृपेन्द्र नाथ गुप्त, अ.भा. भाषा साहित्य सम्मेलन, शेषपुरा, पटना । नलिनीकान्त, संपादक-'कविताश्री', अण्डाल, वर्दमान । प्रभाकर शेजवाडकर संपादक, साहित्य सेतु सागर, गोवा । लोकनाथ वर्मा, बांके, नेपाल । चन्द्रशेखर भारती, संपादक 'सिद्धान्त', मुंगेर । गणेश राम, फुसरोबाजार, बोकारो । रवीन्द्र ठाकुर, समस्तीपुर । विजय प्रताप सिंह, संपादक-'पंखुड़िया', 'विलासपुर । आश्विनी कुमार 'आलोक', प्रभानिकेतन, समस्तीपुर । ल. बालसुब्रमण्यम, अहमदाबाद । शेखर कुमार श्रीवास्तव, इमलीघाट, दरभंगा । अवतंशर जनीश, संपादक 'चर्चित-अर्चित, प्रकाशनगर, राय बरेली । रामजीवन सिंह, संपादक-'शोषित मुक्ति', सूरत सदन, पटना । हृदयनारायण संपादक 'शिखा संकेत', पुनायचक, पटना । शिवशंकर सहनी, संपादक 'सरसा इक्सप्रेस', समस्तीपुर ।, डॉ. खुशीलाल मंडल, मधुबनी । रघुवंश प्र. रसिक, आँगन, समस्तीपुर । गौरी शंकर राय, दरभंगा । विपिन कु. पाण्डेय, मधुबनी । राम गोपाल भगत, दरभंगा । यदुनन्दन रसिक, समस्तीपुर । डॉ. आर.के. हाजरा, उपाध्यक्ष, भारतीय रेड क्रॉस सोसायटी, कलकत्ता।

संपादकीय

पत्रिका का तीसरा अंक आपके हाथों में है। इसमें कतई संदेह नहीं कि पिछले अंकों में ख्यातिप्राप्त रचनाकारों का अपेक्षित सहयोग इस पत्रिका को मिला। आखिर तभी तो सुधी पाठकों ने इसकी साज-सज्जा तथा विविध विधाओं की सामग्रियों को सराहा है, यह उनके पत्रों की प्रतिक्रिया से स्पष्ट है। सहयोग करने वाले सभी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे अपना सहयोग बनाए रखेंगे।

हम चाहते हैं कि इस पत्रिका के माध्यम से न केवल राष्ट्रीय विचारों को आप तक पहुंचाते रहें बल्कि राजनीति की कुरूपता को भी साहस के साथ बेनकाब करते रहें क्योंकि देश में कर्णधारों के रवैयों के कारण आम आदमी को जिस पीड़ादायी यंत्रणा से गुजरना पड़ रहा है उसकी अनदेखी यह पत्रिका भला कैसे कर सकेगी ?

इस पत्रिका का एक साल आज पूरा हो रहा है यानी आज हम सब इसकी पहली वर्षगांठ मना रहे हैं। पिछले साल इसी दिन, इसी समय इसके प्रवेशांक का लोकार्पण न्यायमूर्ति माननीय श्री धर्मपाल सिन्हा के हाथों हुआ था। तब से आज तक हमने भारत की आजादी की 50वीं वर्षगांठ, 12वीं लोकसभा का चुनाव तथा अनेक परिवर्तनों को देखा। उनपर बेबाक, निर्भीक और विचार प्रधान रचनाएं आपके समक्ष प्रस्तुत की गईं जिसका स्वाद आपने लिया। इसलिए इसकी वर्षगांठ के अवसर पर अपने विज्ञ पाठकों एवं रचनाकारों को हम अपनी शुभकामनाएं देना चाहेंगे।

इस माह में हम अपनी पत्रिका के प्रथम वर्षगांठ के साथ-साथ भारत की चार महान विभूतियों की जयन्तियाँ मना रहे हैं। विगत दो अक्टूबर को **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी** तथा अपनी थोड़ी सी अवधि के प्रधानमंत्रीत्व काल में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले **लाल बहादुर शास्त्री** की। 11 अक्टूबर को **लोकनायक जयप्रकाश नारायण** तथा आज यानी 31 अक्टूबर को **लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल** की जयन्ती का उत्सव मनाया जा रहा है।

आज के दिन हमें इस बात पर गौर करना होगा कि जिन सिद्धान्तों, आदर्शों तथा उद्देश्यों को लेकर वे जीवन भर जूझते रहे, संघर्ष करते रहे और यहाँ तक कि उन्हें कुर्बान होना पड़ा, आखिर उसका क्या हुआ ? पोखरण में परमाणु परीक्षण के पश्चात यहाँ के लोग यह सोचने के लिए आज विवश हैं कि अहिंसा और पंचशील के सिद्धान्त पर गर्व करने वाले इस राष्ट्र के दावे का क्या होगा। हिंसा और युद्ध के माहौल में गांधी की प्रासंगिता कहाँ रह जाती है। रक्षा क्षेत्र के गिरते मनोबल तथा चीन एवं पाकिस्तान के धौंस का जबाव देने के लिए परमाणु परीक्षण की उपादेयता है, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता। पर जिस देश की 40 प्रतिशत जनता गरीबी की सीमा रेखा से नीचे जीवन बसर करने को अभिशप्त हो, मंहगाई की मार ने जिसकी कमर तोड़ डाली हो, युवकों के लिए रोजगार की समस्या जटिल हो, कहीं ऐसा तो नहीं कि इन विफलताओं पर पर्दा डालने तथा लोगों का ध्यान इन समस्याओं से हटाने के लिए यह सब करिश्माई खेल खेला जा रहा हो। **बापू आदमियत को, आदमी को बम से ज्यादा महत्व देते थे। वे बम बनाने की जगह आदमी के भीतर की अच्छाइयों को जगाना चाहते थे। उन्होंने अहिंसा पर आधारित एक ऐसे स्वस्थ समाज का सपना देखा था जिसमें सारी सुखकारी स्थितियाँ निर्मित हों। क्या आज मनुष्यता इस सपने को साकार करने की दिशा से विचलित नहीं हो रही है ?** पिछले दिनों मुम्बई में 'मी नाथुराम गोडसे बोलतोय' जो मराठी नाटक खेला गया क्या वह गांधी के दर्शन व चिन्तन को गलत साबित करने का एक कुत्सित प्रयास नहीं था ? जाहिर है किसी नाटक के ऐसे ध्वंसात्मक मकसद को महज अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर माफ नहीं किया जा सकता। बापू की प्रतिष्ठा और लोकप्रियता की कीमत पर उनके हत्यारे गोड्से के विचारों की छूट नहीं दी जा सकती।

दिल्ली के राजघाट पर युवक राजवल्लभ द्वारा अहिंसा के इस पुजारी की समाधि को तोड़ने की घटनाएं क्या दर्शाती है ? **हम देशवासियों को आखिर हो क्या गया है ? क्या सरकार भी इतनी सक्षम नहीं कि राष्ट्र के इस श्रेष्ठतम प्रतीक की रक्षा कर सके ? क्या इससे सरकार की विफलता सिद्ध नहीं होती ?** इसी प्रकार लंदन स्थित भारत के पूर्व उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी के हस्तक्षेप से दो अप्रवासी भारतीय गुलाम कादिरनं और नातपूरी ने लंदन में हुई गांधी के ऐतिहासिक पत्रों की नीलामी में खरीदकर उन्हें तोहफे के तौर पर राष्ट्र को भेंट कर दिया। **एक वह भारतीय है जो विदेश से बापू की दुलर्भ धरोहर वापस लाकर गौरवान्वित होता है और दूसरा वह भारतीय है जो बापू की समाधि को तोड़ने तथा उनके अहिंसात्मक आदर्श को झूठलाने का दुस्साहस करता है। एक की जितनी सराहना और दूसरे की जितनी निन्दा की जाय, वह कम होगी।** इसी प्रकार उ.प्र. के न्याय मंदिर में एक अनुसूचित जाति के अतिरिक्त जिला न्यायाधीश के स्थानान्तरण पर नवागन्तुक न्यायाधीश के द्वारा उनके चैम्बर कक्ष को गंगाजल से धुलवाने तथा उसकी पवित्रता को बहाल कराने की घटना भी कम चौंकानेवाली नहीं है। 21वीं सदी के दरवाजे पर दस्तक देते भारत में अभी भी ऐसी संकीर्ण विचारधाराओं के समुद्र में आकंठ डूबा रहना विश्व के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश के लिए क्या यह एक गंभीर चुनौती नहीं ? अश्पृश्यता को दूर करने के लिए जीवन भर संघर्ष करने वाले बापू की

जयन्ती मनाते वक्त इन सवालों का जबाव अवश्य ढूंढना होगा ।

भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के पुराने नारे का विस्तार जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान निश्चय ही स्वागत योग्य है । पर वाजपेयी जी को यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत कृषि प्रधान देश होने पर भी जहाँ एक ओर अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि, कृषि से जुड़े अनेकानेक कारणों से यहाँ के किसानों की हालत दिन-ब-दिन दयनीय होती जा रही है वहीं दूसरी ओर आतंकवादियों तथा अड़ोस-पड़ोस के देशों के साथ छायायुद्ध के कारण सीमाओं पर जवानों को अनावश्यक रूप से शहीद होना पड़ता है । यह तो कहिए कि **श्री जार्ज फर्नांडीस के प्रतिरक्षा मंत्री होने पर जवानों का मनोबल बढ़ा है क्योंकि उन्होंने जवानों के दुःख-दर्द एवं उनकी पीड़ा को परखा ही नहीं, नजदीक से देखा भी है ।**

आधुनिक युग में जब भारत में वैज्ञानिकों, अभियन्ताओं को यथोचित सम्मान तथा कार्य करने का अवसर नहीं मिल पाता है तो मजबूरी वश उन्हें पलायन करना पड़ता है तथा देशभक्ति के कारण जो भारतीय वैज्ञानिक विदेश से पुनः भारत वापस लौट आते हैं उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है । यह खेदजनक है ।

यह हर कोई जानता है कि जिनकी आँखों में आजन्म सामाजिक विषमता को दूर करने का सपना रहा उस लोकनायक जयप्रकाश नारायण में यह हिमाकत थी कि वे भारत के ऊँचे से ऊँचे पद पर आसीन हो सकते थे । किन्तु जीवन भर जिसे दूर से ही नमस्कार करते रहे उसी कुर्सी के लिए आज के नेता तथा उनके चेले हर तरह का कुकर्म करने को तत्पर हैं । सिद्धान्तहीन गठबन्धनों द्वारा सत्ता प्राप्त करने की राजनीतिक दलों की नीतियाँ लोकतन्त्र का माखौल उड़ा रही हैं । जिस सामाजिक विषमता को जयप्रकाश जी दूर करने की बात की थी वह असमानता की खाई आज और चौड़ी होती जा रही है । ऐसा लगता है कि उनके सपने को साकार करने के लिए आने वाले वर्षों में सच्चे देशवासियों को और अधिक संघर्ष और त्याग करना होगा ।

आज के दिन भारत की उस महान हस्ती की 123वीं जयंती का उत्सव मना रहे हैं जिसकी दूरदर्शिता, सूझबूझ तथा अप्रतिम योगदान की वजह से इस देश को अखण्ड भारत कहते हैं । सरदार पटेल एक ऐसे परिणामवादी और व्यवहारिक हस्ताक्षर थे जिनमें भविष्य को देखने की क्षमता थी । 14 अगस्त, 1998 को संसद परिसर में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का अनावरण करते हुए भारत के राष्ट्रपति **श्री के.आर. नारायणन** ने कहा कि आज सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह होगी कि हम सबसे पहले भारतीय बनें और प्रान्तीयता के चक्कर में न पड़ें जैसा कि सरदार पटेल हमसे अपेक्षा रखते थे । वे एक सामाजिक दृष्टि रखते थे तथा भारत की सामाजिक समस्याओं और लोगों की सामाजिक आंकाक्षाओं के प्रति सजग थे । वे अपने निःस्वार्थ और उज्ज्वल राजनैतिक जीवन में हमेशा अपने देश के साम्राज्यवाद की गुलामी के खिलाफ और सामाजिक कुप्रथाओं एवं रिवाजों के नीचे दबे लोगों के लिए लड़ते रहे । उन्होंने सामाजिक परिवर्तन और दलित हितों को अपने ध्यान से ओझल नहीं होने दिया ।

इस परिप्रेक्ष्य में देखने पर आज स्थिति यह है कि हम 'भारतीयतम्' की भावना के बजाय अपने अहम को कहीं ज्यादा महत्व दे रहे हैं । आज प्रत्येक भारतीय एक निश्चित परिधि के अन्दर ही सीमित हो गया है । सर्वाधिक त्रासद स्थिति यह है कि हमारा समाज इतने टुकड़ों में बंट गया है कि एक सम्पूर्ण राष्ट्र की कल्पना भी व्यर्थ प्रतीत होने लगता है । पर हम शायद यह भूलते जा रहे हैं कि स्वस्थ समाज के बगैर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कतई सम्भव नहीं है जिसकी कल्पना लौह पुरुष ने की थी । असम में बढ़ते उग्रवाद, स्वतंत्र बोडो लैंड की माँग कर रहे गिरोह की तेज होती गतिविधियाँ तथा कश्मीर के देशद्रोहियों का बढ़ता मनोबल इस बात की ओर संकेत है कि आतंकवादियों के हाथ लम्बे होते चले जा रहे हैं । धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर राज्य में आज जिस प्रकार निर्दोष एवं निहत्थे लोगों की हत्याएं की जा रही हैं वह केन्द्र तथा राज्य सरकार के लिए बेहद शर्मनाक बात है क्योंकि वहाँ की जनता सरकार की सुरक्षा पर नहीं, बल्कि उग्रवादियों के रहमोकरम पर जिंदा है । ऐसी स्थिति में जरूरत इस बात की है कि **आतंकवादियों एवं अलगाववादियों को हतोत्साहित करने के लिए उसके राजनीतिक सरोकारों पर प्रहार करना होगा, क्षेत्रीय विकास की समस्याओं के समाधान में सरकार को अग्रसर होना होगा । साथ ही अपना उल्लू सीधा करने की घृणित नीति का त्याग करना होगा तथा आत्मचिंतन कर समर्पित भावना से जीवन मूल्यों का दीप अपने मन मंदिर में प्रज्ज्वलित करना होगा । तभी सरदार पटेल के सपने साकार हो सकेंगे ।** इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि ईंट चलाने वाले तभी रुकते हैं जब उन पर पत्थर बरसने लगते हैं । क्या सरकार पत्थर बरसाने पर भी विचार कर सकती है ?

हम कृतज्ञ हैं उन सभी रचनाकारों, पत्रिका परिवार के सदस्यों तथा विज्ञापन दाताओं के जिन्होंने पत्रिका के संवर्द्धन तथा प्रकाशन में सहयोग प्रदान किया है । श्रीपालपुर, पुनपुन (पटना) स्थित एस.एम.डी. कॉलेज के हिन्दी प्राध्यापक डॉ. कृष्णानन्द द्विवेदी तथा पत्रिका-परामर्शी के कविवर गोपीवल्लभ सहाय ने जिस आत्मीयता से इस अंक को सजाने-संवारने तथा पठनीय बनाने में अपनी विद्वता एवं क्षमता का परिचय दिया है उससे उनकी सृजनधर्मिता की विश्वसनीयता प्रकट होती है । हम आभारी हैं उनके ।

अंत में हम आभार व्यक्त करते हैं राष्ट्रीय विचार मंच के उन सभी सदस्यों, शुभेच्छुओं तथा इस पत्रिका के कम्पोजर एवं मुद्रक के प्रति जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसके प्रकाशन में सहयोग प्रदान किया है ।

(सिद्धेश्वर)
प्रधान संपादक

सरदार पटेल की 123वीं जयंती के अवसर पर विशेष आलेख

राष्ट्रीय एकता की अन्त:धाराएं

❒ नन्दलाल

प्राचीन काल से भारत सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं वरन् जातियों, नस्लों एवं भौतिक तथा भौगोलिक दृष्टियों से वैविध्य पूर्ण रहा है। इस देश की भौगोलिक विशेषताएं इतनी विविध हैं कि यहाँ गर्म मरूस्थल भी हैं तो अत्यंत उपजाऊ मैदानी समतल, घने जंगल हैं, तो हिमालय पर्वत की हजारों मीलों तक फैली श्रेणियां हैं। इस देश की सीमाएं 32.9 लाख किलोमीटर तक फैली हुई हैं। विश्व में अधिकतम जनसंख्या वाले देशों में भारत का स्थान दूसरा है। इसके अतिरिक्त इस देश में अनेक बोलियां बोली जाती हैं और यह देश कई भाषा-भाषी क्षेत्रों में बंटा हुआ है। यहां भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ, विभिन्न विचारधाराएं तथा राजनैतिक एवं आर्थिक समूह विकसित हुए हैं।

यद्यपि प्रारंभ में हिन्दू शासक समान धर्मावलंबी थे परन्तु वे भी अपने बीच छोटे-छोटे सुख एवं शक्ति के लोभ से बंटे हुए थे। यह विभाजन उत्तरकालीन मुस्लिम एवं मुगल शासकों द्वारा चिरस्थाई बना दिया गया। यहां तक कि मुगल सम्राटों में सर्वश्रेष्ठ-अकबर भी अपने सर्वाधिक उदार सिद्धांतों द्वारा देश की जनता को एकता के सूत्र में नहीं बांध सके। संभवत: इसका कारण साम्राज्य का वृहत् आकार और संचार एवं परिवहन सुविधाओं का अभाव रहा हो। ब्रिटिशों के आगमन के पूर्व देश को एकीकृत करने के लिए कोई गंभीर एवं विश्वसनीय प्रयास नहीं किए गए थे। देश छोटे-छोटे शाही राज्यों में बंटा था और किसी भी राजा को अपने-अपने साम्राज्य के विस्तार को छोड़कर देश की एकता के लिए प्रयास करने में वास्तविक अभिरुचि नहीं थी। **ब्रिटिशों के आगमन के पश्चात् जब विजित एवं विजेताओं ने एक साथ मिलकर विदेशी ताकतों का विरोध किया तो अनेकता की धारा के बीच से एकता की अन्त:धारा बहने लगी।**

स्वतंत्रता के पश्चात् ही परिस्थिति की गंभीरता लोगों के मानस-पटल पर उभरने लगी। एकता की आवश्यकता पूर्वापेक्षा अधिक अनुभव की जाने लगी क्योंकि संघर्ष एवं कठिनाई से प्राप्त की गई स्वतंत्रता का ध्यान रखना था। छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व देश की एकता के मार्ग में एक बड़ी बाधा थी। **यह सरदार पटेल की क्रियाशीलता थी जिसने सभी स्वतंत्र राज्यों को एक छत्र के नीचे ला खड़ा किया।** फलस्वरूप वे एकीकृत भारत के अभिन्न अंग बन गए। यह राष्ट्रीय एकता के प्रति वस्तुत: पहला कदम था जिसके माध्यम से कुछ हद तक राजनैतिक स्थायित्व प्राप्त किया गया।

सरदार पटेल अखण्ड भारत के उच्चतम राजनीतिक नेताओं में थे। उनका तेजस्वी व्यक्तित्व समस्त भारत पर अपना प्रभाव व्यक्त करता था। स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों लौह पुरुष सरदार पटेल एक परम दृढ़ नायक थे। पद को राष्ट्र सेवा के लिए उन्होंने स्वीकार किया था। अनेक सदियों तक उनका उदाहरण इस देश के लोगों में तेज, वीरता, शौर्य, साहस, अध्यवसाय, त्याग और निरन्तर राष्ट्र सेवा का भाव भरता रहेगा।

राष्ट्रीय एकता सारे विश्व के लिए सदा ही एक महत्वपूर्ण समस्या रही है। किसी देश का विकास इसके अन्तर्गत निहित एकता पर निर्भर होता है। हमारे देश के लिए तो इसका विशेष महत्व है क्योंकि यहां लोगों के जीवन में काफी विविधताएं हैं। अमेरिका सदृश उन्नत देश में भी एकीकरण की प्रक्रिया क्रमिक रूप में गतिशील हुई थी। अब्राहम लिंकन एवं राष्ट्रपति कैनेडी सदृश नेताओं ने देश के लोगों के बीच एकता कायम करने के अपने प्रयास में हत्यारों की गोलियों के शिकार हो गए। बुद्ध, ईसा मसीह एवं गांधी जैसी महान् आत्माएं भी मानव के बीच समानता में विश्वास करती थीं। उनमें से प्रत्येक इस बात में विश्वास करते थे कि समाज या राष्ट्र समग्र रूप में मात्र एकता, भाईचारा एवं सहयोग की नींव पर ही टिका रह सकता है।

आजकल देश में सब कुछ ठीक नहीं है। राष्ट्रीय एकता का लक्ष्य अभी भी कोसों दूर है। लोग जाति, रंगभेद, उप-जाति, भाषा-विवाद, क्षेत्रीयता एवं संस्कृति आदि की भावनाओं से ग्रस्त एवं बंटे हुए हैं। अत: जब तक ऐसी विभाजक शक्तियां मौजूद हैं, जो संघर्ष एवं विवादों को बढ़ावा देती हैं, तब तक वास्तव में राष्ट्रीय एकता प्राप्त नहीं हो सकती है। असहमति विवाद को बढ़ावा देती है। सत्ता की चाह, सम्पन्न होने की लालसा, धार्मिक असहिष्णुता एवं भाषाई कट्टरपन ने सही अर्थ में राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति को असंभव बनाने का काम किया है। कुछ स्वार्थी लोग अनपढ़ लोगों की अज्ञानता एवं कुछ पढ़े-लिखे लोगों की भलमनसाहत का शोषण करने में संकोच नहीं करते हैं। लोग (निरीह जनता) यह महसूस नहीं करते हैं कि उनके तथाकथित नेतागण उनकी एकता नहीं चाहते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता और भी अधिक चिन्तनीय हो जाती है। परन्तु मात्र राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता का अनुभव करना और इसकी शुरुआत ऊपर बैठे (सत्तासीन) लोगों के द्वारा की जाय, की इच्छा रखने मात्र से उद्देश्य की पूर्ति नहीं होगी।

इसके लिए एक सशक्त एवं समर्पित नेतृत्व की आवश्यकता है । लोगों को यह समझाना होगा कि आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक विवादों से जन्मी बुराइयों को दूर करना जरूरी है । उन्हें सम्पूर्ण एकता के मूल्य को समझना होगा । इस राष्ट्रीय लक्ष्य को पाने के लिए राजनैतिक नेतृत्व को विश्वसनीय एवं सकारात्मक होना आवश्यक है । धार्मिक प्रचार घृणा, दुर्भाव, लोभ, भय एवं तुच्छ रीति-रिवाजों को दूर करने के लिए किया जाना चाहिए । विश्व बन्धुत्व का विचार ही सभी धर्मों का मूलमंत्र हो ।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपने कार्यों की अच्छाई और बुराई के बारे में चिंतन करना चाहिए। विद्यालय में प्रत्येक छात्र को राष्ट्रीय एकता के मूल्य और इससे होनेवाले लाभ का पाठ-पढ़ाया जाना चाहिए । युवक एवं युवतियों को सद्व्यवहार सिखाया जाना चाहिए । ऐसे प्रशिक्षण को विद्यालयों में नियमित पाठ्य-क्रमों के एक हिस्से के रूप में शामिल किया जाना चाहिए । हममें से प्रत्येक व्यक्ति को यह निश्चित रूप से जान लेना चाहिए कि राष्ट्रीय एकता न सिर्फ एक विचार है अपितु यह एक महत्वपूर्ण धारणा और विकास की प्रक्रिया का एक विशिष्ट हिस्सा है । अत: राष्ट्रीय एकता की शिक्षा युवकों को (अग्रज/पुरानी पीढ़ी) द्वारा अनुशासित ढंग से दी जानी चाहिए ।

देश का संविधान प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्रदान करता है । प्रत्येक नागरिक समान है और उन्हें अपने लिए एक विधि-सम्मत पेशा चुनने का अधिकार है । सरकार ने कुछ नीतियां निर्धारित की है जिसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों, जातियों, नस्लों के नागरिकों को यह अवसर प्राप्त है कि वे एक दूसरे को समझें, जानें और एक दूसरे की भलाई के लिए परस्पर व्यवहार करें । राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निष्ठापूर्वक कार्य करना ही आज की अनिवार्यता है । केवल राष्ट्रीय एकता की बातें करने से कोई निष्कर्ष नहीं निकलेगा । हमें एक होना है इसे निश्चित रूप से जानें । सम्पूर्ण राष्ट्र को एक परिवार की तरह एक होना है । यह तब तक नहीं होगा जब तक हम एक दूसरे को नहीं जानेंगे, जात-पात, रंग-भेद आदि की बेड़ियों को नहीं तोड़ेंगे । हमें सर्वधर्म समभाव रखते हुए प्रत्येक धार्मिक आस्था को सम्मान देना होगा और व्यवहार में राष्ट्रीय भाईचारे को अपनाना होगा । हम सभी को एक उच्च राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करना होगा । बिना सामूहिक प्रयास किए कोई राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता है । यदि हम लोग मन में ठान लें तो यह संभव हो सकता है । चूंकि हमारा देश विविधताओं से पूर्ण है अत: सही अर्थ में राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को पाने के लिए हमें अतिरिक्त प्रयास करना होगा । इसके लिए देश की जनता को उचित शिक्षा देनी होगी ताकि वे राष्ट्रीय एकता के महत्व को समझ सकें । स्वार्थी तत्वों को भोली भाली जनता का शोषण करने की छूट नहीं दी जानी चाहिए । यही उचित समय है जब हम राष्ट्रीय एकता के बारे में अनुभव करने और चर्चा करने के बजाय सकारात्मक और विश्वसनीयता पूर्वक इसके लिए प्रयास में जुट जाएं ।

जय हिन्द

संपर्क : महालेखाकार (लेखा परीक्षा) 1,
बिहार, पटना-800 001

With Best Compliments from :

PC SERVICE SOURCE

Managed by **Jetking** SCHOOL OF ELECTRONIC TECHNOLOGY

2nd Floor, Om Vihar Complex, Kadam Kuan, Patna-3
Phone : 665825, Fax-0612-665825, Pager-9622576389

- ☆ **Installation & maintenance of Personal Computers**
- ☆ **Installation & maintenance of Computer peripherals like Dot Matrix, Ink-jet and Laser Printer, Floopy drive, Harddisk, Scanner, Modem, LAN card and Hubs, UPS, CVT, etc.**
- ☆ **Installation and maintenance of operating system like DOS, UNIX, NOVELL NETWARE, WINDOWS NT & 98 etc.**

SUDHIR RANJAN
M.A. (Pub. Admin.), M.Sc. Electronics)
Hardware & Networking Engineer

JITENDRA KUMAR, B.E.
Certified Novell Administrator
Microsoft Certified Professional

लोकनायक और लोकशक्ति

❐ डॉ. विनोद कुमार सिन्हा

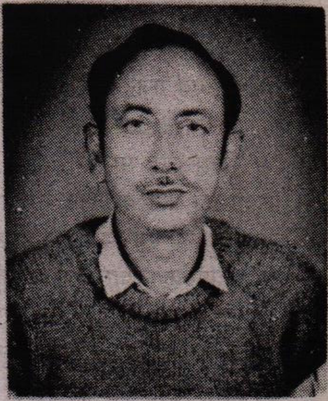

"जयप्रकाश है नाम समय की करवट का, अंगड़ाई का भूचाल बवंडर के ख्वाबों से भरी हुई तरुणाई का, जयप्रकाश है नाम जिसे इतिहास समादर देता है बढ़कर जिसके पद चिह्नों को उर पर अंकित कर लेता है"
–राष्ट्रकवि दिनकर

राष्ट्रकवि दिनकर की उपरोक्त काव्यमयी शब्दावली में जयप्रकाश की परिभाषा ही नहीं, संक्षिप्त इतिहास भी करवट लेकर जीवंत हो जाता है ।

उस समय की करवट का जन्म 11 अक्टूबर 1902 (विजयादशमी) को हुआ था जिसे भारतीय इतिहास ने सादर 'लोकनायक' कहा । लोकनायक के पढ़ने की मेज पर एक ओर रहती थी रामायण, भारत-भारती, प्रिय प्रवास और दूसरी ओर रहती थी फिजिक्स-केमीस्ट्री की पुस्तकें । मन साहित्य और अध्यात्म में रमता था तो मस्तिष्क विज्ञान में । विस्कौंसिन के ओहियो विश्वविद्यालय में लोकनायक के एम.ए. के शोध का विषय था-'सामाजिक विषमता',

शोध-पत्र विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर दिया गया परन्तु लोकनायक जीवन पर्यन्त शोध करते रहे ।

जब भारत परतंत्र था तो दिसम्बर 1936 को फैजपुर में उन्होंने एक भाषण में कहा था :- "हिन्दुस्तान में एक मुट्ठी लोग ज्यादा से ज्यादा लोगों को चूस और दूह रहे हैं, और ऐसा सिर्फ अंग्रेजी राज के चलते नहीं हो रहा है । अंग्रेजी राज के नहीं रहने पर भी ऐसा होता रहेगा । विदेशी राज्य खत्म होगा और न बन्द होगा जनता का भीषण शोषण । यानी हमारे उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो सकेगी जिनकी चर्चा हमने शुरू में की थी ।"

कहा गया है कि महापुरुष भविष्यवक्ता होता है । महापुरुष सिर्फ बड़ा आदमी नहीं होता । एक प्रतीक होता है किसी महान उद्देश्य और कर्म का । मानव जन की तमाम आकांक्षायें एकत्र होकर एक महापुरुष का रूप धारण करती है । **लोकनायक के मस्तिष्क में भी भारत के भविष्य के प्रति दुश्चिंता थी और आजादी के पूर्व ही उन्होंने घोषणा की थी कि जब तक व्यवस्था नहीं बदलेगी, नैतिकता नहीं आयेगी तब तक भारत में सु-राज नहीं आयेगा-स्वराज्य भले आ जाए । समाजवाद एवं सामाजिक विषमता पर लोकनायक का इतना गंभीर अध्ययन एवं चिन्तन था जिसके कारण महात्मा गांधी ने भी उन्हें 'समाजवाद का आचार्य' कहा था ।**

समाजवाद न शासन से पैदा होता है, न लाठी से और न क्रान्ति से । इतिहास में कई हिंसक क्रान्तियाँ हुई परन्तु एक भी क्रान्ति अपने अभिष्ट आदर्श प्राप्त करने में सफल नहीं हुई । समाजवाद आयेगा एक मात्र लोकशक्ति से । लोकनायक जानते थे इस मूलमंत्र को । लोकनायक ने सदा लोकशक्ति की दुहाई दी । उसी लोक शक्ति के कारण डाकुओं ने उनके आगे आत्मसमर्पण किया । उसी लोक भावना के कारण वे विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के अग्रणी सैनिक बने । भूदान आंदोलन के समय उन्होंने 1972 में ही कहा था :- "जब तक गाँव में कोई मानसिक परिवर्तन नहीं होगा-सामाजिक परिवर्तन भी नहीं होगा । आज हमारे देश में लोक-शक्ति का नितांत अभाव है । मिल-जुलकर काम करने की मनोवृति नहीं है । यदि पांच आदमी कोई काम करते होंगे तो उसे बिगाड़ने के लिए दूसरे पांच तैयार हो जाते हैं । जब तक हम इस मनोवृति को नहीं छोड़ेंगे और मिल जुलकर अपना काम स्वयं करने की शक्ति नहीं करेंगे तब तक दिल्ली की गद्दी पर आप चाहे जिसे बैठा दें, देश आगे नहीं बढ़ सकेगा ।

1974 में लोकनायक के इशारे पर भारत का जन समुद्र उमड़ गया । इतने दिनों का कांग्रेसी शासन समाप्त हो गया । इन्दिरा जी को इन्डिया और दुर्गा कहा जाता था-वे भी पराजित हो गईं । लोकनायक ने समझा कि लोक शक्ति जग गई । परन्तु नये सांसदों के **समक्ष 24 मार्च 1977 के दिन संसद के केन्द्रीय कक्ष में लोकनायक ने एक चेतावनी दी :-"मैं मानता हूं कि राजशक्ति और लोकशक्ति का आपस में गहराई से संबंध है और दोनों को साथ-साथ चलना होगा । दोनों की हैसियत बराबर है । राजशक्ति लोकशक्ति से बड़ी नहीं है । दोनों का आपस में ऐसा संबंध है जैसे दोनों हथेलियों का । अगर राजशक्ति की हथेली लोकशक्ति के नजदीक नहीं आयेगी तो ताली नहीं बजेगी । ऐसी स्थिति आ सकती है कि दोनों में संघर्ष हो और एक क्रान्ति आ जाए ।"**

तत्कालीन सरकार ने लोकनायक के विचारों की अनसुनी ही नहीं अवहेलना की तथा उस दुश्चिन्ता से बेखबर होकर राज करते रहें नतीजतन तीन वर्ष से भी कम आयु में सरकार चली गई । लोकनायक ने कहा था कि सत्ता और संपत्ति बहुत से अवगुणों की जननी है । उस पर लोक शक्ति की निगरानी चाहिए । एक दूरदर्शन भेंट में उन्होंने कहा था:– "कोई भी गलत रास्ते पर जा सकता है अगर उसे

शेष पृष्ठ 22 पर

कहानी

इक्कावाले बाबा

❑ कृष्ण कुमार राय

इक्कावाले बाबा के नाम से जानी-पहचानी जानेवाली बीसवीं सदी के प्रथम दशक की जीती-जागती तस्वीर पूरे नब्बे साल बाद आज भी कन्हैया की काया में अपनी अल्हड़ जिन्दगी जी रही थी । किसी अजायब-घर में नहीं बल्कि इसी नगर की एक छोटी सी मलिन बस्ती में । सैकड़ों ऋतु-परिवर्तन देखने के बाद भी अबतक बाबा में पौरुष था, आँखों में ज्योति थी, आवाज में बुलन्दी थी और खून में उफान था । क्या मजाल की उसकी शान के खिलाफ कोई एक शब्द भी बोलकर बेदाग निकल जाता । सेर का जवाब सवैय्या से और मुक्के का जवाब लात से देने के लिए वह हमेशा कमर कसे तैयार रहता था । इस उम्र में भी सारे मुहल्ले में उसकी धाक थी, कद्र थी, दबदबा था । उसे देखकर ऐसा लगता था मानो वक्त भागता जा रहा है, लेकिन उसकी जिन्दगी एक ही जगह थमी हुई है । शताब्दी का अवसान भले ही आसन्न हो, इस दुनिया से बाबा के प्रस्थान की घड़ी अभी काफी दूर थी । जवानों जैसे जोशो-खरोश के साथ वह अगली सदी की ओर उन्मुख और उसकी अगवानी के लिए बेताब था ।

मन्त्र-तन्त्र की विद्या में भी गजब का दखल था उस बूढ़े का । सर्प-दंश और बिच्छू के डंक मारे का जहर उतारने में तो मानो उसे महारत हासिल थी । दूर-दूर से लोग रोते-छटपटाते उसके पास आते और हंसते-बोलते वापस जाते । सूखा, पीलिया, उन्माद जैसी कितनी ही जानलेवा गम्भीर बीमारियों का शर्तिया इलाज वह केवल झाड़-फूंक और जड़ी-बूटियों से करता था । हाँ, पिछले कुछ सालों से उसे कोकीन खाने की बुरी लत लग गयी थी । नतीजन उसका सारा शरीर हर समय जैसे अगियाता रहता था । भीषण ठण्ढ और ठिठुरन भरी रातों में भी लोग उसे सड़क के किनारे एक सेमल के वृक्ष तले अपनी जर्जर खटिया पर फटी सी चीकट कथरी बिछाये एक मटमैली चादर के नीचे धंसा देखकर आश्चर्यचकित रह जाते थे ।

बाबा की टुटही खटिया भी शायद बाप-दादों से विरासत में मिली बेमिसाल चीजों में से एक थी । लुण्ड-मुण्ड होकर सोने के बाद भी घुटनों के नीचे का हिस्सा हमेशा पाटी से बाहर जरूर जोड़े हुए थे, लेकिन बीच में उनका नामो-निशान प्राय: मिट चुका था । जब बाबा अपनी खटिया पर लेटता तो भूमि चूमती उसकी पीठ तथा ऊपर टंगी टांगे और सिर किसी दुरूह योगासन-मुद्रा की प्रतीति कराते थी । कुछ समय पहले तक लोग उसे दिन के वक्त प्राय: अपनी खटिया के साथ मल्ल-युद्ध करते ही देखा करते थे । यह जोर-आजमाइश वह खटमल वंश का समूल विनाश करने के अभिप्राय से किया करता था । लेकिन उसका यह क्रिया-कलाप बन्द हुए इधर सालों गुजर चुके थे । या तो अब उसकी खटिया से खटमलों का पूरी तरह सफाया हो चुका था या अपना अस्तित्व खोते जा रहे खाट के तार-तार हो चुके बन्धनों के कारण उनके समक्ष गम्भीर आवासीय संकट उत्पन्न हो गया था । बाबा की जरावस्था ने भी खटमलों को भुखमरी के कगार तक पहुंचा दिया था । लगता है इन्हीं सब वजूहात से खटमलों की जमात ने शायद खुद-बखूद बाबा की खटिया से डेरा कूच कर लिया था । यों भी बाबा के खून में अब कोकीन का जहर इस कदर घुल-मिल चुका था कि खटमलों का सामूहिक आक्रमण भी उसका बाल बांका नहीं कर पाता था; उल्टे आक्रमणकारी खुद चारो खाना चित्त मरे पड़े नजर आते । वजह चाहे जो भी हो, बाबा की अजूबी खाट से अब खटमलों का अस्तित्व पूरी तरह मिट चुका था, इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं ।

बाबा की निपूती बुढ़िया भी जिन्दगी की दौड़ में अभी तक उसके साथ होड़ लगाये हुए थी । पौरुष में बूढ़े बाबा से भी दो हाथ आगे । आज से पचहत्तर साल पहले जब वह ब्याह कर कन्हैया के घर आयी थी तभी उसने अंड़ोस-पड़ोस के कुछ संभ्रान्त लोगों के घर चौका-बर्तन और झाड़ू-पोंछे का धन्धा पकड़ा था । तब से वह लगातार यही काम करती चली आ रही थी । कितने ही घरों की घरनियाँ इस बीच गुजर चुकीं, मालकिने बदल चुकीं, लेकिन बुढ़िया की दिनचर्या में कोई तब्दीली नहीं आयी । जाड़ा हो या गर्मी और चाहे मूसलाधार वर्षा ही क्यों न हो रही हो, ठीक पांच बजे, सुबह वह घर से अपने धन्धे पर निकल पड़ती । चार-पांच घरों का चौका-बर्तन, झाड़ू-पोंछा निबटा कर नौ बजते-बजते वह लौट आती और अपनी निज की घर-गृहस्थी के कामों में पिल पड़ती । दुपहरिया ढलते ही वह फिर चल देती दूसरे जून का धन्धा करने और तब जाकर शाम को कहीं छ: बजे तक छुट्टी मिल पाती । उसे यन्त्रवत जीवन का नपा-तुला सिलसिला पिछले पचहत्तर सालों से घड़ी की सूई की तरह निरूतर चल रहा था । न जाने केसी काठी पायी थी और कौन सी अमृत की घरिया पीकर इस धरती पर आयी थी वह बूढ़ी जिसने अपनी इस लम्बी उम्र में कभी रोग-व्याध की मुँह भी नहीं देखा । छठे-छमासे कभी गंगा-स्नान के लिए काशी-प्रयाग जाना होता या किसी नातेदारी रिश्तेदारी में बयाह-शादी या मरनी-करनी पड़ जाती तभी वह अपने धन्धे से एक-दो दिन की छुट्टी लेती थी । उसकी गोद में खेले मुहल्ले-टोले के न जाने कितने बच्चे बड़े हुए, ऊँचे-ऊँचे ओहदों की शान बढ़ायी और कबके नौकरी से अवकाश ले चुके । कुछ तो इस दुनिया से भी कूच कर गये । उसके सामने की आयी कितनी ही बहुरियों की चंदियों पर चांदी की परतें चढ़ चुकी और कितनी क्वांरी लड़कियां, जिनके शरीर को कभी उसने हल्दी के उबटन से निखारा था, जिन्दगी की मंजिल पारकर चिता की गोद में समा चुकीं । लेकिन बाबा की बुढ़िया अब भी हट्टी-कट्टी थी । शरीर में

झुर्रियां पड़ जाने पर भी अभी वह किसी की मुहताज न थी। मुहल्ले भर की काकी, दादी, नानी बनी वह आज भी अपने पौरुष के बल-बूते पर शान और सम्मान की जिन्दगी जी रही थी।

बाबा पिछले पच्चीस सालों से जीविकोपार्जन के लिए अपना इक्का हांक रहा था और धीरे-धीरे इक्कावाले बाबा के नाम से विख्यात हो चुका था। उसका असली नाम जानने वाले तो शायद अब कम ही लोग बचे थे। अपने ही शब्दों में जवानी में वह अनेक रेलवे स्टेशनों पर लम्बे अर्से तक कुलीगिरी कर चुका था। जब जवानी की ढलान आयी तो उसने इक्कावानी शुरू कर दी। इस नब्बे साल की परिपक्वावस्था में भी बाबा पौरुष में क्या बीसवीं सदी के जवानों से कुछ कम था? शरीर झुर्रियों से जरूर ढंक चुका था और खोपड़ी भी लगभग खल्वाट हो गयी थी; लेकिन पुरुषत्व का प्रतीक उसकी बड़ी-बड़ी सफेद घनी मूंछें अब भी चेहरे को रोबीला बनाये हुए थी। सफेद बुरूश जैसी दाढ़ी के बालों पर महीनों बाद कहीं हज्जाम का उस्तरा चल जाता। जब वह रंग-बिरंगी पैबन्द लगी अपनी लुंगी और गूदड़ बाजार से कौड़ियों के मोल क्रय की गयी बदरंगी बेनाप, मैली-कुचैली सी कमीज, जिसकी एक अदद लापता आस्तीन हाथ को हवाखोरी की खुली छूट दिये होती और जिसकी पीठ तथा वक्ष की ओर वायु-प्रवेश के लिए कितने ही छोटे-बड़े झरोखे मौजूद होते, पहिनकर शान के साथ मूंछों पर ताव देता अपना इक्का लेकर कमाने निकलता तो उसकी सर्कस के जोकरों जैसी अजीबो-गरीब हुलिया देखते ही बनती थी। इक्का भी उसका अपने नमूने का नायाब और बेजोड़ था। उस पर बिछी लगभग श्याम वर्ण की हो चली गद्दी, जिसका असली रंग कभी कोरें मारकीन जैसा रहा होगा, अपने ढंग की निराली वस्तु थी। शायद दस-पांच रुपयों की खातिर रोज कचहरी का रास्ता नापने वाले चन्द ऐसे बूढ़े-बुजुर्ग वकील ही उस पर बैठने का सुख उठाने का साहस कर सकते थे जिनकी वकालत में अब कोई दम नहीं रह गया था और जिनकी काली अचकनों पर ज़मी कीट की तहें न जाने कितने वर्षों से ज्यों का त्यों अपना आधिपत्य जमाये हुए थीं।

बाबा की घोड़ी का तो पूछना ही क्या था। आज से करीब पच्चीस साल पहले जब उसने इक्का हांकना शुरू किया था, तभी बलिया के ददरी मेले से इस घोड़ी को खरीद कर लाया था और तब से यही उस निःसन्तान की सन्तान थी। सजा-धजाकर और गले में पीतल की छोटी-छोटी घण्टियों की लड़ी पहना कर वह घोड़ी को इक्के में जोतता था। आजतक कभी उसने अपनी घोड़ी की पीठ पर चाबुक नहीं चलायी, फिर भी उसके तनिक से इशारे पर वह हवा से बातें करने लगती थी। पहले घोड़ी का जिस्म खासा भरा-पूरा था, लेकिन इधर कई सालों से उसकी एक-एक पसली झलकने लगी थी। पिछली गर्मियों में जब नगर परिषद के अधिकारियों ने बाबा के इक्के की श्रेणी का निम्नीकरण कर दिया तब उसे बेहद ग्लानि हुई थी और आंखों में आंसू छलछला आये थे। भरसक उसने इस नाइन्साफी का विरोध भी किया था, लेकिन कौन सुनता उस गरीब की फरियाद को। नतीजतन अब उसके इक्के की गिनती दर्जा सोयम, यानी निम्नकोटि के इक्कों में होने लगी थी, जोकि अपनी घोड़ी और इक्के के सामने वह आज भी अच्छे-अच्छे गहरेबाजों को कुछ नहीं समझता था। अपनी घोड़ी के गुणों का बखान करते वह अघाता ही न था। उसका विश्वास था कि पिछले जनम में यह घोड़ी निःसन्देह उसकी बेटी थी। तभी तो वह उसकी बाहों में मुंह डालकर इस तरह इठलाती-दुलराती और मुस्कुराती थी। यहां तक कि उसके दुःख में आंसू भी बहाती थी। वह भी उसे हृदय की अनन्त गहराइयों से प्यार करता था। वह बतलाता था कि एकबार चोरों ने उसके घर में नकब लगानी शुरू की। पास ही में खूंटे से बंधी उसकी घोड़ी खड़ी थी। चोरों को देखकर उसने जोर-जोर से हिनहिनाना शुरू कर दिया। जब चोरों ने देखा कि घोड़ी के लगातार हिनहिनाने की आवाज से उनके मंसूबों पर पानी फिरना चाहता है तो एक चोर ने क्रुद्ध होकर पास में पड़ी लोहे की छड़ उठाकर उसकी पीठ पर प्रहार कर दिया। लेकिन वफादार घोड़ी आहत होकर भी और जोर से हिनहिनाती रही। आखिरकार बाबा के कानों तक उसकी आवाज पहुंच गयी और जब उसने जाकर देखा तो चोर अपने काम में मशगुल थे। गोकि वह अकेला था और चोरों की संख्या चार थी, लेकिन 'चोर का दिल आधा' वाली कहावत उस दिन पूरी तरह चरितार्थ हुई। उसकी एक ही बुलन्द ललकार पर सारे चोर दुम दबाकर ऐसे भागे जैसे भेड़िये को देखकर भेड़ों का झुण्ड। बाबा ने करीब जाकर देखा तो नकब लगभग फूट चुकी थी। उसकी प्यारी घोड़ी ने उसे लुटने से बचा लिया था। उस दिन बाबा ने घोड़ी से लिपटकर उसे खूब चूमा और प्यार किया। तभी से उसने घोड़ी को दिये जाने वाले भींगे चने की मात्रा में भी आधा किलो रोज का इजाफा कर दिया था। इसी तरह के न जाने कितने किस्से वह अपनी घोड़ी के बारे में सुनाया करता था।

गलचउर की कला में पारंगत बाबा को बच्चों से विशेष लगाव था। अपनी कोई औलाद न होते हुए भी वह मुहल्ले भर के हर जाति और हर वर्ग के बच्चों को अपने ही नाती-पोतों जैसा स्नेह और प्यार देता था। फुर्सत के वक्त टोले-मुहल्ले के छोटे-बड़े बच्चे उसे घेरकर बैठ जाते। तरह-तरह के किस्से-कहानियों और रोचक चुटकुलों की पोटली खोलकर बाबा उनका मनोरंजन करता। पिछले साल विजय-दशमी के मेले में जब उसने पड़ोस के एक छोकरे को दो रुपये की मुटठी भर रेवड़ियाँ खरीदकर मिनटों में चट कर जाते देखा तो उसकी आंखें अनायास ही नम हो गई। उसे अपना वह जमाना याद आया जब वह मुहल्ले के चार-छः बच्चों को साथ लेकर मेले-ठेले में निकल जाया करता था और वापसी में चार पैसे की रेवड़ियाँ खरीदकर बच्चों में बांट देता तो सबके सब रास्ते भर कुटकुटाते चले आते। अब तो जैसे घोर कलयुग धरती पर उतर आया था।

पिछले सप्ताह एक दिन अचानक कचहरी के रास्ते में तेज रफ्तार से आती हुई ईंटों से लदी एक ट्रक बाबा के खाली इक्के से टकरा गयी। उसका इक्का सड़क की बायीं ओर था, इसमें सन्देह नहीं। लेकिन बिचारा ट्रक ड्राइवर भी लाचार था। सड़क पार करने की हड़बड़ी में भागते एक स्कूली बच्चे की जान बचाने की कोशिश में ट्रक ड्राइवर अपना सन्तुलन खो बैठा और यह दुर्घटना घटित हो गयी। बच्चा तो बच गया लेकिन ट्रक के जोरदार धक्के से बाबा का इक्का बुरी तरह

क्षतिग्रस्त हो गया। साथ ही उसकी घोड़ी की अगली दोनों टांगों में भी गहरी चोटें आयीं। एक पैर की तो हड्डी भी टूट गई। दुर्घटना के साथ ही घोड़ी सड़क पर लुढ़क गयी और बाबा छटककर दूर जा गिरा। लेकिन मुकद्दर का धनी था कि उसे कहीं खरोंच तक नहीं आयी। ट्रक को भी आंशिक रूप से क्षति पहुंची थी। दुर्घटनाग्रस्त ट्रक का ड्राइवर और कई राहगीर बाबा की मदद के लिए दौड़ पड़े, लेकिन उनके पहुंचने से पहले ही वह धूल झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ और दौड़कर सीधे अपनी घोड़ी के पास पहुंचा। इक्का टूटने का उसे तनिक भी गम न था, लेकिन अपनी प्यारी घायल घोड़ी को देखते ही उसके मुंह से एक लम्बी चीख निकल पड़ी। तमाम लोगों ने मिलकर घोड़ी को उठाने की नाकाम कोशिश की लेकिन बिचारी खड़ी न हो सकी। उसके पैरों की चोटें साफ नजर आ रही थी। एक पैर की हड्डी टूटकर खाल से बाहर निकल आयी थी। किन मुसीबतों से गुजर कर बाबा की आहत घोड़ी और टूटा इक्का दुर्घटना-स्थल से घर तक पहुंच पाये, इसकी भी एक खासीं लम्बी दास्तान है। यहाँ तो महज इतना ही जान लेना काफी होगा कि किसी तरह उसकी घायल घोड़ी और टूटा इक्का उसके दरवाजे तक पहुंच गये थे।

बाबा के दुआरे पहुंचने के बाद से ही घोड़ी जो एक जगह बैठी तो बस बैठी ही रह गयी। पांच-सात दिनों के अन्दर उसने कुल दो-चार मुट्ठी भींगे चने और थोड़ी सी हरी दूब के अलावा कुछ भी नहीं खाया था। बाबा भी दाना-पानी छोड़ कर दिन-रात उसी की तीमारदारी में जुटा रहता था। जब घोड़ी थोड़ा सा चना या घास खा लेती तो बाबा जैसे निहाल हो जाता और उसकी बांछें खिल उठतीं। इस खुशी में वह भी दो-चार निवाले निगल लेता। लेकिन जबतक घोड़ी कुछ न खाती उसके कण्ठ के नीचे भी दाना-पानी नहीं उतरता था।

पशु चिकित्सालय बाबा के घर से दो मील की दूरी पर था। आहत घोड़ी को वहां तक ले जाने का प्रश्न ही नहीं था। बाबा खुद ही रोज सबेरे वहां जाकर डाक्टर को अपने साथ लिवा आता। घोड़ी के इलाज में वह अपनी और जोरू की गाढ़ी कमायी के पैसे पानी की तरह बहाता रहा। फिर भी घोड़ी की हालत में सुधार के कोई लक्षण नजर नहीं आते थे। आखिरकार एक दिन घोड़ा डाक्टर ने भी यह कहकर जवाब दे दिया कि घोड़ी की एक टांग का जख्म अन्दर ही अन्दर बिल्कुल सड़ चुका है और जहर तेजी के साथ जिस्म के दूसरे हिस्सों में फैलता जा रहा है। सचमुच दूसरे ही दिन घोड़ी ने दम तोड़ दिया। शाम से ही वह असह्य पीड़ा से तड़फड़ाती रही जिसका अनुमान उसकी छटपटाहट को देखकर सहज ही में लगाया जा सकता था। कभी-कभी घोड़ी के मुंह से कराहने जैसी दर्दनाक आवाज भी सुनायी पड़ती। बाबा दाना-पानी छोड़कर सारी रात उसकी बगल में बैठा उसकी पीठ और पैर सहलाता रहा और रह-रहकर घोड़ी से लिपट कर उसका मुंह चूम लेता। उसकी आंखों से बहती अविरल अश्रुधार रूकती ही न थी। अपनी इकलौती सन्तान को मृत्यु-शय्या पर पड़ा अन्तिम सांसे भरता देखकर इन्सान को जिस मर्मांतक पीड़ा की अनुभूति होती है उससे भी अधिक मानसिक क्लेश और वेदना ने बाबा को पागल सा बना दिया था। जिस पल घोड़ी ने दम तोड़ा, बाबा बच्चों की तरह फफक-फफक कर रो पड़ा। मुहल्ले-टोले के लोगों ने इक्ट्ठा होकर उसे बहुत समझाने और ढाढ़स बंधाने की कोशिश की लेकिन बेहाल बाबा छटपटाता और सिर पीटता रहा। उसके घर से थोड़े ही फासले पर चमारों की बस्ती थी जो मृत पशुओं की खालों का व्यवसाय करते थे। बाबा की घोड़ी की मौत की खबर सुनते ही कुछ खालों के व्यवसायी वहाँ आ पहुंचे और मृत घोड़ी की खाल निकालने के लिए उसे ले जाने की पेशकश की। बदले में बाबा को कुछ द्रव्य देने को भी तैयार थे, लेकिन उनकी बातें सुनते ही बाबा आपे से बाहर हो गया। उसने व्यावसायियों को वह फटकार सुनायी कि वे अपना सा मुंह लेकर वापस लौट गये। बाबा ने अपनी निष्प्राण घोड़ी को नये वस्त्र से ढंककर एक सगड़ी पर लदवाया और ले जाकर उसे अपने हाथों से नदी में जल-समाधि दी।

फागुन का महीना था और पूनो की उजियारी रात। आज ही अर्ध-रात्रि से पूर्व होलिका-दहन होने वाला था। जिस समय बाबा अपनी दिवंगत घोड़ी को जल-समाधि देने के लिए नदी की ओर गया हुआ था, और उसकी दु:खी बुढ़िया बिना खाये-पिये घर के अन्दर उदास पड़ी हुई थी, मुहल्ले के कुछ शैतान छोकरे आपस में काना-फूसी करके चुपके से बाबा का टूटा इक्का खींच ले गये और उसे ले जाकर होलिका में झोंक दिया। बुढ़िया को लड़कों की इस हरकत की भनक भी नहीं लगने पायी। आधी रात गये जब असीम वेदना के बोझ से दबा बाबा निखरी चांदी में अपनी प्यारी घोड़ी को जल-समाधि देने के बाद घर लौट रहा था तो मुहल्ले की होलिका में अग्नि-प्रज्ज्वलित की जा चुकी थी। सैकड़ों लड़के बूढ़े और जवान होलिका के इर्द-गिर्द खड़े होकर हुड़दंग मचा रहे थे। कुछ भद्दी-भद्दी गालियाँ बकने में मशगूल थे तो कुछ मुर्री-पटाखे छोड़ने में मगन थे। बाबा भी होलिका-दहन का दृश्य देखने के लिए कुछ देर वहीं खड़ा हो गया। उसे देखते ही शैतान लड़कों की अपराध-भाव से ग्रस्त टोली डर के मारे दुम दबाकर वहां से रफू-चक्कर हो गयी। वही छोकरे जो बाबा के इतने मुंह लगे थे कि उसे देखते ही 'बाबा-बाबा' चिल्लाते हुए घेर लेते और पीछा छोड़ने का नाम न लेते थे, आज उसे देखते ही क्यों इस तरह भाग खड़े हुए, यह राज समझने में बाबा को ज्यादा देर न लगी। होलिका की ऊँची-ऊँची लपलपाती लपटें आसमान छूने लगी थीं। चारों तरफ उजाला फैला हुआ था। उन प्रदीप ज्वालाओं के बीच अपना जलता हुआ इक्का और उसका मिटता हुआ अस्तित्व आंखों से देखकर भी बाबा अविचल खड़ा रहा। उसे तनिक भी क्रोध नहीं आया। मन ही मन वह सोचता रहा कि जब उसकी प्यारी घोड़ी ही न रही तो टूटा हुआ इक्का रखकर क्या होता। बच्चों ने उसे भी होलिकाग्नि को समर्पित कर उसका बोझ हल्का कर दिया, नहीं तो शायद कलेजे पर पत्थर रखकर उसे खुद ही यह मनहूस काम भी करना पड़ता। होलिका की लपटों में भस्म हो रहे अपने इक्के के सामने एक बार इक्कावाले बाबा ने हाथ जोड़कर शीश नवाया और फिर चुपचाप घर की ओर चल पड़ा।

संपर्क : एस. 2/51 ए, अर्दली बाजार (अधिकारी हॉस्टल के निकट) वाराणसी (उ.प्र.)

निबंधन सं.-13 पी. वर्ष 1955-56, दूरभाष : 352480

पीपुल्स को-आपरेटिव हाउस कन्सट्रक्शन सोसायटी लि.

कंकड़बाग, पटना-20

समिति के सदस्यों का ध्यान निम्नांकित तथ्यों की ओर आकृष्ट किया जाता है :-.

1. समिति द्वारा नौमिनेशन का नया प्रपत्र तैयार किया गया है, अतः सभी सदस्यों से अनुरोध है कि नये प्रपत्र समिति से प्राप्त कर उसे विधिवत भर कर समिति के कार्यालय में जमा कर दें ।

2. लीज डीड के प्रावधान के अनुकूल सभी सदस्यों को अपने भूखंड की मालगुजारी समिति में जमा करना अनिवार्य है ।

3. जिन सदस्यों ने अभी तक अपने भूखंड पर निर्माण नहीं कराया है उनके भूखंड आवंटन को लीज डीड के प्रावधान के अनुसार रद्द कर अन्य सदस्यों को जिन्हें अभी तक भूखंड नहीं मिला है, उन्हें आवंटित करने की प्रक्रिया आरम्भ की जायगी ।

4. लीज डीड के प्रावधानों के अनुसार समिति के सदस्य अपने भूखंड का स्थानान्तरण समिति की पूर्वानुमति से हीं कर सकते हैं । बिना पूर्वानुमति के भूखंड का स्थानान्तरण अवैध है । समिति इस प्रकार के मामले में भूखंड के पूर्वांटन को रद्द कर पुनः नये सदस्य को आवंटित करने की प्रक्रिया प्रारम्भ करेगी ।

प्रो. (डॉ.) गोपाल कृष्ण सिन्हा	मिथिला शरण सिन्हा	सिद्धेश्वर प्रसाद
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अवैतनिक सचिव

With est Compliments from :

स्वतंत्रता......
अपना भाग्य विधाता
स्वयं बनने की !

इफको वर्ष 1967 से किसानों के इस उद्देश्य को पूरा करने में मदद करती आयी है । आज हम 29 लाख टन उर्वरकों का उत्पादन कर रहे हैं, मगर अपने विज़न-2000 की बदौलत हम भविष्य में विश्व के सबसे बड़े उर्वरक उष्पादक बनने वाले हैं । अपने इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हम मौजूदा उर्वरक इकाइयों की उष्पादन क्षमता में वृद्धि, नई यूरिया उत्पादन इकाइयों की स्थापना और बीज उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि कर रहे हैं ।

9वीं योजना के अन्तर्गत कुल लगभग 4075 करोड़ रूपये के योजनागत परिव्यय से आंवला, कलोल, कांडला और फूलपुर संयंत्रों के आधुनिकीकरण और विस्तार तथा नैल्लौर में नया उर्वरक संयंत्र लगाने का कार्य **विज़न-2000** को साकार करने के लिए, जारी है । उर्वरक उत्पादन के अलावा हम बीज बहुलीकरण कार्यक्रम, क्षेत्र वानिकी परियोजना, किसान सेवा केन्द्र, ग्रामीण विकास, उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्य कर रहे हैं । इसके अतिरिक्त हम राष्ट्र के विकास और वृद्धि की ओर लगातार तेजी से बढ़ते जा रहे हैं । इस कार्य के लिए हमें कुछ पुरस्कार भी मिले हैं । यह इसलिए कि हम अपने किसान भाइयों को इतना सक्षम बनाना चाहते हैं कि वे अपने व्यवसाय को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ चलायें और अपने भाग्य के विधाता स्वयं बनें ।

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड

राज्य कार्यालय : बिस्कोमान भवन, दूसरी मंजिल, पटना-800 001

आत्म निर्भर राष्ट्र के निर्माण में प्रयासरत

लघु-कथा

डॉ. संतोष दीक्षित की दो लघु कथाएं

औकात

पता नहीं अब ऐसे-लोग ही क्यूं आने लगे हैं मेरे पास । एकदम से छुछुंदर की तरह छुछुंआते फिरने लगते है, घुसते ही पूरे घर में । आधुनिकता के तकाज़े या विज्ञापनों के भारी दबाव के तहत रसोईघर में नव-प्रविष्ट "वैक्यूम जार" तक को सूंघ लेते हैं यार लोग और फिर हिनहिनाते हुए घोड़ों की तरह, या फिर हिलाते हुए दुम लालची बिल्लियों की तरह, उत्सुक हो उठते हैं प्रदर्शन को अपनी थोथी प्रसन्नताएं । सच तो यह है, चाहे लाख जतन कर लूँ, अब तो छिपाए नहीं छिपती है अपनी विपन्नता भी । घर से विदा होता प्रत्येक सख्स जैसे चिपका जाता हो एक अदृश्य सूची प्रवेश-द्वार पर-इस घर में किन-किन उपभोक्ता-सामग्रियों की खाली जगहें भरी नहीं जा सकीं हैं, अभी भी । धूर्त, वाचाल मगर सुसंस्कृत होने का बेहद अश्लील अभिनय करते तथा खुद को बड़ी-छोटी कम्पनियों का "बिक्री-अधिकारी" घोषित करते, एक-एक गली तक को रौंद डालने को संकल्पित चन्द उत्सुक निगाहें पढ़ लेती हों मानों वह अदृश्य टंकी सूची । कॉल-बेल से उसी तरह खेलने लगते हैं, जैसे बचपन में कभी मैं, पोखर-झील में ताबड़तोड़ ईंट-पत्थर बरसाने को उत्सुक रहा करता था । फिर सॉरी....वेरी सॉरी ....नो .... प्राब्लम उगलते हुए, सधे-कदमों से उतर जाते हैं घर की सीढ़ियाँ । मेरी दिनों-दिन घटती क्रय-शक्ति हो सकता है कुछ ही दिनों बाद, किसी चिकनी पत्रिका के बेहद चिकने पृष्ठों के किसी बाजार-सर्वेक्षण वाले कॉलम के आंकड़ों का एक हिस्सा बन जाए, और अपने में झुंझलाता, अकबकाता मैं खुद भी अनजान बना रह जाऊँ, इस सार्वजनिक तथ्य से ।

पाँव-पैदल आता ठोककर जाता है मेरी पीठ .. ..और चमचमाती मारूति के सामने से पहले कोई फेंकता है मेरी तरफ ढेरों दिलासाएं । ऐसे ही आंकी जाने लगी हैं आजकल .....मेरी, तेरी या उसकी औकात ।

लूट

फिर एक पतंग कटी । चौराहे पर, आकाश में नजरें टिकाए खड़े झोपड़पट्टी के नंग-धड़ंग लड़कों के झुंड में एक बार फिर हलचल हुई और शोर मचाते हुए वे दौड़ पड़े-बहती हवा की दिशा में ।

किसी के हाथ में बांस की पट्टी, तो कितने सुखी झाड़ को ही आसमान में हथियार की तरह उछालते हुए दौड़े । ज्यादातर तो खाली हाथ ही थे-दुनिया की इस सबसे सस्ती और आसान लूट में शामिल होने के लिहाज से भी सबसे अधिक साधनविहीन और कमजोर भी ।

हिचकोले खाती तिलंगी अभी बांस भर की ऊँचाई पर ही थी कि दुबले-पतले मरियल से एक छोटे बच्चे के ऐन सामने, जो कि धक्का- मुक्की में सबसे पीछे पड़ गया था, पतंग की लम्बी डोर आ गिरी । उसने इस फुर्ती और कलात्मकता से इस नायाब अवसर का लाभ उठाया कि.... । इस दृश्य की नजाकत को सिर्फ वही समझ सकता है, जिसने चीते को शिकार पर झपटते हुए देखा हो, कभी.... । आगे का किस्सा यह कि इसके पहले कि वह लड़का धागे को तेजी से दुहते हुए पतंग को अपनी ओर खींच पाता, बांस की लम्बी पट्टी वाले एक उम्रदराज, अपेक्षाकृत बलिष्ठ लड़के ने उचककर तिलंगी को अपनी पट्टी में फंसा लिया और वहां से निकल भागने को ही था, कि... । जबरदस्त हल्ला-गदाल मच गया । जैसे बिल्ली के मुख में अपना कोई संगी देख तमाम गौरैया एक जुट होकर चिंचियाती हुई प्रहार भी करने लगती है अपनी भोथरी, छोटी चोंचों से ही सही । लगभग उसी किस्म का हल्ला-गदाल ।

"धागा पहिले के थमलकई .....ऊ की तू ? मुद्दा सीधा और स्पष्ट था ।

आखिरकार आत्म-समर्पण करना ही पड़ा उस लम्बी पट्टी वाले लड़के को । वरना झुंड छोड़ देने की चेतावनी दी जा चुकी थी उसे ।

उस शाम का ढलता सूरज गवाह है । अपनी खुली खिड़की से लूट के इस दृश्य को निहारते हुए मैं एक सुखद, आश्वस्तिपरक भाव से भर उठा था ।

सपंर्क : दुली घाट, दिवान मुहल्ला, पटना सिटी-800 008

"न्याय"

❒ डॉ. अनिल कुमार सिंह 'शलभ'

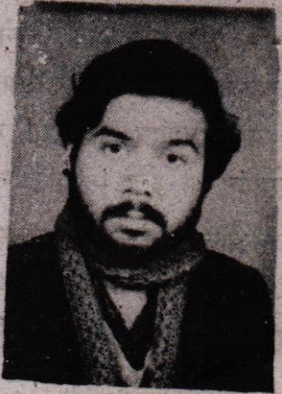

हिन्दी कहानी में लघु-कथा 'छोटी बहुरिया' के रूप में भूमिष्ठ हो चुकी है । भावात्मक स्तर पर मानवीय संवेदना को उभारना और तार-तार होते सामाजिक परिवेश से जीवन के लघुत्तम क्षण को अविस्मरणीय बना देना इसकी विशेषताएँ हो चुकी हैं । उन्हीं विशेषताओं को इंगित करती दो लघुकथाएँ .....-प्रधान संपादक

"मैं लुट गयी, मैं बरबाद हो गयी, सरकार ! कृपया मुझे बचा लीजिए ।" एक बदहवास युवती ने थानेदार के पैर पकड़कर रोते हुए कहा ।

"क्या हुआ ? घबराओ नहीं । साफ-साफ बताओ । डरने की बात नहीं है । मैं हूँ ना ।" थानेदार ने युवती को ढाढ़स बंधाते हुए कहा ।

"सरकार, वो नरेंद्र है न" थानेदार का आश्वासन पाकर युवती ने कहा"उसने और उसके साथियों ने हमारे साथ जबरदस्ती की है और धमकी भी दी है कि किसी से शिकायत करने पर वह मुझे जान से मार डालेगा । सरकार, वह बहुत खतरनाक आदमी है । हमारे साथ न्याय कीजिए सरकार । और उसे कड़ी से कड़ी.....।" बाकी आवाज उसकी सिसकियों में खो गयी ।

"रामसिंह !"

"जी, सर !"

"ये नरेन्द्र कौन है ?" थानेदार ने पूछा । नया होने के कारण वह इस क्षेत्र से पूरी तरह परिचित नहीं थे ।

"जी, वे अपने विधायक जी के लड़के हैं ।" रामसिंह ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया ।

"ठीक है, तुम बाहर बैठो, मैं ही कुछ करता हूँ"-थानेदार ने युवती से कहा और फोन मिलाने लगे ।

"नमस्कार सर ! ....सर, नरेन्द्र ने...." -

"मालूम है, मालूम है ।" थानेदार की आवाज को बीच में ही काटकर विधायक जी ने कहा "बच्चे हैं, नादानी कर गये । आखिर बच्चे ऐसी गलती नहीं करेंगे तो क्या हम इस उम्र में करेंगे । फिर, इस मामूली-सी बात के लिए तुम इतना परेशान हो ?"

"हमारे लिए क्या आदेश है, सर ?" थानेदार ने पूछा ।

"भई ! अब तुम ऐसे पूछ रहे हो, जैसे पहली बार वर्दी पहनी हो या पहली बार ऐसी स्थिति सामने आयी हो । ये तुम्हारा काम है, जैसा उचित समझो करो ।" इतना कहकर विधायकजी ने फोन रख दिया ।

"ठीक है । मैं अस्पताल फोन कर रहा हूँ । वहाँ तुम्हारी डाक्टरी जाँच हो जायगी । उसके बाद मैं उन बदमाशों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाऊँगा । तुम ऐसा करो, सरकारी अस्पताल जाओ ।" थानेदार ने अपने अंदाज में युवती को समझाया ।

अगले दिन डॉक्टरी रिपोर्ट आ गयी । रिपोर्ट में युवती को पागल करार देते हुए कहा गया था कि दिमाग ठीक न होने के कारण इसका समाज में खुलेआम घूमना समाज के लिए हानिकारक है । लिहाजा इसे....।

और रिपोर्ट के आधार पर युवती को पागलखाने भेज दिया गया, और वह समाज के द्वारा किये गये न्याय पर अवाक् आँसू बहाती रह गयी ।

सपंर्क : बलीपुर (दुर्गा मन्दिर) प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

दलित साहित्य का समाज पर प्रभाव

❒ जिया लाल आर्य

साहित्य का अर्थ शब्द और अर्थ का यथावत सहभाव अर्थात साथ होना कहा गया है। साहित्य की इस परिभाषा के अन्तर्गत मनुष्य की सारी बोधन और मानव चेष्टा समाविष्ट हो जाती है। इस प्रकार 'साहित्य मनुष्य के भावों और विचारों की समष्टि है', जिसका आधार उसका भोगा हुआ, अनुभव किया हुआ, अनुभूति परक जीवन का सच होता है।

हिन्दी वाङ्मय को यदि हम इस परिभाषा की तुला पर तौलते हैं, तब स्पष्टत: यह उद्घाटित होता है कि आदि काल से आजतक का हिन्दी साहित्य रूढ़िग्रस्त, सच्चाई से परे और एक वर्ग विशेष का साहित्य रहा है जो एक वर्ग विशेष द्वारा रचा गया है। वह सवर्णों में भी मात्र एक छोटे से वर्ग को प्रसन्न करने का साहित्य बन कर रह गया। उसने केवल धीरोदात चरित्र को उभारा, उसकी विरूदावलियाँ गाई, और उस नायक को बनाने वालों की उपेक्षा की गई। उपेक्षा नहीं, उसकी भावनाओं को दबा दिया गया। भक्ति काल में रुढ़ियों, आधारहीन परम्पराओं और सामाजिक कुरीतियों को उजागर करने वाले सन्तो, साधुओं, नाथों की वाणी को मात्र भक्ति-भजन कहकर काल के कटघरे में बंद कर दिया गया। कबीर, रैदास, नानक, नरसी आदि को सामाजिक चेतना का दीप मानकर एक भक्त कवि कहकर छोड़ दिया गया। इससे यह साबित होता है कि समाज के एक समुदाय, दलित, शोषित, कुचले वर्ग को साहित्य में स्थान नहीं मिला। साहित्य की किसी भी विद्या में इनपर कलम नहीं चली और यदि चली भी तो सहानुभूति दर्शाने के लिए, संवेदनशीलता के लिए नहीं, दलित को जागृत करने, उसे मुखर करने, उसमें आत्मबल, आत्मविश्वास और आत्मानुभूति को व्यक्त करने के लिए नहीं। अत: हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य नाम की कोई चीज नहीं मिलती है। परन्तु एक बात स्पष्ट होती है कि कमोवेश समाज का प्रभाव साहित्य पर पड़ा है। समाज में घटित घटनाओं ने साहित्यकों को प्रेरित किया है। साहित्य का समाज पर प्रभाव नगण्य सा रहा है।

आम आदमी की भावनाओं, विचारों और शोषण को साहित्य का अंग नहीं बनने दिया गया। "कवि तू ऐसा गीत सुनाओ, जिससे उथल पुथल मच जाये" की उतेजनापूर्ण पंक्तियों से राजनैतिक चेतना अवश्य हुई परन्तु सामाजिक चेतना का अभाव रहा। समाज में विद्यमान विरोधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। साहित्य में ऐसे 'बिहारी' की कमी रही है जो जय सिंह की भांति समाज में प्रतिक्रिया पैदा कर सके या सामाजिक क्रांति ला सकें। शायद यही कारण है कि दलित वर्ग सदियों से उपेक्षित शोषित रहने पर भी चेतनान्वित नहीं हो सका।

साहित्य में दलित साहित्य का अभाव रहा है। 'दलित कौन है' के बारे में एक मत नहीं मिलता है। हिन्दी साहित्य कोष भाग एक के पृष्ठ-274 पर दलित वर्ग पर टिप्पणी की गई है जिसके अनुसार "यह समाज का निम्नतम वर्ग होता है जिसकी विशिष्ट संज्ञा आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप ही प्राप्त होती है। उदाहरणार्थ दास प्रथा में दास, सामन्तवादी व्यवस्था में किसान, पूंजीवादी व्यवस्था में मजदूर, समाज का दलित वर्ग कहलाता है।" यह परिभाषा समय और परिस्थितियों के साथ बदलती रही है। आर्थिक व्यवस्था का आधार सामाजिक व्यवस्था ने लिया। आज के सन्दर्भ में मुख्यत: अनुसूचित जाति के लोगों को ही दलित वर्ग माना जाता है। अनुसूचित जाति के निर्धारण का आधार सामाजिक और शैक्षणिक पिछड़ापन है। आर्थिक आधार को, गरीबी को और शोषण को अनुसूचित जाति का आधार बनाकर दलित के दायरा को बड़ा करने की मांग समाज के कुछ क्षेत्रों से आये दिन सुनाई पड़ती है परन्तु अभी भी सच्चाई यही है कि अनुसूचित जाति में सम्मिलित जातियों को ही दलित माना जाता है।

महात्मा ज्योति बा फूले (1827-1980) से पूर्व दलित साहित्य या दलितों पर लिखा गया साहत्य, साहित्य के रूप में अलभ्य है। महात्मा फूले को तत्कालीन दलित दशा ने प्रभावित किया, लिखने के लिए प्रेरित किया। परन्तु उनके दलित साहित्य ने समाज के विभिन्न अंगों को अलग-अलग ढंग से प्रभावित किया। 19वीं शताब्दी में यथार्थ को यथार्थ के रूप में कहना बड़े साहस की बात थी। ज्योति बा फूले ने "ब्राह्मणों की चालाकी" (1889), गुलामगीरी (1873), किसान का कोड़ा (1883) जैसे साहित्य का सृजन करके भविष्य के विचारकों, साहित्यकों के लिए मार्ग बनाया। हम निराला के 'भिखारी' और 'तोड़ती पत्थर' जैसी कविताओं को दलित साहित्य कहकर प्रशंसा करते हैं परन्तु ज्योति बा की इन कविताओं को साहित्य में स्थान नहीं मिला।

1. "रूखे-सूखे से पेट पालते
   उसी में ही धन्य समझते
   रहता कपड़े लत्ते का अभाव
   जो जाते एक दूसरे लिपट के मनभाव।"
2. नंग-धड़ंगा वह बंब लंगोटी बहादुर
   चिथेड़ियाँ सिर पर। धुस्से भी।
3. भाइयों, पूरी तरह जला के राख कर दो।
   मनुवाद को।

महात्मा फूले के साहित्य में निहित विचारों ने समाज को झकझोरा-दोनों पक्ष और विपक्ष। दलितों में किन्चित चेतना का बीज अंकुरित हुआ। परन्तु सवर्णो ने महात्मा फूले के शोषण की पराकाष्ठा पार कर लिया। फूले ने

स्वयं लिखा :-

शूद्र जर्जर ।
चलता लकड़ी के सहारे पर ।
तीन पांव के पशु बन गये ।
पीड़ा यह रोकर बतलाया ।
-द्विजों ने शूद्रों को सताया ।

सह संयोग की बात है कि 1890 में महात्मा ज्योतिबा फूले का निर्वाण हुआ और 1891 में एक धधकते सूर्य का उदय हुआ जिसने पूरे समाज और देश को झकझोर के रख दिया । नाम डॉ. भीमराव राव अम्बेडकर । महात्मा फूले के साहित्य से प्रभावित अम्बेडकर ने पूरे समाज को अपनी कलम से प्रभावित किया । डॉ. अम्बेडकर का साहित्य-आन्दोलन सवर्ण-अवर्ण दोनों को प्रभावित किया । उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद की कहानियों पर टिप्पणी करते हुए मैनेजर पाण्डेय ने ठीक ही कहा है, "प्रेमचंद की दलित जीवन से जुड़ी रचनाओं पर अम्बेडकर के आन्दोलन और विचारों का गहरा असर है । 1927 के पहले प्रेमचंद ने 'लोकमत का सम्मान', 'सौभाग्य के कोड़े' और 'मंत्र एक' (1926) जैसी कहानियाँ लिखी थी जिनमें कोई विशिष्ट दलित चेतना नहीं, सामान्य मानवीय करूणा की अभिव्यक्ति थी लेकिन 1927 में अम्बेडकर के 'महाद' में चलाये गये आन्दोलन के बाद दलितों के बारे में प्रेमचंद के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखलाई देता है, जिसकी पहली अभिव्यक्ति 'मंत्र दो' (1928) नामक कहानी में है । प्रेमचंद की 'सदगति' (1931) 'ठाकुर का कुआँ, (1932), 'दूध का दाम' (1934) कहानियों में दलित जीवन की चेतना और तेजस्विता मिलती है ।

'स्वत: सुखायं' रचित काव्य-साहित्य को 'सुरसरि सम सब कहं हित होई' कहा गया, परन्तु वास्तविकता सर्वमान्य है कि ऐसे काव्यों ने कुछ का, कुछ अल्पसंख्यकों का ही हित किया है बहुजन हिताय या दलित हिताय नहीं रहा । कुछ लोगों के हित को समाज का हित मान लिया गया क्योंकि कलम और वाणी ऐसे लोगों के ही अधिकार में रही है, जिन्हें पता नहीं कि दर्द क्या होता है । वेदना की पीड़ा क्या होती है । अपमान और तिरस्कार क्या होता है । यही कारण है कि ऐसे साहित्य ने सामाजिक चेतना एवं प्रेरणा का काम नहीं किया । इन्हीं कारणों से समाज के एक बड़े समुदाय को चेतना युक्त करने, उसे अपने स्वाभिमान को जगाने और अधिकार लेने को प्रेरित करने के लिए दलित साहित्य की आवश्यकता है ।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है । दर्पण में वही दिखना चाहिए जो सामने है । क्या भारतीय साहित्य में, या हिन्दी साहित्य में समाज का वास्तविक रूप दिखलाया गया है । मेरे विचार से यदि ऐसा हुआ होता तो आज दलित साहित्य की आवाज नहीं उठती । दलित साहित्य लेखन की बात करना ही यह साबित करता है कि साहित्य में समाज के प्रमुख अंग को उपेक्षित किया गया है । दलित-साहित्य-रचना अब व्यापक चर्चा का विषय बन गया है । कुछ लोगों के विरोध करने से इसकी धारा रूकने वाली नहीं है बल्कि इसका प्रवाह और गति पकड़ता जायगा । क्यों ? क्योंकि ईमानदारी से लिखे गए साहित्य में समसामयिक समाज, दलित, कुचलित, गरीब, शोषित समाज की स्थिति की प्रतिछाया, वास्तविक प्रतिछाया अनिवार्य है ।

दलित साहित्य का किसी वर्ण, वर्ग, जाति या समुदाय से कोई टकराव नहीं है । जो भी दलित कल्याण की बात करे, दलित उत्थान पर प्रेरणादायक साहित्य रचे, वह दलित साहित्यकार है । इसमें किसी प्रकार के संदेह की गुंजाईश नहीं है । कुछ लोग यह प्रचार करने में लगे हैं कि दलितों पर दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है । इस प्रचार पर रोक लगानी है और निहित स्वार्थ से ग्रसित तथा स्थितिवादी कुछ साहित्यकारों के मंसूबों की जड़ को काट देना आवश्यक है । ऐसे लोग दलित साहित्यकार और अदलित दलित साहित्यकारों के बीच खाई खोदकर दलित चेतना को उसमें गिराना चाहते हैं । गैरदलित साहित्यकारों द्वारा लिखित दलितों की समस्याओं के साहित्य का हम स्वागत करते हैं । प्रेमचन्द के 'गोदान' में चमार टोले के लोगों द्वारा पंडित दातादीन के मुंह में गाय की हड्डी ठूंस देना दलित आक्रोश का उद्घाटन है । आक्रोश का कारण दातादीन का सिलिया के साथ अवैध संबंध है । कफन, सदगति, ठाकुर का कुआं में दलित चेतना को उजागर किया गया है । अमृत लाल नागर के 'अब हौ नाच्यों बहुत गोपाल' में दलित समस्या का स्पर्श है । गिरीराज किशोर (परिशिष्ट) धूमिल (मोचीराम), नागार्जुन (हरिजन दहन) को हमने कहां नकारा है । यथास्थिति के विरोध में लिखा गया साहित्य दलित साहित्य है लेखक कोई भी हो सकता है ।

दलितों की दशा एवं दलितों की प्रतिक्रिया का ही परिणाम है कि गैर दलितों ने दलित साहित्य में अपना सार्थक योगदान दिया ।

यह धारणा भी बेबुनियाद नहीं है कि "जाके पांव न जाय विवाई, वो का जाने पीर पराई" । यह अनुभव जन्य उक्ति है । भोगे हुए दलित का लेखन सच्चाई के बहुत निकट होगा । देख-सुनकर किसी के दर्द को, मन:स्थिति को हू-ब-हू नहीं उतारा जा सकता है । इसीलिए शायद मराठी साहित्य में दलित साहित्य उसी को माना गया जो दलित द्वारा लिखा गया हो । मेरा कहना है कि दलित-अदलित साहित्यकार की रचना को लेकर उलझने से कोई फायदा नहीं बल्कि हमें अपने रास्ते में आने वाले रोड़ों से हटकर आगे बढ़ते जाना है । कुत्ते भूंका करे ।

डॉ. कुमुद पाटिल के इन विचारों को कुछ हद तक स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि "मराठी दलित साहित्य में समग्र भारतीय साहित्य को प्रचारित प्रसारित किया और साहित्य को एक विशिष्ट अहसास भी दिया ।"

साहित्य में कथानक या घटना उसकी आधार होती है । परन्तु कथानक का वर्णन मात्र साहित्य नहीं बन जाता । घटना वा कथानक सच्चाई होती है परन्तु उस नंगी सच्चाई को सौन्दर्यमयी बनाने के लिए भाषा

एवं शैली की चुनरी पहनानी पड़ती है । मात्र गाली की भाषा से साहित्य सृजन नहीं हो जाता । भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सच्चाई को उभार कर आदमी के दिल को छू ले, मस्तिष्क पर चोट करे और कल्याणकारी कदम उठाने के लिए मजबूर कर दे ।

समाज परिवर्तनशील है । समाज की मान्यताएं भी परिवर्तनशील होनी चाहिए । और परिवर्तनशील समाज का साहित्य भी परिवर्तनशील होना चाहिए क्योंकि साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है । महात्मा फूले का युग बीत गया । डॉ. अम्बेडकर का समय गुजर गया । रामायण, महाभारत, पुराण युग इतिहास बन गया है । वर्तमान युग मानव की इज्जत, स्वाभिमान, और श्रम के महत्व का युग है । आज के साहित्य में श्रमिकों, दलितों, शोषितों को उनका स्थान मिलना है । **यदि इन्हें आज भी नकारा गया तब प्रतिक्रियावादी सेनाएं खड़ी हो जायेंगी । अमेरिका, फ्रांस और रूस की क्रान्ति दुहराई** जायगी । आज 'भवंरी देवी' बोलने लगी हैं, 'चतुरी' अपने सम्मान की रक्षा में तनकर खड़ा होने लगा है । आज का दलित अब गूंगा नहीं है इसलिए उसकी आवाज को और मुखर करने के लिए पक्षधर साहित्य की आवश्यकता है । क्योंकि सच्चा साहित्य पक्षविहीन नहीं हो सकता है ।

बिहार के सामन्तों ने समय को नहीं पहचाना । दलितों को दबाते गये । आर्थिक और यौन शोषण करते गये । गरीबों को कीड़ों-मकोड़ों का भी जीवन नहीं मिला । यह अत्याचार आज का नहीं, सदियों से होता आया है । हीरा डोम की कविता 1914 में 'सरस्वती' में छपी–

> हमरी के इनरा के नगिचे ना जाई ले जा,
> पांके में से भरि-भरि पियतानी पानी ।
> पनही से पीटि-पीटि हाथ गोड़ तूरि दहलें,
> हमनी के एतनी काहे के हल्कानी ।

दलितों ने जब इस अत्याचार, व्यभिचार और शोषण का प्रतिकार करना शुरू किया तब उन्हें प्रतिक्रियावादी, नक्सलाइट कहा गया । बेलछी, वारा, डोहिया के कांड हुए । आज भी मध्य बिहार, आन्ध्र प्रदेश के दलित अपनी इज्जत के लिए मर रहे हैं । 'एक हजार चौरासिवें की मां' उपन्यास में इसकी एक झलक मात्र है । मैंने एक लम्बी कहानी 'हम आपके साथ', 'इज्जत की जिन्दगी' इसी विषय पर लिखी थी ।

महात्मा ज्योतिराव फूले का युग अंधकार युग था । फूले ने अपनी ज्योति से दलितों के लिए रास्ता बनाया । शिक्षा के महत्व को समझाया, स्कूल खोले, स्वाभिमान को जगाया, इसके लिए यथावतवादी ब्राह्मण व्यवस्था ने उन्हें घर छोड़ने को मजबूर किया । पुनरपि उन्होंने संघर्ष जारी रखा । कबीर, रविदास, दादू नानक ने रूढ़िविरोधी आह्वान को आगे बढ़ाया । जात-पांत का विरोध किया, परन्तु इनको भक्त एवं संत कहकर उनकी वाणी को दिगभ्रमित किया गया ।

गौतमबुद्ध ने रूढ़ियों का विरोध किया । मानव कल्याण के लिए मानव मान्यताओं का प्रतिस्थापन किया, जिसके आधार पर आज चीन, जापान जैसे देश उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं परन्तु ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने बुद्ध के रास्तों पर कांटे बो दिये । वह भारत में सार्थक स्थान नहीं बना पाये । संयोग से डॉ. अम्बेडकर का प्रादुर्भाव हुआ । भारतीय दलित इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने लगा । दलित साहित्य का सृजन सबसे पहले महाराष्ट्र में हुआ । बाद में अन्य क्षेत्रों में । हिन्दी क्षेत्र में दलित साहित्य 1960 के दशक में पनपने लगा । आज वह फलदायी हो गया है । दक्षिण में रामा स्वामी नायकर और स्वामी अछूतानन्द के साहसिक प्रेरणा को नहीं भुलाया जा सकता है ।

डॉ. अम्बेडकर ने दलित समाज को अपने स्वाभिमान की सुरक्षा और अधिकार को पाने का पुख्ता आधार दिया । अवसर की गारंटी दी । अवसर को अपने हित में लगाना दलित समाज का कर्तव्य है । भारतीय संविधान में आरक्षण का सिद्धान्त देकर बराबरी पर आने का अधिकार दिया । आरक्षण के विरोध में आज का द्विज समाज गोलबंद हो रहा है । गत पचास वर्षों में 10 प्रतिशत आरक्षण भी नहीं हो सका है ।

अब समय आ गया है कि देश, देश के शासक महात्मा फूले के आरक्षण पर व्यक्त विचारों को अमल में लाये । महात्मा फूले ने कहा–

> "कहता हूँ मैं अपने अनुभव की बातें ।
> कहता हूँ मैं अपने दिल की बातें ।
> सब जाति के लोगों को चुन लो ।
> दो सब को संख्या के बल से ।।"

इन अधिकारों की जानकारी देने, लोगों को अपने अधिकारों के प्रति सजग करने और संवैधानिक अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा देने के लिए दलित साहित्य की आवश्यकता और सटीक हो गई है ।

साहित्य को मात्र समाज का दर्पण होना ही यथेष्ट नहीं है । उसे समाज का मार्गदर्शक होना है । जब-जब शासन दिग्भ्रमित हुआ है तब-तब उसे साहित्य ने ही प्रकाश स्तम्भ का काम किया है । दुर्भाग्य से या किसी साजिश के तहत दलित साहित्य के सृजन के पूर्व का साहित्य दलित का मशाल नहीं बन सका । यह निर्विवाद सत्य है । यहां पर गौतम बुद्ध का कथन 'अत्त दीपो भव' अर्थात 'अपना दीपक स्वयं बनो' की सार्थकता मालूम होती है । दलितों को अपना साहित्य स्वयं रचना होगा, अपना इतिहास स्वयं लिखना होगा और अपने स्वाभिमान को स्वयं जगाना होगा ।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । एक दूसरे के पूरक हैं परन्तु आज तक ऐसा नहीं हो सका । इसीलिए समाज में जितनी प्रगति होनी चाहिए थी, नहीं हुई । चूंकि दलितों की संख्या अधिक है, उनके विरूद्ध अन्याय, अत्याचार, शोषण और उनमें अशिक्षा अधिक है, इसलिए दलित साहित्य के अधिक से अधिक सृजन की आवश्यकता है । सृजन भी ऐसा जो दलित वर्ग को जागृत कर सके, अपने अधिकार, आत्मसम्मान को पहचान सके । जबतक प्रगतिशील एवं प्रभावकारी दलित साहित्य का सार्थक सृजन नहीं होगा तब तक पूरा समाज पिछड़ा रहेगा ।

संपर्क : राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार
सोन भवन, वीरचन्द पटेल पथ, पटना

बंजर में बीज : एक दृष्टि

❐ डा. शिववंश पाण्डेय

'बंजर में बीज' सुख्यात गीतकार श्री गोपी वल्लभ सहाय की प्रथम प्रकाशित काव्य कृति है । 'शब्दानुभूति' और 'समय से संवाद' नामक शीर्षों में उपविभक्त इस काव्यकृति में गीत, नवगीत, कविता, गजल (नई गजल) एवं नुक्कड़ गीतों का संकलन हुआ है । कवि के अनुसार 'पैंसठ से सत्तर के कुछ गीतों को छोड़कर इस संकलन में मुख्यतः इकहत्तर के बाद की रचनाएँ हैं ।' 1953 से सतत काव्य लेखन में प्रवृत्त एवं काव्य मंचों पर सदा समादृत कवि का प्रथम काव्य संग्रह 1993 में प्रकाशित हो, यह आश्चर्य से अधिक काव्य संग्रहों के प्रकाशन के प्रति प्रकाशन जगत् की उदासीनता तथा स्वयं कवि की तटस्थ मानसिकता का परिचायक है । इस कारण ही कवि गोपीवल्लभ अभी तक केवल सुने जाते रहे हैं, पत्र-पत्रिकाओं में अखबारी समाचार की तरह पढ़े जाते रहे हैं । यत्र-तत्र प्रकाशित कवि की कविताओं को पढ़ने और मंच से सुनने के आधार पर कवि के सम्बन्ध में लोगों की समझ तो बनी, पर इनकी रचनाओं के पुस्तकाकार नहीं प्रकाशित होने से हिन्दी के काव्य रसिक असंख्य पाठकों को इन्हें 'सम्पूर्ण' रूप में देखने की लालसा बनी रही । संभवतः 'बंजर में बीज' के प्रकाशन से जिज्ञासु काव्यानुरागियों को कवि को पढ़ने और समझने में सहायता मिलेगी ।

कवि की रचना यात्रा गीत से प्रारंभ हुई है और नवगीत में रूपान्तरित हो कदमताल कर रही है । अतः मुझे सर्वप्रथम इनके गीतों, नवगीतों पर ही विचार करना श्रेयस्कर लगता है । वस्तुतः गीत कवि के अपने संवेदनशील हृदय की लयात्मक मधुर अभिव्यक्ति है । कविता और संगीत की समन्वित भाव भूमि पर इसका जन्म होता है । इस विधा के अन्तर्गत कवि जो कुछ गाता है वह उसके हृदय से निःसृत स्वानुभूति संवलित स्वरलहरी होती है । इसे यों भी कहा जा सकता है कि गीत में किसी वस्तु या भाव को कवि अपनी अनुभूति में समेट कर प्रकट करता है । इसमें कवि की आत्मा, चेतना और संवेदना एक ही वातायन से झांकती नजर आती है । गीत में जो कवि अपना ही और अपनी ही पारिपार्श्विक परिस्थितियों से उत्पन्न भाव को व्यक्त करता है । प्राचीन काल के गीतों में या तो रूप या प्रेम-सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती थी या भक्तिभावना की प्रस्तुति । किन्तु आज के गीत या नवगीत आम आदमी के त्रासद परिवेश की प्रामाणिक अभिव्यक्ति के मुखर स्वर बन गये हैं । ईश्वरी प्रेम, प्रकृति प्रेम, व्यक्तिनिष्ठ प्रेम से अधिक राजनीतिक अराजकता एवं आम जीवन की घुटन एवं कुण्ठाएँ आज के गीत अर्थात् नवगीत के प्रतिपाद्य बन गये हैं ।

कवि-गीतकार श्री सत्य नारायण ने अपने काव्य-संकलन 'टूटते जल बिम्ब' की भूमिका में नवगीत को परिभाषित करते हुए लिखा है कि नवगीत में गीतकार 'संवेदना के धरातल पर खड़ा होकर जीवन को सम्पूर्ण देखता है । यह हमारी रागात्मक अनुभूति का निजी स्वर भी है और सामाजिक चेतना की जनाभिमुख अभिव्यक्ति भी । वह रागधर्मी होकर भी व्यापक अर्थों में जीवनधर्मी है ।'

श्री गोपीवल्लभ के गीतों-नवगीतों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है । प्रथम वर्ग में वैसे गीत रखे जा सकते हैं जो विशुद्धतः रागभावात्मक स्वर से स्पंदित हैं । इनमें कवि ने अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों के दर्पण में व्यक्ति एवं समाज को अपनी दृष्टि से पढ़ने का प्रयास किया है । ऐसे गीतों में राजनीतिक एवं सामाजिक विसंगतियों पर करारा प्रहार भी हुआ है । कुछ स्थल देखें–

'अगर चाहते नया सबेरा लाना तुम
सिर्फ सूर्य ही नहीं, गगन को भी बदलो ।
हर धारा के साथ बदलते लक्ष्य रहे
इसीलिये तट पर आ-आकर भी तुमने
दूर खड़ी दुनिया के ताने-बोल सहे
अगर चाहते नये लक्ष्य तक जाना तुम
सिर्फ पंथ ही नहीं, चरण को भी बदलो !'

•••

'त्रासदी क्यों सहें हम
सदी-दर-सदी
पृष्ठ भर तुम रचो
उद्धरण मैं पढ़ूँ !'

•••

मुरली देकर मुझे
चाहते थे जो अपना ढोल बजाना
खरीदार हो गये अमृत के वही
जहर का खोल खजाना
चंदन से सम्बन्ध सर्प का
होता होगा जंगल में ही
मैंने समझा जिसे सुधाकर
उसने विष का दान दे दिया !'

आज के संदर्भ में उपेक्षित जनता की विवशता तथा परिताप के प्रति कवि की यथार्थ मर्माविक्त हृदय को छूती ही नहीं, हृदय को हिला एवं कसका देती है–'शब्द होते हुए/पंक्ति से हम कटे/भूमिका तो रही/शीर्षक से हटे/शब्द औ' शब्द के बीच/जब कुछ न था/एक पूरी नदी की/बने हम कथा/कल शिलालेख थे/आज कागज फटे ।'

दूसरे वर्ग में गोपीवल्लभ के वैसे गीतों को पंक्तिबद्ध किया जा सकता है जिनमें आम आदमी की घुटन एवं कुण्ठाओं तथा राजनीतिक अराजकता पर अक्षिपात किया गया है । इन गीतों में राजनीतिक आकाओं को बेनकाब करते हुए सामाजिक विषमता तथा मानवीय मूल्यों की गिरावट तथा संत्रस्त मानवता की बदहाली और सड़ांधभरी जीवन व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त की गयी है बानगी तौर पर कुछ अंश उद्धृत हैं–

'मर्यादा जब-जब भटकेगी/भूमि बनेगी सीता की/
बिछुड़ेगी मुरली राधा से/रचना होगी गीता की/
सौ साल हैं सिंहासन के/जन का उत्तर एक नहीं/
पल-पल प्रश्न रास के, रण के/मोहन का स्वर एक नहीं ।'

•••

'बूँद भर प्यास को/
थी आस किसी पनघट से /
नीर के तीर/मिली आग मुझे /
मरघट से/जो कफन ओढ़े हैं /
उजाले का/गीत सुनाऊँ किसको ?'

•••

सिरहाने आग /
और पाँव पर कमल /
कितने दिन और लिखूँ /
राख पर गजल ? सूबह के लिये /
कब तक बेचूँ मैं शाम ?'

गीतात्मकता की मनःस्थिति में कवि अपने व्यक्तित्व एवं अनुभूतियों के सर्वाधिक निकट रहता है । इस मनोदशा के अन्तर्गत वह अपने निजी अनुभवों को संगीतमयी मधुर वाणी में प्रकट करता है । वैसे तो साधारण मनुष्य सुख दुख के प्रबलावेग में गुनगुनाने लगता है । साधारण मनुष्य और कवि-गीतकार में

मात्र अन्तर यह है कि सामान्यजन अपने निजी भावावेग को गीत के माध्यम से व्यक्त कर राहत का अनुभव करते हैं और कवि-गीतकार भी तो अपने सुख-दुख के अनुभवों को सीधे अपना कहकर व्यक्त तो करते हैं, किन्तु उनके गीतात्मक निजी उद्गार उनके होकर भी सारी मानवता के बन जाते हैं । गोपीवल्लभजी का एकऐसा गीत देखें–

'गीत दो लिखे मैंने जन्म के, मरण के
एक तुम न सुन सकी, एक मैं न गा सका
धरती ने पूज लिये पाँव जब गगन के
पास तुम न रह सकी, दूर मैं न जा सका ।'

नुक्कड़ गीतों के लिये बहुचर्चित कवि गोपीवल्लभ आपात्काल के दौरान नागार्जुन, सत्यनारायण के सहधर्मी और सहसाथी ही नहीं रहे अपितु नुक्कड़ आन्दोलन के सह संचालक रूप में उनकी वर्चस्विता को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा और पहचान भी प्राप्त हुई । सप्रयोज्य रचित नुक्कड़ गीतों में गोपीवल्लभ ने मानवीय संवेदना और जीवन-मूल्यों के मर्मान्तक सूत्रों को इस प्रकार पिरोया है कि मात्र वे यथावसरिक नारे नहीं, जीवन-सूत्र के नियामक बन गये हैं । एक उदाहरण ही अलं होगा–

'गाँधी का हर शब्द उलटकर हमने अर्थ भरा है
कह कर 'राम' वह, हम उसको कह रहे 'मरा' है
सच का बोल समय सुनता है, समय नहीं बहरा है ।'

संकलन में कवि गोपीवल्लभ अपनी कविताओं के रूप में भी सगर्व खड़े दिखायी देते हैं । इनकी कविताओं को देखने के क्रम में मुझे धूमिल की पंक्तियाँ बरबस याद आ जाती हैं–'कविता/भाषामें/आदमी होने की तमीज है ।' कविता निर्वैयक्तिक होती है । उसमें कवि स्वयं नहीं, उसकी बात बोलती है । शमसेर ने ठीक ही कहा है–'बात बोलेगी, हम नहीं ।' कवि गोपीवल्लभ अपनी कविताओं में उग्र तेवर के साथ बुलन्द वाणी में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं ।

'आदमी होने की तमीज' और 'बात बोलेगी, हम नहीं' में कविता का सम्पूर्ण बहिरंग और अंतरंग समासोक्त है । आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री ने अपने उपन्यास कालिदास में कवि कर्म का उल्लेख करते हुए लिखा है कि 'कवि को राम के साथ राम और रावण के साथ रावण बनना पड़ता है । वह आसमान के समान रंग बदलता और समुद्र के समान नयी लहरें उठाता है ।'

उपर्युक्त संदर्भ में जब हम कवि गोपी वल्लभ की कविताओं को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि उनमें कवि अपने इर्द-गिर्द के, अपने साथ के सम्बन्धों की जाँच-पड़ताल करता दिखायी देता है । वह अपनी वैयक्तिकता को केन्द्र में रखकर युग की संवेदना और धड़कन को पढ़ने की चेष्टा करता है । एक बानगी देखें–

'मेरे चारों ओर/तुम हो/हमेशा हो/यही अहसास मुझे तोड़ जाता है/जो मेरे होने न होने के/बीच के अलगाव में/एक सेतु जैसा/तुमको मुझसे जोड़ जाता है ।'

श्री गोपीवल्लभ की कविताओं को पढ़ते समय अचानक गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. अम्बा शंकर नागर का एक नवगीत स्मरण हो आता है–

'जो लिखो अच्छा लिखो/अनुभूति से सच्चा लिखो
काव्य लिखना हो तो बिम्बों में लिखो
बिम्ब भी ऐसे कि जिनमें तुम दिखो ।'

(आधुनिक हिन्दी साहित्य : गुजरात पृ. 147)

श्री गोपीवल्लभ ने सचमुच अनुभूति की सच्चाई को स्वयं रूपात्मक विम्बों में अनुस्यूत करते हुए युग की संवेदना और धड़कन को गहराई से देखने का सन्निष्ठ प्रयास किया है । 'रसोई घर से विस्तर तक', 'आखिर क्यों' में कवि की यह प्रवृत्ति पूर्णत: फलितार्थ है । एक अंश अवलोकनार्थ–'तुम्हारी देह से निकली नदी/आतुर नहीं है/किसी सागर में खोने को/तुमने पहाड़ को जिया नहीं/चट्टान कभी तुम्हारी कलाई पर टूट कर/गूँजी नहीं/तुम्हारी गोद में/कभी कोई जंगल हरा-भरा नहीं हुआ/धरती पर फैलकर/तुम फूल सी महकी नहीं/तुम क्या जाने/क्योंआखिर क्यों/तुम्हारी देह से निकली नदी/आतुर नहीं है/किसी सागर में खोने को ।'

कृति में 24 गजलें भी विन्यस्त हैं जिन्हें गज़लकार ने 'नयी गज़ल' का नाम दिया है । मुझे तो ऐसा लगता है कि नयी कविता, नवगीत की तरह नयी गज़ल भी समय से लड़ती हुई अपने सक्रिय अस्तित्व का अहसास कराने वाली एक नयी विधा है जिसमें पारम्परिक लीक से हटकर समय के साथ पैर मिलाने का उपक्रम और जन-जीवन के साथ संवाद स्थापित करने का प्रयास हुआ है । वैसे तो उर्दू गज़लों में कई मख़्सूस बहरें हैं जिनका बखूबी निर्वाह गज़लों की कलात्मकता का प्रमाण है । अधिकांश समकालीन गजलगो इन बहरों से पूर्णत: परिचित नहीं है । केवल रदीफ-काफियों को जुटाने या निभाने का काम ही गज़ल नहीं है । बहरों के सम्यक् निर्वाह एवं औज़ान और अरकान की पहचान के बगैर और मुकम्मिल गज़ल नहीं बन पाती । हिन्दी की ऐसी गज़लें बहुत कम हैं जो इल्मेउरूज की कसौटी पर पूरी और खरी उतर सकें । कथ्य की नवीनता, प्रखरता तथा उग्रता में शिल्पगत खामियों को नजर-अन्दाज करने की हमारी प्रवृत्ति रही है, इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर गोपीवल्लभ जी की संकलित गज़लों पर विचार किया जा सकता है । इनकी गज़लों में युगीन चेतना की मर्मान्तक कथा की सपाटबयानी का उग्र तेवर सर्वत्र अन्तर्निनादित है । एक उदाहरण–

'देखा नहीं हो आपने तो आज देखिये
सिर काटने आये मेरे सिरताज देखिये
मेरी जबाँ तराशने आये हैं खुद वही
जिनको पसन्द है मेरी आवाज देखिये ।'

परम्परा गज़ल में इश्कमजाजी एवं रूमानी तेवर का ही होना स्वाभाविक माना जाता है । किन्तु समकालीन गज़लों में समाज की विभिन्न समस्याओं के विद्रूप चेहरे को भी बेपर्द करने का प्रयास रहता है । गोपीवल्लभ जी की गज़लों में छल-कपट, टूटते मानवीय संबंध, कुंठा एवं संत्रास आदि के विपलापन की ओर इसीलिये पूरी साफ़गोई के साथ विवाद किया गया है । एक स्थल प्रस्तुत है–

'मजबूर हो के हाथ जो गिरा था पेट पर
सड़कों पे अब वही मशाल आ गया
जी हाँ, जरूर मौसम बदला है देश का
जो पात-पात था, वो डाल-डाल आ गया ।'

प्रेम और सौन्दर्य के प्रति आकृष्ट होना सहज मानवीय वृत्ति है । प्रेम और सौन्दर्य तो गज़ल की बुनियादी अनुभूतियाँ हैं । संभवत: इसी कारण से गोपीवल्लभ जैसे युगीन समस्याओं के सशक्त एवं सजग चित्रकार भी इससे प्रविरत नहीं हो पाये हैं, यद्यपि इनका युगबोध-अनुभव इनसे अननुस्यूत नहीं हो पाया है । 'आँख लिखती है, आँख पढ़ती है' 'महसूस हो रही तुम', 'कितने प्रवास' में गज़लकार की एतद् सम्बन्धी संवेदनात्मक अनुभूति का कोमल स्पर्श हुआ है । एक बानगी–

'चाँदनी रात की कसम तुमको
आज जाने न देंगे हम तुमको
रात यह नूर में नहायी है
भोर होने का है भरम तुमको ।'

'बंजर में बीज' आधुनिक साहित्य की एक ऐसी सशक्त कृति मानी जा सकती है जिसमें गीत, गज़ल और कविता को बड़ छोट कहत अपराध /सुनि गुन भेद समझिहं साधु' को फलितार्थ करते हैं । संकलन की सभी रचनाओं में अन्तर्भुक्त चिन्तन की गहराई और सामाजिक चेतना की निर्भीक और सकरुण अभिव्यक्ति को देखकर साधिकार कहा जा सकता है कि श्री गोपीवल्लभ केवल अपने सुकंठ के कारण मंचयी कवि नहीं, एक इन्टलेक्च्युअल पोएट हैं । यदि गोपीवल्लभ की अन्य रचनाएँ नहीं भी प्रकाशित हों तो यह एकमात्र रचना उन्हें काव्य जगत में सुप्रतिष्ठित करने के लिये पर्याप्त है । काव्य प्रेमियों के लिए पुस्तक अवश्यमेव पठनीय है । प्रकाशक–साहित्य केन्द्र प्रकाशन, ई-5/20, कृष्णनगर, दिल्ली-51

संपर्क : डा. शिववंश पाण्डेय, 'लीलाधाम' 3/307, न्यू पाटलिपुत्र कॉलोनी पटना-13, फोन : 263083

लोकनायक और लोकशक्ति

पर सत्ता में कोई जगह मिल जाए । जो लोग सत्ता में हैं उन्हें इस बात से प्रसन्नता होनी चाहिए कि ऐसी कोई शक्ति है जो उसके और उसके साथियों के काम पर निगरानी रखे हुए है ।"

लोकनायक के जीवन में ही उनकी मानसपुत्री जनता पार्टी बिखर गई । लोकनायक के सपने टूट गये । लोगों ने कहा कि लोकनायक विफल हो गए । लोकनायक मात्र एक नेता नहीं थे-साहित्यकार एवं कवि भी थे उन्होंने अपनी कविता में कहा :-

"जग जिसे कहता विफलता
थी शोध की वे मंजिलें,
मंजिलें तो अनगिनत हैं
गन्तव्य भी अति दूर है ।"

इस तथाकथित विफलता का महान साहित्यकार डा. लक्ष्मीनारायण लाल ने बड़ा अच्छा विश्लेषण किया है :-"जनकपुर से चलकर गांव में किसान बनकर आए थे राजाजनक, सूखी धरती पर हल चलाने; तब लोकशक्ति जानकी प्राप्त हुई थी । पर किसान को कभी जनकपुर के केन्द्र में जाने को नहीं मिला तभी राम वनवास हुआ, सोने की लंका जली । रावण वध हुआ । राम द्वारा ही अंत में जानकी को वनवास मिला और अंतत: जानकी को उसी पृथ्वी में अंतर्धान हो जाना पड़ा । लोक स्वराज्य लोक चेतना का फल है । **जब शक्ति का दुरुपयोग होता हो, तब शहर से लेकर गाँव के अंतिम आदमी तक सभी लोगों द्वारा उसका प्रतीकार करने की क्षमता प्राप्त कर वह स्वराज्य हासिल किया जा सकता है । ऐसी लोकशक्ति से जो स्वराज्य प्राप्त किया जाता है, उसी में से तब यह चेतना निकलती है कि सत्ता पर कब्जा करने और उसका नियमन करने की क्षमता उसमें है । शक्ति पर किसी का एकाधिकार नहीं । वह मां है । वह लोकशक्ति है वही मातु जानकी है ।"**

शोधार्थी रहे लोकनायक शायद अपने गन्तव्य तक नहीं पहुंच पाये-आमरण शोध ही करते रहे । परन्तु उनकी लोक शक्ति माँ जानकी अभी भी जीवित है । लोकशक्ति लोकनायक की मृत्यु के बाद भी दिल्ली के तथा कई प्रदेशों के सिंहासन पर शासकों को बदलती रही । आज भी बिहार ऐसे कई प्रदेश हैं जहाँ के मुख्यमंत्री लोकनायक के शिष्य हैं और लोकशक्ति ने उन्हें विजयी बनाया है । आज निरीह जनता को देखना यह होगा कि राजशक्ति लोकशक्ति से कहीं आगे न बढ़

पृष्ठ १० का शेष

जाए । लोकशक्ति को पल्लवित-पुष्पित करना ही आज लोकनायक की सच्ची श्रद्धांजलि होगी । लोकशक्ति को निष्ठा आधारित बनाना और लोक जीवन को नीचे से ऊपर तक संलग्न कर सबका कर्मक्षेत्र बनाना ही राजशक्ति का राजधर्म होना चाहिए और यही राजधर्म लोकनायक के जन्म दिवस पर लोकनायक के शिष्यों द्वारा अर्पित उद्गार होगा । कहीं ऐसा न हो कि राजशक्ति स्वार्थ और सत्ता के मद में लोकशक्ति की उपेक्षा करने लगे और लोकशक्ति विवश होकर पुन: मातु जानकी की तरह पृथ्वी में अंतर्धान हो जाए ।

24 मार्च 1977 को लोकनायक का दिया वह वक्तव्य आज भी प्रासंगिक है और कल भी रहेगा । उस दिन लोकनायक ने कहा था:-"आगे का रास्ता लोकशक्ति का मार्ग होगा । सत्ता से ऊपर अंकुश रखने वाला एक लोक संस्थान होगा जिसके पास आम नागरिक, राजनीतिक दल और जनता भी निर्भय नि:संकोच जा सके और उसके जो सुझाव होंगे उसे सरकार मान्य करे ।

जो नहीं माने-वह सिंहासन फिर खाली करे ।"

संपर्क : ग्राम-पो. : बेलाही, द्वारा-अथरी
जिला-सीतामढ़ी-843311 (बिहार)

साहित्य और संस्कृति में दलित अस्मिता की पहचान

❑ हरीन्द्र विद्यार्थी

आज दलितों का सामाजिक हस्तक्षेप भले ही खुलकर सामने दिखाई दे रहा हो-मगर साहित्य में उसकी शुरुआत दशकों पहले हो चुकी थी। दलित साहित्य की मजबूरी है कि वे उसी सब को अपनी कलम से बांधते हैं जिससे हर रोज गुजर रहे हैं। वे अपने निजी अनुभवों को जमीन पर ही जीने के संघर्षों और स्थितियों का इंदराज करते हैं जिसकी तस्वीरें इतनी खौफनाक हैं कि सारे समाज को दहलाकर रख देती हैं। दलित जिस बात को कह नहीं पा रहे हैं उसे प्रेमचन्द ने 'कफन', 'पूस की रात', 'ठाकुर का कुआँ' में कितने प्रभावशाली और सार्थक ढंग से कहा है। दलित जीवन की कहानियाँ सिर्फ उसी वर्ग से आए लेखकों की कलम से निकलें-यह जरूरी नहीं पर यह भी सच है कि किनारे पर खड़े होकर डूबने वाले की पीड़ा को एक हद तक ही अनुभव किया जा सकता है। इसी प्रकार दुनिया का कोई वकील अपनी सारी निष्ठा, ईमानदारी या कानूनी पैतरेबाजी के बावजूद वादी की यातना, तड़प और गुस्से को नहीं बता सकता, जितना वे खुद कर सकते हैं। इसलिए दलित लेखन अपने समय और स्थितियों से ज्यादा नाल-बद्ध है। भले ही उसमें स्पष्ट विजन न हो पर कम से कम भविष्य तो है।

उपर्युक्त बातों की चर्चा जनवादी कवि हरीन्द्र विद्यार्थी ने अपने इस आलेख में अपने ढंग से की है। उल्लेखनीय है कि विगत 14 अप्रैल, 1998 को पटना में राष्ट्रीय विचार मंच की ओर से आयोजित बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेदकर की 106 जयंती के अवसर पर भी विद्यार्थी ने यह आलेख संगोष्ठी में प्रस्तुत किया था-प्रधान संपादक

भारतीय लोकतंत्र की इसे त्रासदी ही माननी चाहिए कि तमाम तरह के समता और समाजवादी प्रयोग और अभियानों के बावजूद दलितों की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और साहित्यिक स्थितियों में उतना सुधार नहीं हो पाया जितना कि अब तक हो जाना चाहिए था। दलित साहित्य, अभिजात वर्ग या भद्रलोक के राजसी सुविधाभोगी रचना कर्म का भंडाफोड़ करने वाला संघर्ष मूलक साहित्य है। सामाजिक आंदोलन की प्रतिक्रिया स्वरूप ही इस साहित्य आंदोलन का जन्म हुआ। शोषक वर्ग के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए समाज में समता, बंधुत्व तथा मैत्री की स्थापना करना ही दलित साहित्य का उद्देश्य हैं। असल में जो लोग दलित साहित्य में 'ललित' साहित्य जैसा सौंदर्य तलाश करते हैं, वे नहीं जानते कि ताउम्र दलित समाज का व्यक्ति आर्थिक संकट के साथ सामाजिक विषमता भी झेलता है और उसी अनुभव की दहकती भट्ठी के बीच से जब अनुभूति तथा संवेदनाएं उभरती हैं तो दलित साहित्य की प्रक्रिया विकसित होती है। प्रेमचंद ने कहा था, "अब साहित्य केवल मन बहलाव की चीज नहीं है, मनोरंजन के सिवाय उसका और भी कुछ उद्देश्य है, जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है चाहे वह व्यक्ति या समूह है, उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है।"

सम्पन्न मनुष्य ने अशांति और असंतोष प्रकट न होने देने के लिए जहां अपनी शक्ति से काम लिया, वहां उसने अपनी बनायी हुई व्यवस्था की रक्षा के लिए सिद्धांत भी बनाये। उसने निर्बलों और साधनहीन लोगों को संतोष की शिक्षा दी। परलोक में दंड का भय दिखाया और विषमता को बढ़ने से रोकने के लिए, दलितों की पीड़ा को सह्य बनाने के लिए उसने बलवानों और साधन-संपन्न लोगों को दया, सहानुभूति और त्याग का भी उपदेश दिया। इस प्रथा के काल में या सामंत युग में मानवता या करुणा की पुकार का उद्देश्य था, उस समय की शासन व्यवस्था को दृढ़ करना और दलित वर्ग को अपने हित के लिए जीवंत बनाये रखना।

25 दिसम्बर, 1927 को डॉ. अम्बेदकर के सभापतित्व में सत्याग्रह सम्मेलन बुलाया गया था जिसमें पांच हजार से भी अधिक अछूत उपस्थित थे और मनुस्मृति के दहन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शम्बुक वध को गलत कहने का साहस क्या आज के लेखक जुटा पा रहे हैं? ओमप्रकाश बाल्मीकि के अनुसार सहानुभूति रखने वाले आज के लेखकों का दृष्टिकोण सिर्फ दया का होता है, जिसके पीछे अपराधबोध की भावना भी होती है। आज के लेखकों, साहित्यकारों, समीक्षकों, पत्रकारों में से अधिकांश अभी भी वेद पुराण, मनुस्मृति के साथ रामराज्य को वापस लाने के समर्थक हैं। उनके आदर्श पुरुष अलग हैं। वे परम्परावादी हैं। बल्कि मैं तो कहूंगा कि उनमें कुछ तो घोर रूढ़िवादी भी हैं, फिर दलित साहित्य और साहित्यकारों से कैसे तालमेल बैठा सकते हैं। दलित समाज आज हाशिये से उठकर केन्द्र में आ रहा है। जो लोग उभरते हुए दलित लेखकों को कमजोर एवं स्तरहीन कहने का दम्भ भरते हैं उन्हें मालूम होना चाहिए कि प्रेमचंद भी अपनी आरंभिक रचनाओं के दौर में उतने सशक्त रचनाकार नहीं थे। ऐसा नहीं है कि दलितों के जीवन और जीवन संदर्भों को लेकर हिन्दी में कुछ लिखा ही नहीं गया है। सदी के प्रारंभ से लेकर उसके इस अंतिम छोर तक, दलितों के जीवन और उससे संबद्ध समस्याओं पर कविताओं, कहानियों, निबंधों, रेखाचित्रों से लेकर भारी भरकम उपन्यासों तक काफी कुछ लिखा गया है, जिसमें हिन्दी के ख्यात लेखकों की भागीदारी है, फिर भी यह एक दुखद सच्चाई है कि विशाल हिंदी क्षेत्र की व्यापक और बहुस्तरीय रचनाशीलता में, यह

सब कुछ मिलाकर हाशिये की ही चीज है, उसका मुख्य और महत्वपूर्ण अंश नहीं ।

सच पूछा जाय तो दलितों के जीवन सन्दर्भ अन्य भारतीय भाषाओं, यहाँ तक कि मराठी में भी दलित साहित्य आंदोलन के पहले कभी इन भाषाओं की रचनाशीलता में मुख्य रूप से नहीं आये । फिर कुमार लिम्वाले, दया पवार, मोहनदास नैभिशराय, ओमप्रकाश, बाल्मीकि आदि दलित लेखक प्रकाश में आये । हिन्दी या अन्यान्य भारतीय भाषाओं में दलितों के बारे में जो कुछ भी लिखा गया है, नामी-गिरामी रचनाकारों के द्वारा भी, उसकी अपनी सीमाएं हैं । इस लेखन में दलित जीवन की सच्चाइयाँ और उसका यथार्थ जरूर सामने आया है, किन्तु अपवादों को छोड़ प्रायः इसमें दलितों की नारकीय जीवन स्थितियों, उनके प्रति बरते जाने वाले सामाजिक भेदभाव एवं शक्ति संपन्न तथा सवर्णों द्वारा किये जाने वाले उनके उत्पीड़न पर या तो आंसू बहाये गये हैं, उन पर दया और सहानुभूति प्रकट की गयी है या फिर अधिक से अधिक इस उत्पीड़न के जिम्मेदार व्यक्तियों, वर्गों और संस्थाओं आदि की आलोचना की गयी है । चली आ रही सामाजिक संरचना दलितों की सामाजिक हैसियत निश्चित करने वाले, उन्हें नरकवास की स्थिति देने वाले, इस अमानवीय सामाजिक विधान के कर्ताओं, उनके धर्मशास्त्रों, उनके द्वारा स्थापित निर्मम अपराधतंत्र और सदियों से उसे ढोने और बरकरार रखने वाली मानसिकता पर बज्र प्रहारों की जरूरत थी । उदारता, सहिष्णुता, भाईचारे और 'वसुवैध -कुटुंबकम' का मुखौटा लगाये अपराध करती अभिजनों की संस्कृति और आचरण को असलियत में दुःख, ग्लानि, पश्चाताप और एक सात्विक आक्रोश के साथ समूचे विश्व के समक्ष उजागर करने का जो नैतिक दायित्व था तथा दलितों के वजूद, उनकी सामाजिक हैसियत, उनके संघर्ष, उनके श्रम, उनके अधिकारों और उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप जिस पक्षधरता के साथ उनकी मानसिकता और उसे पोषित करने वाले विधानों के रचनात्मक हस्तक्षेप, एवं नैतिक दायित्व था वह सब पूरी सदी के भारतीय रचना परिदृश्य में नहीं हो सका । सदिच्छाएं जरूर बरसायी गयीं किन्तु मात्र सदिच्छाओं से वास्तविक जीवन-संदर्भ नहीं बदला करते । बुनियादी बदलाव के लिए सुविचारित और योजनाबद्ध कर्म अपेक्षित होता है ।

शासक वर्ग की विचाराधारा ही किसी युग की प्रधान विचारधारा हुआ करती है । रामायण के रचनाकार महर्षि बाल्मीकि सीता-निर्वासन हो, बालि-वध हो अथवा शम्बूक की हत्या परंपरागत विधान तथा सनातन धर्म की रक्षा के नाम पर आहतों-अपमानितों द्वारा राम की भर्त्सना करते हुए भी वे राम के हर कृत्य को उचित ठहराते हैं । जगत को मिथ्या और माया कहने वाले अद्वैत के प्रतिपादक शंकराचार्य वर्ण-व्यवस्था की अमानवीयता पर न केवल चुप्पी साध लेते हैं, बल्कि प्रत्येक वर्ण के लिए अपने-अपने कर्तव्यों के निर्वाह को उचित ठहराते हैं । दलितों के अधिकारों के पक्षधर तक दलितों के जीवन पर करुणा प्रदर्शित करते हुए उन्हीं धर्मशास्त्रों, विचारों तथा व्यवस्थाओं से बंधे दिखाई पड़ते हैं जिनका सहारा लेकर दलितों पर सदियों से जुल्म बरपा होते आये हैं । काव्यशास्त्र या साहित्य शास्त्र में कुलीन मानसिकता ही हावी रही । उच्च कुल उत्पन्न, धीरोदात व्यक्ति ही इनमें नायकत्व का अधिकारी कहा गया । सौन्दर्य के प्रतिमान और भावों का गांभीर्य तथा उज्ज्वलता भी यहां अभिजनोजित सदियों के आधार पर तय की गयी और देखी गयी है । इन प्रतिमानों का विरोध करने वाले वे किसी भी क्षेत्र के हों, पृष्ठभूमि में फेंके जाते रहे, हाशिये पर ही डाले जाते रहे । दंड-संहिता भी आदमी और आदमी के भेद को रेखांकित करते हुए रची गयी । परिणामतः महाराष्ट्र में दलित साहित्य आंदोलन का जन्म हुआ, गुजरात में उसकी अनुगूंजें सुनायी पड़ीं और आज हिन्दी में भी उसकी सुगबुगाहट शुरू हो गयी है । आजादी के पचास वर्षों में भी बजाय इसके कि समाज के सामंती अवशेषों पर प्रहार होता, वर्ण तथा जाति चेतना की जड़ें कमजोर की जातीं, असलियत यह है कि इस सारे अर्से में आजादी की लड़ाई के दौर के सकारात्मक मूल्यों, संकल्पों और लक्ष्यों को पृष्ठभूमि में फेंकते हुए राजनीतिक सत्ता बनाये रखने के मोह के नाते उस सारे सामंती ठाट-बाट और विधि विधानों को, सामंती विचारधारा को संरक्षित और संवर्द्धित किया गया है । परिणामतः आजादी के पूरे दौर में न केवल दलितों के उत्पीड़न में वृद्धि हुई, उन्हें अधिकार से वंचित और निरीह बनाये रखने के प्रयास भी हुए । इसी का परिणाम है दलित चेतना का उत्थान और दलितों का एक अहम सामाजिक शक्ति के रूप में ही नहीं, राजसत्ता पर काबिज होने को तैयार एक राजनीतिक शक्ति के रूप में सामने आना ।

हिन्दी क्षेत्र सदियों से सामंती संस्कारों और परम्पराओं का गढ़ रहा है । बड़ी-बड़ी सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियाँ और पाखंड हिन्दी क्षेत्र की इस धरती में शताब्दियों से पलते और परवान चढ़ते रहे हैं । राजे-नवाबों, जमींदारों और जागीरदारों की शान-शौकत, ऐय्याशी और उनके द्वारा होने वाले साधारण जन के उत्पीड़न के लिए भी इस क्षेत्र के राजे-रजवाड़े और यहां का ग्रामीण अंचल काफी विख्यात रहा है । यह क्षेत्र बड़े-बड़े धार्मिक तीर्थों का गढ़ भी है । वहां परम्परा से चल रहे धार्मिक अखाड़े, साधु संत कहे जाने वालों के मठ सदियों से यहां की दैन्य-जर्जर, अज्ञ जनता की धार्मिक भावनाओं का इस्तेमाल अपने हित में करते रहे हैं । मठ-मंदिरों में पलने वाले अपराधतंत्र के लिए भी यह क्षेत्र प्रसिद्ध रहा है ।

हिन्दी क्षेत्र ने देश को बड़े-बड़े राजनेता, स्वातंत्र्य वीर यहां तक कि प्रधानमंत्रियों की एक पूरी की पूरी कतार तो दी, परन्तु पूरी सदी में वह राममोहन राय, ईश्वरचंद विद्यासागर, महात्मा फूले, भीमराव अम्बेदकर, ई.वी रामास्वामी नाइकर और नारायण गुरू जैसा कोई समाज चेतर नहीं दे सका जो विचारों से लेकर व्यवहार तक हिंदी क्षेत्र के सामाजिक-धार्मिक-रुढ़िवाद, परंपरा के प्रति उसकी अंध भक्ति, उसकी अशिक्षा, अज्ञान, सामाजिक भेदभाव, जातिवाद, ब्रह्मणवादी वर्चस्व, स्त्रियों

और दलितों के घोर उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाता, आंदोलन करता और सामंती विचारों और संस्कारों की सड़ांध से हिन्दी क्षेत्र को मुक्त करने का संकल्प लेकर उसका नेतृत्व करता । ले देकर आर्य समाज जैसी संस्था सामने आयी जो शुद्धि आंदोलन और सीमित वैचारिक दायरे में फंसकर रह गयी ।

सन् 1857 ई. के स्वाधीनता संग्राम में ब्रिटिश फौजों से एक जुट हांकर टक्कर करनेवाली दलित, हिन्दू-मुसलमान जनता का हिन्दी क्षेत्र सांप्रदायिक अंधउन्माद, धार्मिक जड़ता, रूढ़िवाद, जातिवाद, हिंसा, रक्तपात, अपराध और नारी उत्पीड़न का अखाड़ा बना हुआ है । मध्यकाल से लेकर आधुनिक काल तक न जाने कितने रचनाकारों के जन्म-शताब्दी वर्ष मनाये गये, उनपर जलसे, समारोह तथा संगोष्ठियां हुईं पर मध्यकाल के कबीर इन साहित्यकारों की सूची से अलग क्यों रखे गये ? **हमें खुश होना चाहिए कि जिनके हाथों में कभी कलम न पकड़ने की नियति दी गयी थी, जिन्हें वेद सुनने तक की मनाही थी, लिखने की बात ही दूर थी, आज उनके हाथ कुदाल, फावड़े और बेलचे के अलावा कलम भी पकड़ रहे हैं । पहली बार दलितों का अपना भोगा हुआ यथार्थ उनकी अपनी लेखनी से सामने आ रहा है । इस लेखन मे दया, करुणा और सहानुभूति नहीं, सदिच्छाएं नहीं, कृपा और अनुकम्पा के भाव नहीं, खालिस वह यथार्थ है जिसके वे भोक्ता रहे हैं, उफान और उद्वेग है, चुनौतियां और चेतावनियां हैं, आत्मविश्वास और संतुष्टि का भाव है** । आगे चलकर वह समृद्ध होगा । दलित लेखन या दलित साहित्य उस साहित्य को भी कहा जा सकता है जिसके रचयिता भले ही दलितों से इतर हो, किन्तु जिसमें दलित जीवन और व्यवस्था के नागपाशों से उसकी मुक्ति अंतर्वस्तु के रूप में आयी हो, संभव है, ऐसी रचना दलित लेखकों के अपने तर्कों और सोच के दायरे में पूरी तरह न अटती हो, किन्तु उसे दलितों की पक्षधर या मित्ररचना के रूप में तो स्वीकार किया जा सकता है । आमतौर पर सभी दलित लेखक इस बात को लेकर एकमत हैं कि दलित लेखन या दलित साहित्य की संज्ञा उसी रचना को दी जा सकती है जिसका रचनाकार जन्मना दलित हो । इसमें असहमति की कोई गुंजाइश नहीं है । लेकिन, रचना का स्वरूप और चरित्र उसकी अन्तर्वस्तु के आधार पर पहचाना जाना चाहिए । मुक्ति बोध के अनुसार जनता का साहित्य वह तो है ही जो साधारण जनता की वर्तमान समझ के दायरे में आता हो, किंतु जनता का साहित्य उसे भी कहेंगे जो संप्रति जनता की अपनी समझ के दायरे में नहीं आता, किन्तु यही जनता जब सुशिक्षित हो जायेगी वह न केवल उसकी समझ के दायरे में आ जायेगा, जनता उसमें अपने उन्नत सौन्दर्य बोध और भाव बोध से भी परिचित होगी । शर्त यही है कि इस प्रकार का साहित्य जनता का साहित्य तभी कहा जायेगा, जब वह जनता की मुक्ति के प्रति समर्पित हो । फिर सवाल महज करुणा, दया और सहानुभूति का ही नहीं है । ऐसे साहित्य में यातना देने वाली व्यवस्था और उसके संरक्षकों के प्रति रोष भी है, धिक्कार तथा भर्त्सना भी है, उनपर व्यंग्य-विद्रूप है, यातना ग्रस्तों का संघर्ष भी है । सामाजिक यथार्थ की अनुरूपता में उसकी वस्तुगतता तथा सप्राणता को बरकरार रखते हुए ऐसी रचनाओं में दलितों के प्रति पक्षधरता भी है । स्वानुभूत यथार्थ या आपबीती का सचमुच कोई विकल्प या स्थानापन्न नहीं हो सकता ।

संपर्क : शांति मार्ग,गया लाईन गुमटी, पटना-।

With Best Compliments from

Charak Pharma

Stockist for :

Themis, Wander, Searle, Lupin, Reptakos, Unichem, Dutt-Stevens, Caldern, Sona Pharma, Lab., elder, Gluconate, Amrutanjan, Gujarat Lab., Orbits, Stadneed.

GOVIND MITRA ROAD
PATNA-800 001
PHONE : 671858

With Best Compliments from

Popular Pharma

CHEMIST & DRUGIST

NEW MARKET, PATNA-1,
PHONE : 226393

देह व्यापारियों का अंतर्राष्ट्रीय गिरोह

❒ डॉ. शुभंकर बनर्जी

पूरी दुनिया में देह व्यापार के धंधे को मजबूत बनाने हेतु अंतर्राष्ट्रीय गिरोह सक्रिय है। हाल ही में फिलीपींस में कुछ महिलाओं के विषय में किए गए एक सर्वेक्षण से इस बात का पता चला है कि किस प्रकार से तरह-तरह के छद्म आवरण के अन्दर देह व्यवसाय का धंधा मजबूत होता जा रहा है।

यह बात भी सामने आयी है कि फिलीपींस जैसे गरीब देशों की अबोध लड़कियों को विभिन्न प्रकार से बहला-फुसला कर पश्चिमी देशों में विवाह का झांसा दे कर भेजा जाता है तथा उसके बाद उन्हें अंतर्राष्ट्रीय देह व्यापार के गंदे बाजार की आग में झोंक दिया जाता है।

इस संदर्भ में खास तौर पर फिलीपींस में किए गए सर्वेक्षण से यह बात पता चला है कि जिन फिलीपीनी लड़कियों को बैल्जियम में विवाह का झांसा देकर ले जाया गया तथा उनकी शादियां बैल्जियम के तथाकथित वरों के साथ करायी गयी, उनमें से अधिकांश लड़कियों को अंततः वेश्यालय तक पहुंचा दिया गया। इनमें से ज्यादातर लड़कियों को बैल्जियम में वेश्याओं के रूप में पंजीकृत किया जा चुका है।

इस बात का भी रहस्योद्घाटन हुआ है कि यूरोपीय देशों में भेजी गयी ऐसी युवतियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के देह व्यापार के दलालों की शर्मनाक भूमिका के दुष्परिणामस्वरूप नाइजीरिया तक पहुंचा दिया गया है। दरअसल फिलीपींस के देह व्यापार के सौदागरों की गतिविधियां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैल चुकी हैं। देह व्यापार के सौदागरों पर कानूनी तथा सामाजिक नियंत्रण प्राप्त करने की चेष्टा भी जारी है। फिलीपींस में देह व्यापार के क्षेत्र में कार्य कर रहे अंतर्राष्ट्रीय दलालों पर काबू पाने के लिए एक स्वैच्छिक संस्था भी कार्य कर रही है। इस संस्था का नाम "फिलीपींस नैट वर्क" है। इस संस्था के परियोजना निदेशक श्री सान्टोस की राय भी यही है कि देह व्यापार से संबंधित किए गए सर्वेक्षण से ही यह बात सामने आयी है।

इस अंतर्राष्ट्रीय देह व्यापार के गिरोह के संदर्भ में बैल्जियम की सरकार भी सक्रिय हो चुकी है। अतः फिलीपींस से बैल्जियम में इस प्रकार आने वाली लड़कियों की रोकथाम हेतु कठोर कार्यवाही करने तथा इस गिरोह पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए कई कदम उठाये हैं। दूसरी ओर फिलीपींस की सरकार ने भी उपर्युक्त परियोजना को वित्तीय सहायता प्रदान की है।

दरअसल उपर्युक्त परियोजना का उद्देश्य सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर चेतना जागृत करना है। इसके अन्तर्गत यह प्रयास किया जाएगा ताकि फिलीपींस तथा दूसरे पड़ोसी देशों की निर्धन तथा मजबूर लड़कियों का देह व्यापार के लिए जाने की मजबूरी को ही मूलभूत रूप से समाप्त किया जाए।

इस परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त परियोजना से जुड़ी अधिकारी डॉ. पैट्रिक लिकुनान का वक्तव्य यह है कि फिलीपींस से लाई जाने वाली मजबूर लड़कियां पर्यटक के रूप में या किसी बैल्जियम नागरिक की पत्नी के रूप में यूरोपीय देशों में पहुंच जाती हैं। यूरोप के कुछ मैरिज ब्यूरो भी ऐसे तथाकथित विवाहों को सम्पन्न कराने का स्वांग रचाते हैं। स्पष्ट है कि मैरिज ब्यूरो के नाम पर भी अंतर्राष्ट्रीय देह व्यापार का धंधा तथा उसके गिरोहों की भूमिका सक्रिय रहती है।

मैरिज ब्यूरो का यह गिरोह काफी चालाकी से काम करता है। साधारण तौर पर ऐसे तथाकथित मैरिज ब्यूरो द्वारा यूरोप से कुछ पुरुषों को, देह व्यापार के अंतर्राष्ट्रीय दलालों की ओर से, फिलीपींस में पर्यटकों के रूप में भेजा जाता है। वे तथाकथित पर्यटक-पुरुष स्थानीय निर्धन परिवार की कम उम्र की कन्याओं को प्रेम जाल में फंसा कर या विवाह का रंगीन सपना दिखाकर या अन्य किसी प्रकार से झांसा देकर विश्वास अर्जित कर लेते हैं। उसके बाद इन अबोध तथा सरल कन्याओं को अपने साथ बैल्जियम ले आते हैं। बैल्जियम में कुछ समय तक इन लड़कियों के साथ पति पत्नी का नाटक खेला जाता है तथा इस नाटक का पटाक्षेप तब होता है जब उन्हें पत्नी की भूमिका से हटा कर देह व्यापार के धंधे में मजबूरन धकेल दिया जाता है। इस प्रकार से निर्धन लड़कियों का अपना छोटा-सा घर बसाने का सुनहरा सपना चूर-चूर हो जाता है।

ऐसी परिस्थिति में इन मजबूर लड़कियों को किसी अमीर बुजुर्ग के हाथ या अंतर्राष्ट्रीय देह व्यापार के बाजार में बेच दिया जाता है। अंततः इन मजबूर लड़कियों को अपने प्रेम की लागत वेश्या बन कर चुकानी पड़ती है। प्रेम जाल के नाटक में फंसना उनकी सामाजिक-आर्थिक मजबूरी है, जबकि अपनी काम-वासना की आग में इन लड़कियों को झुलसाने का काम अमीर देशों के दिल फेंक मनचलों की रुचि है। इसका दुष्परिणाम पूरे विश्व-समुदाय को ही भोगना पड़ रहा है।

देह व्यापार के इस अंतर्राष्ट्रीय धंधे को फलने फूलने के लिए ट्रैवल एजेन्टों की जिम्मेवारी भी कम नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इन ट्रैवल एजेन्टों के साथ देह व्यापार के अवैध धंधे से जुड़े हुए दलालों की बहुत बड़ी साठगांठ होती है। देह व्यापार के उद्देश्य से ऐसी लड़कियों को यूरोप भेजने हेतु ट्रेवल एजेंटों द्वारा लगभग 5,000 डालर तक वसूल किया जाता है। इस रकम में ट्रैवल एजेंट तथा दलाल आपस में 40 तथा 60 के अनुपात में बांट लेते हैं।

देह व्यापार के दलदल में एक बार फंस जाने वाली इन मजबूर लड़कियों को बाद में बंधुआ मजदूरों की तरह रहना पड़ता है। यूरोप भेजने की उपर्युक्त धन राशि देह व्यापार के दलालों तथा देह व्यापार की मंडियों द्वारा इन मजबूर लड़कियों से वसूल की जाती है। निर्धन परिवार से होने की मजबूरी से इन दलालों तथा मंडियों के आकाओं की बात मान कर आजीवन दैहिक शोषण को सहन करना ही उनकी नियति बन जाती है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस देह व्यापार के धंधे में मजबूरी से लिप्त इन वेश्याओं की आय प्रति रात्रि 400 से 1500 डालर तक होती है। परंतु इस आय का अधिकांश दलाल तथा उनके तथाकथित पतियों या मित्रों द्वारा, देह व्यापार की मंडियों के आकाओं की कृपा से, डकार लिया जाता है। त्रासदी की बात यह है कि बेचारी ऐसी लड़कियां जिस आर्थिक मजबूरी की बजह से इस दलदल में फंसती हैं उसी मूलभूत समस्या से उन्हें मुक्ति नहीं मिल पाती है। अर्थात देह व्यापार के इस घृणित आय में से अपने मजबूर मां-बाप को वे मुश्किल से 150 से 500 डॉलर मासिक ही भेज पाती हैं। जबकि कई मामलों में तथाकथित मैरिज ब्यूरो द्वारा भी विवाह हेतु 6000 से 10,000 डॉलर की वसूली कर ली जाती है। इन मजबूर लड़कियों के तथाकथित प्रेमी या पति द्वारा यह राशि उन लड़कियों से वसूल कर ली जाती है जिसका माध्यम स्पष्टतः उनसे देह व्यापार कराना ही है। अंततः यह स्पष्ट करना जरूरी है कि भारत जैसे देश भी इन अंतर्राष्ट्रीय दलालों के गिरोह का शिकार बन चुका है। अतः समय रहते रोक लगाने की नितांत आवश्यकता है।

• संपर्क : "शांति मिशन", ए-46, सादतपुर, करावल नगर रोड,, दिल्ली-110094

दलितों पर दमन आखिर कब तक ?

रा. वि. संवाददाता

भारतीय लोकतन्त्र का यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि आजादी की आधी शताब्दी बीत जाने के बाद भी किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए सताया जाता है, अपमानित होना पड़ता है क्योंकि वह दलित है। विगत कुछ माह में हुई घटनाओं पर यदि हम नजर डालें तो उससे यही साबित होता है कि अभी भी स्वतन्त्रता का लाभ सिर्फ-मुट्ठी भर लोग उठा रहे हैं। इसके लाभ से वंचित रहने वाले लोग मूलत: दलित और कमजोर वर्गों के हैं तथा एक किसी को जाति विशेष होने की वजह से अपमानित होना पड़ रहा है।

पिछले अगस्त के प्रारम्भ में दिल्ली के तिलोंकपुरी स्थित मंदिर में एक दलित महिला के साथ जो हादसा हुआ वह न केवल दलितों पर दमन का संकेत है बल्कि भाजपा के चरित्र को उजागर करता है। गुड्डी देवी नामक यह दलित महिला उक्त मंदिर में मेंहदी के पत्ते तोड़ने गयी थी और वह भी पुजारी से अनुमति लेकर। पर पत्ते तोड़ते वक्त भाजपा के कुछ कार्यकर्ताओं ने ताबड़तोड़ न केवल उस पर हमला बोल दिया बल्कि उसे तथा उसकी बहन को भद्दी-भद्दी गालियाँ तथा पिटाई करते हुए उसके साथ छेड़खानी की। इससे भी शर्मनाक बात तो यह है कि वहां पिटता देखनेवाले मूकदर्शकों में भी भाजपा के लोग बताए जाते हैं जो उसकी मदद के लिए आगे नहीं आए।

राजस्थान के धौलपुर जिले के नकसौंदा गांव में दलित युवक रामेश्वर जाटव की नाक में विगत 24 अप्रैल को गांव के गुजरों के द्वारा नकेल डालने की घटना कम शर्मनाक नहीं कही जाएगी। पर आश्चर्य यह कि राजनीतिक दवाव के कारण प्रशासन के उच्चाधिकारियों ने न केवल इसपर पर्दा डालने का प्रयास किया बल्कि मुख्य अभियुक्त जनक सिंह को आज भी नकसौंदा गांव का सरपंच बनाए बैठा है। राज्य सरकार भी दलित उत्पीड़न के इस गंभीर मामले में आंखें मूंद बैठी हैं।

मन्थेड़ा में एक अगस्त की काली रात को तीन छोटे-छोटे बच्चे की माँ दलित महिला और उसकी बहन को पूरे समाज के समक्ष जिस प्रकार निर्वस्त्र कर गांव में घुमाया गया वह बर्बरता की हद को पार कर गया और सभ्य समाज के मुंह पर एक तमाचा है। उस दौरान इन औरतों के आंसूओं से पूरी रात सिसकती रही। प्राथमिक दर्ज कराने गयी पीड़ित महिला को सहानुभूति के बदले फटकार और गंभीर मामलों में फंसाने की धमकी दी गयी।

कुछ माह पूर्व हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला स्थित कठिमाला गांव की दलित महिला शकीनो देवी की हत्या की गई। हत्या के पूर्व महिला को गांव से बाहर नंगा कर पेड़ से बांधकर हृदय विदारक पीड़ाएं दी गईं। फिर उसके शव को पट्रोल डालकर सबूत मिटाने के लिए जलाने का प्रयास किया गया। यह सब महिला के सात-वर्षीय पुत्र के सामने किया गया।

एक ताजी घटना दरभंगा जिले के कुशेश्वर थाना क्षेत्र के सनहौली गांव की है जहाँ पाँच दर्जन सशस्त्र डकैतों ने अचानक हमला बोल 42 घरों में लूटपाट की तथा डेढ़ दर्जन दलित युवतियों से कुकृत्य भी किए। दरिन्दों ने परिवारवालों के सामने इनकी इज्जत लूट ली। लोकलाज के भय से न केवल इन लड़कियों ने आत्महत्या करने का प्रयास किया बल्कि उसके माँ-बाप गांव छोड़कर कहीं चले गए लोकलाज वश।

इसी प्रकार उ.प्र. के सिकता गांव में भरत नामक दलित के प्रधान होने पर उसी गांव के एक सांसद के नाराज होने के कारण समूची दलित बस्ती को आक्रोश झेलना पड़ा। 41 दलितों के घर जला दिए गए।

उत्तर प्रदेश की मायात्यागी की तरह दलित महिला भुखला देवी को नंगा कर घुमाने की घटना बिहार में हरिजन उत्पीड़न की कोई आखिरी घटना नहीं है। दलित उत्पीड़न को आज भी पुलिस प्रशासन

गंभीरता से नहीं लेता है। सारे राज्य में हरिजन थाने का बोर्ड टांगकर प्रशासन ने सिर्फ औपचारिकता की भूमिका निभाई है। आज भी हरिजनों की सुरक्षा और उसका सम्मान भराग्य भरोसे है।

इसी प्रकार समस्तीपुर के सिंधिया खुर्द तथा ताजपुर गांव में गांव के बाहर खेत में शौच के लिए गई हरिजन महिला निर्मला देवी तथा उसकी नाबालिग भतीजी मंजु के साथ खेत में और रामसेवक पासवान की पत्नी सुरजी देवी के साथ उसके घर में बलात्कार किया गया। दरभंगा के बसबिरया गांव में भूमि विवाद को लेकर स्थानीय भूपतियों ने घर में बंद कर आग लगा दी। मगध मेडिकल थाना क्षेत्र के अन्तर्गत नीमा गांव के मुशहर टोली दीनदयाल नगर में तीन मुशहर महिलाओं के साथ उसके मुंह में कपड़ा ठूंसकर बलात्कार किया गया। बिहार में महिला मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के कार्यकाल में भी हरिजन महिलाएं अपनी नियति के चक्र से नहीं निकल पा रही हैं।

राजस्थान राज्य में दौसा जिले के मानपुर थानान्तर्गत ठीकरिया गांव के सरकारी स्कूल में गत स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर हरिजन कार्यवाहक महिला सरपंच श्रीमती मिश्री देवी को न केवल ध्वजारोहन नहीं करने दिया गया बल्कि पुलिस की मौजूदगी में इस अनुसूचित जाति की महिला सरपंच को निर्वस्त्र कर मारा-पीटा गया तथा बच्चों के लिए आई मिठाई को फेंक दियां गया। यह घटना हमारे लोकतन्त्र पर एक काला धब्बा तो है है ही साथ ही अपमान है उन तमाम स्वतन्त्रता सेनानियों और उनके आदर्शों का जिन्होंने भारत में एक समतामूलक समाज की स्थापना का सपना देखा था।

विगत 17-18 अगस्त की रात्रि करीब साढ़े ग्यारह बजे पांच अपराधी बिहार के गया जिले के बांके बाजार थाने की तिलैया ग्राम निवासी लल्लन पासवान की नवविवाहिता पत्नी रशा देवी को बलपूर्वक उसके घर से उठाकर ले गए तथा चण्डी स्थान के निकट एक सुनसान स्थान पर उसे ले जाकर सभी अपराधियों ने कई घंटे तक उसके साथ बारी-बारी से बलात्कार किया तथा सुबह पो फूटने के पूर्व अपराधियों ने उसे उसी हाल में वहीं छोड़ दिया तथा स्वयं कार से फरार हो गए।

छपरा (बिहार) के ग्राम-ब्रह्मपुरवा के जितेन्द्र महतो की शोषित नव विवाहित पत्नी रीता देवी के साथ छपरा अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा अस्पताल के महिला वार्ड सं. 29 में रखकर लगातार जो दुष्कर्म एवं दुर्व्यवहार किया गया वह बिहार के सामाजिक-राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था की नग्नता को उदघाटित करनेवाली एक दर्दनाक दलित महिला उत्पीड़न के अन्तहीन सिलसिला को उजागर करता है।

मध्य प्रदेश की झबुआ जिले के एक आदिवासी नवापुरा मंडारिया गांव के एक स्कूल-अस्पताल में कार्य कर रही चार ननों के साथ सामूहिक बलात्कार की घटना उस समाज के मुंह पर करारा तमाचा है जिसकी सेवा में जी-जान से वे जुटी रहती हैं। समाज इस बात को अनुभव क्यों नहीं कर पाता कि बलात्कार से न केवल उसकी शारीरिक यातना भर नहीं बल्कि उसके दिमाग व आत्मा के साथ भी बलात्कार होता है जिससे वह जीवन भर तिल-तिल कर जलती है।

इन सारीं घटनाओं की चर्चा कर केवल यह बताने का प्रयास किया गया है कि आजादी के 50 साल बाद भी उंच-नींच के सिद्धान्त पर आधारित हमारी सामाजिक संरचना ही इसका एक मात्र कारण है। राजनीतिक रूप से लोकतन्त्र अपनाने के बाद भी सामाजिक-व्यावहारिक के स्तर पर इसे ले जाने में हम असफल रहे। क्योंकि राजनीतिक लोकतन्त्र तो विकसित होता गया पर समाज का ताना-बाना सामंती ही बना रहा। यह उंच-नीच की भावना पर आधारित है, यह समझदारी लोकतन्त्र के विरूद्ध है। वे लोकतन्त्र की राह में खाई खोद रहे हैं जिसमें वे एक दिन स्वयं ही गिर जाएंगे। उनकी नजर में दलित अभी भी पशुवत हैं जिनकी नियति चुपचाप अपने शोषण को झेलते रहने की है। मगर अब प्रश्न उठता है कि इन घटनाओं की पुनरावृति को रोकने के लिए व्यवस्था या समाज तैयार है या नहीं ? नहीं तो विकसित समाज के क्रमिक आरोहण के पथचिन्हों को मिटानेवाली साजिशों को कैसे रोका जा सकेगा।

तीसरे विकल्प की तलाश

कार्यालय प्रतिनिधि

देश अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। एक दल के शासन का दौर समाप्त हो गया है। आनेवाले समय में नजर नहीं आता कि कोई एक दल बहुमत में आकर सत्ता पर काबिज हो सकेगा। केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व वाली गठबन्धन सरकार आसमान छूती महंगाई एवं बेरोजगारी को रोकने में सक्षम नहीं हो पा रही है। उदारीकरण की नीति से देश बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चुंगल में फंसता जा रहा है। स्वदेशी का नारा ढकोसला बन कर रह गया है। अठारह दलों का गठबन्धन अस्थिरता के कगार पर खड़ा होकर शासन चलाने की कोशिश कर रहा है। रोज ही कोई न कोई सहयोगी दल भाजपा नेतृत्व के लिए परेशानी खड़ी कर देता है। समझौतावाद की बैसाखियों पर कबतक यह सरकार टिकी रह सकती है ?

स्वतंत्रता के बाद जिस तरह कांग्रेस की सत्ता-संस्कृति विकसित हुई उससे दलित, पिछड़े एवं अल्पसंख्यक को केवल वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया गया एवं मूल प्रकृति में सवर्ण संस्कृति और सांप्रदायिक सोच का पोषण हुआ।

कांग्रेस को इधर कई वर्षों में सत्ता से बाहर रहकर देश की जनता के सवालों पर सोचने तथा कुछ कारगर ढंग से सत्ता पर बैठे हुकमरानों को सोचने के लिए बाध्य करने का जो अवसर मिला, उसका उपयोग वह नहीं कर पाई। मात्र पके आम गोद में गिरने का वह इंतजार कर रही है। तात्पर्य यह कि उसके द्वारा कुछ एस कार्य नहीं हुए जिससे जनता फिर से उसकी ओर आकृष्ट हो। इसलिए विचारधारा के आधार पर तीसरे विकल्प की तलाश होने लगी है।

राजनीति में आज जो शक्ति संघर्ष मचा हुआ है स्पष्ट तौर पर वह कांग्रेस और भाजपा दो ध्रुवों की तरफ बढ़ता जा रहा है और इस बीच सामाजिक न्याय वाली शक्तियाँ तथा समाजवादी विचारधारा की ताकतें तितर-बितर हो रही हैं। उनका वजूद मिटता चला जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चे की पटना तथा लखनऊ की रैली यह संकेत अवश्य देती है कि उत्तर भारत में भाजपा के विरूद्ध रालोमो एक बड़ी राजनीतिक ताकत बनकर उभर सकता है। इधर जबसे केन्द्र की भाजपा गठबन्धन सरकार का बिहार में संविधान के अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन लागू करने का प्रयास विफल हुआ है वामपंथी पार्टियों सहित सभी-विपक्षी दलों ने तीसरे विकल्प को तलाशना प्रारम्भ कर दिया हैं। लालू प्रसाद यादव को छोड़कर माकपा की 16वीं कांग्रेस ने भी तीसरे विकल्प के लिए आह्वान किया है पर लालू को छोड़ मुलायम को इसमें शामिल करने की बात कही गयी है। ऐसी स्थिति में सामाजिक न्याय की बिखरी हुई शक्तियों को पुनर्मिलन का मौका मिल सकता है। आज से लगभग एक दशक पूर्व जिस मण्डल और अल्पसंख्यक राजनीति को लेकर जनता दल आगे बढ़ा था, वह बिखर गया है और उसके बिखराव से जो शून्यता आई है उसकी काफी कुछ भरपाई ऐसी स्थिति में की जा सकती है।

इधर भाजपा-समता के गठबन्धन पर एक नजर डालने से ऐसा लगता है कि दोनों का वर्गीय चरित्र उसी प्रकार परस्पर विरोधी है जिस प्रकार रालोमो तथा भाजपा का। हाँ कांग्रेस तथा भाजपा का वर्गीय चरित्र एक-सा अवश्य दिखाई देता है। इस प्रकार भाजपा नीत केन्द्र की सरकार यदि आवाम और निम्न-मध्य वर्गीय जनता को राहत नहीं पहुंचाई, सत्ता एवं संगठन में दलितों, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों को प्रभावी भागीदारी न दे पाई तो उसका जनाधार खिसक सकता है। अकेली समता पार्टी इस स्थिति में नहीं रह पाएगी कि वह पिछड़ों एवं दलितों के एक खास हिस्से के भाजपा रूझान को बरकरार रख सके। हाँ, जनता दल यदि अपनी खोई शक्ति को मजबूत करने में सफल हो और वह भाजपा-समता गठबन्धन के साथ रालोमो को कमजोर करने के लिए कदम बढ़ाए तो बात दीगर है। हालाकि यह भी समता की सोच पर निर्भर करती है कि वह जद को अपनी ओर खींचने में कितना सजग और सफल होती है। किन्तु बिहार में राष्ट्रपति लागू करने के सवाल पर जो नजारा देखने को मिला उससे ऐसी आशा नहीं की जा सकती है। एक ओर पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल के नेतृत्व में एस. जयपाल रेड्डी, बोम्मई आदि नेताओं का राष्ट्रपति से मिलकर केन्द्र की सिफारिश को न मानने की सलाह तथा दूसरी ओर पूर्व रेलमंत्री रामविलास पासवान के नेतृत्व में जद के अन्य नेताओं का राष्ट्रपति से राष्ट्रपति शासन लागू करने के आग्रह से ऐसा प्रतीत होता है कि जद फिर दो फांक हो जाये जिसमें श्री पासवान के साथ जद की बिहार इकाई समता के श्री नीतीश कुमार के साथ कदमताल करें तो कोई आश्चर्य नहीं और ऐसा करना सम्भवतः दोनों के लिए श्रेयष्कर साबित हो। ऐसा इसलिए भी कहा जा रहा है **क्योंकि इधर पिछले दो तीन महीनों की गतिविधियों से ऐसा लगता है रामविलास नीतीश की एकता कुछ रंग लाए। सामाजिक न्याय की शक्तियों की नजर भी खासकर बिहार में नीतीश-रामविलास की एकता पर टिकी है।**

राजनीति में दोस्ती और दुश्मनी कभी स्थाई नहीं होती। स्थायी होते हैं केवल अपने स्वार्थ और अपनी मंजिल। और जब सामाजिक न्याय की शक्तियों की मंजिल समान है तो वे अपने स्वार्थ को भूलाकर मंजिल की तरफ बढ़ सकते हैं। सिद्धान्तों और विचारों की छलनी से छनकर जब कुछ दल एक मन से एक होंगे तभी कोई विकल्प बनेगा और तभी कुछ बात बनेगी। इसके लिए क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों और व्यक्तिगत अहम् को त्यागना होगा। समान विचारधारा के दलों के नेताओं को लेकर ईमानदारी के साथ यदि आगे बढ़ा जाय, तो जनता एक सशक्त विकल्प की तलाश में सहयोग प्रदान करेगी। इस तीसरे विकल्प में कौन-कौन से दल होंगे, कौन इसका नेतृत्व करेगा, केवल यही निर्णय विकल्प देने का प्रयास करने वालों को लेना होगा।

राधेश्याम

अन्नाद्रमुक की अव्वल अम्मा : वाजपेयी सरकार की दुखती रग

रा वि कार्यालय

यों तो पिछले छह माह में केन्द्र सरकार के समक्ष अनेक चुनौतियाँ आई हैं किन्तु अन्नाद्रमुक की अव्वल अम्मा सुश्री जयललिता केन्द्र में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा गठबन्धन की सरकार बनने के समय से ही सरकार के लिए सिर दर्द बनी हुई हैं।

अन्नाद्रमुक और उसके सहयोगी दलों के 27 सांसदों का सहयोग केन्द्र सरकार को प्राप्त है। इनमें से जनता पार्टी के सुब्रह्मण्यम स्वामी पहले ही गठबन्धन सरकार से नाता तोड़कर लोकसभा में विपक्ष की भूमिका अदा कर रहे हैं और पी.एम.के. तथा एम.डी.एम. के आठ सांसद सरकार का बाहर से समर्थन कर रहे हैं। यद्यपि अन्नाद्रमुक सरकार में शामिल है पर जिस उद्देश्य से अन्नाद्रमुक सुप्रीमो सुश्री जयललिता ने प्रारम्भ में ही नौटंकी करने के बाद सरकार में शामिल होने का निर्णय लिया था अब उनका वह मकसद पूरा होता नहीं नजर आ रहा है। **सुश्री जयललिता की प्रबल इच्छा है कि तमिलनाडु में द्रमुक की करुणानिधि सरकार बर्खास्त हो ताकि उन पर चल रहे सारे मुकदमों में शिथिलता तथा नरमी आए और वह और उनके सहयोगी पुनः जेल जाने से बचें।** पर अभी तक उन्हें सफलता नहीं मिल पाई है। इन हालातों में उन्हें सरकार से मोहभंग होना स्वाभाविक है। उनके समक्ष न तो देश अथवा राज्य के मसलें हैं और न तो अपनी पार्टी का भला चाहती हैं। वह तो मात्र अपने धन की सुरक्षा तथा स्वयं पर मडराते तथा जूझते विभिन्न मुकदमों से निजात पाना चाहती हैं जिसमें भाजपा सरकार बहुत बढ़चढ़कर मदद करती नहीं दीख रही है। हालांकि यह भी सच है कि प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अम्मा की हर बात मानी सिवाय दो बातों के। सुब्रह्मण्यम स्वामी को मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं किया तथा 'करुणानिधि सरकार को बर्खास्त नहीं किया। अम्मा को सम्भवतः शिकायत यह है कि रंगीन टी.वी. घोटाले कांड में उच्च न्यायालय ने पहले उनके खिलाफ आरोप तय किए और उनकी 11.5 करोड़ रुपये की चल सम्पत्ति जब्त करने का आदेश भी जारी कर दिया। तो इसमें अटल जी क्या कर सकते थे ? मंत्री, आयकर अधिकारियों और अदालतों में तबादले करवाने में अम्मा को अबतक कोई विशेष लाभ नहीं मिल पाया है।

एक तो स्वयं अम्मा जी केन्द्र की वाजपेयी सरकार की तितलौकी बनी हैं, दूसरे उन्हें सुब्रह्मण्यम स्वामी जैसे खलनायक का नीम जैसा सहारा प्राप्त है जिनको भ्रष्टाचार से नफरत है पर भ्रष्टाचारियों से नहीं। मुझे ऐसा लगता है कि जबतक स्वामी जयललिता के सलाहकार हैं तबतक भाजपा गठबन्धन सरकार की जान सांसत में रहेगी। यों तो अम्मा जी अबतक मान-मनौवल और फिर राजी होने की राजनीति करती आ रही हैं किन्तु हर स्थिति में उनकी नयी-नयी शर्तें एवं बातें जुड़ती जाती हैं।

आपको याद होगा कि जुलाई के मध्य में अन्नाद्रमुक की ओर से तमिलनाडु और कर्नाटक के बीच कावेरी जल बंटवारे पर कावेरी पंच निर्णय के अन्तरिम आदेश लागू करने की शर्त के साथ साथ इन दो राज्यों से गुजरने वाली सभी नदियों का राष्ट्रीयकरण, 67 प्रतिशत आरक्षण लागू करने तथा सभी भारतीय भाषाओं को सरकारी भाषा बनाने की शर्तें आयीं। इसके पूर्व जून'98 में अन्नाद्रमुक पार्टी को भाजपा द्वारा तोड़ने की बात कहकर अम्मा ने झूठ का सहारा लिया। जिस अम्मा के बल पर अन्नाद्रमुक के सांसद मंत्रिमण्डल में आसीन हैं उन्हें तोड़ने का दुस्साहस भला भाजपा कैसे करेगी, इसे आसानी से समझा जा सकता है। अगस्त में अन्नाद्रमुक और उसके सहयोगियों ने पुनः धमकी दी कि यदि वाजपेयी सरकार ने 12 अगस्त तक कावेरी जल विवाद पंचाट के अन्तरिम आदेश को लागू करने की योजना के मूल मसौदे को अधिसूचित न किया तो सरकार को समर्थन पर पुनर्विचार किया जाएगा।

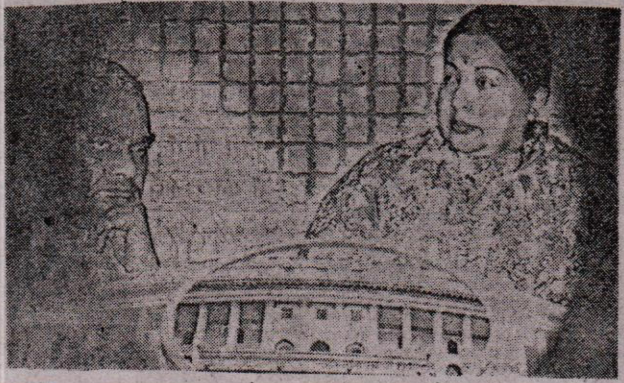

अनेक चुनौतियों से जूझ रही केन्द्र की भाजपा सरकार के लिए अम्मा द्वारा उठाई गई मांगों को शीघ्रता में पूरा कर पाना असंभव तो नहीं पर मुश्किल अवश्य है। यह सच है कि सरकार बचाने के लिए भी हर तरह का गलत-सही काम किया जाता रहा है तथा बेजा मांगों के सामने सरकार को घुटने टेकने के लिए विवश किया जाता रहा है पर यह जितना गलत है उससे कहीं अधिक गलत और जनविरोधी कार्य है चल रही सरकार को गिराने में रहकर। पिछले बजट सत्र के दौरान इसी षड्यंत्र के तहत अन्नाद्रमुक के सांसदों ने करुणानिधि सरकार को गिराने के लिए लोकसभा का लगातार बहिष्कार किया।

एक ओर अम्मा जी की इन हरकतों पर यदि गौर करें तो आपको लगेगा कि जयललिता ने रूठने और मुंह फुलाने को राजनीति का धारदार हथियार बना लिया है। दूसरी ओर अटल जी की कार्रवाइयों पर नजर डालने पर ऐसा लगता है कि वे भी रूठे हुए को मनाने में माहिर हो चुके हैं। एक अविवाहिता तो दूसरे भी अविवाहित। भला इन्हें रूठने और मनाने का खासा अनुभव कहां से आया, शोध का विषय है।

इसमें सन्देह नहीं कि अपने राजनीतिक स्वार्थों को साधने के चक्कर में जयललिता वाजपेयी सरकार के लिए असुविधाजनक स्थितियाँ पैदा कर रही हैं क्रम-से-कम प्रत्यक्ष तौर पर तो यह दृष्टिगोचर होता है किन्तु इसके लिए मात्र जयललिता को जिम्मेदार ठहराना सर्वथा उचित नहीं जान पड़ता। क्या अटल जी को यह पता नहीं था कि जयललिता अपने समर्थन की कीमत सूद समेत वसूल करेंगी ?

केन्द्र में भाजपा की गठबन्धन सरकार जिस विषाद राजनैतिक धौंसपट्टी से घिरी है, उसका अंजाम क्या होगा, यह तो आनेवाला समय ही बताएगा, बहरहाल इतना अवश्य कहा जा सकता है कि यदि अटल जी को अपनी तथा अपनी पार्टी की छवि बनाए रखना है तो सरकार को चुस्त करना होगा, आसमान छूती महंगाई को देखते हुए आर्थिक समस्या से निबटने के लिए अटल जी को अपनी क्षमता का परिचय देना होगा। **सरकार के पास भले ही कुछ करने की दृढ़ इच्छा शक्ति हो और प्रधानमंत्री अटल जी में कुशल नेतृत्व देने की छटपटाहट भले ही बाकी हो पर सहयोगी दलों के घृणित रवैए से सरकार विकलांग सी दीखती है और ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे अटल जी अपनी लुंजपुंज सरकार की लाश कन्धे पर लटकाए हुए कुण्ठित अवस्था में बेवजह शासनतन्त्र की उपस्थिति का अहसास दिलाने का असफल प्रयास कर रहे हैं।** कमरतोड़ महंगाई, बढ़ती बेरोजगारी, गिरती विधि-व्यवस्था तथा बढ़ते अपराध, अपहरण की घटनाओं से सरकार की छवि लगातार गिरती चली जा रही है। इधर बिहार की राबड़ी सरकार को गिराने के प्रयास में केन्द्र सरकार को जो मुंह की खानी पड़ी है, उसने सरकार को कहीं का नहीं छोड़ा है। **अगर भाजपा को आगे भी राजनीति करनी है तो उसे सत्ता से चिपके रहने का मोह त्याग कर महामहिम राष्ट्रपति से यह कह देना चाहिए कि 'यह लो अपनी लकुटि कमरिया, बहुत हि नाच नचायो।'**

-सिद्धेश्वर

कांग्रेस पर सोनिया गांधी का बढ़ता शिकंजा

कार्यालय संवाददाता

कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के काम करने का तरीका बताता है कि वे श्रीमती इन्दिरा गांधी की तरह पार्टी के सभी मामलों में अन्तिम फैसला स्वयं करती हैं क्योंकि उनके निर्णय करने के पूर्व किसी को उसकी भनक तक नहीं मिल पाती है। वह जानती हैं कि कांग्रेस को पुनर्गठित करने के बाद ही सफलता हासिल हो सकती है तथा पार्टी की

अक्षमता को दूर किया जा सकता है। इसलिए इन्दिरा जी की शैली पर सर्वप्रथम वह अपनी पार्टी पर पकड़ बनाना चाहती हैं पर वह यह भूल रही हैं कि इन्दिरा जी ने 1970-71 में सिंडिकेट के विरूद्ध जोखिम भरा कदम उठाने का भी संकल्प किया था। **दरअसल नेता भी तभी सफल होता है जब नाजुक घड़ी पर निर्णय ले सकता है। सिर्फ मौके का इंतजार करना नेता का काम नहीं होता** उनके कदम से ऐसा प्रतीत होता है कि आज देश की राजनीति कहाँ जा रही है, इसकी चिंता सोनिया जी को न होकर अपने कांग्रेस साम्राज्य की चिंता ज्यादा है क्योंकि दिन-ब-दिन कांग्रेस के दूसरे और तीसरे दर्जे के अपने प्रतिद्वन्द्वियों को आगे आने का मौका नहीं देना चाहती बल्कि कम्पनी के एक बॉस की तरह कांग्रेस को चलाने में संतुष्ट हैं।

जिस प्रकार सोनिया गांधी ने महाराष्ट्र में राज्यसभा सदस्य के निर्वाचन में क्रास मतदान करने वालों पर लगाम लगाने का प्रयास किया, कांग्रेस उम्मीदवार रामप्रधान की हार को **वरिष्ठ नेता शरद पवार** के हाथों सोनिया की राजनीतिक हार समझे जाने पर पवार के पक्के समर्थक महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष रणजीत देशमुख तथा विधानसभा में कांग्रेस नेता मधुकर राव पिचाड़ का विकेट उड़ा दिया तथा पवार के विरोधी **प्रताव राव भोंसले** को प्रदेश अध्यक्ष पद पर बैठाया गया, वरिष्ठ नेता **प्रणव मुखर्जी** के नहीं चाहने पर भी सोमेन मित्र को हटाकर पं. बंगाल में **अब्दुल गनी खाँ चौधरी** को सोनिया ने पार्टी की कमान सौंप दी, उ.प्र. में **जितेन्द्र प्रसाद** को उपाध्यक्ष पद से हटाया गया था। **नारायण दत्त तिवारी** की जगह दूसरी पंक्ति के एक अल्पसंख्यक नेता **सलमान खुर्शीद** को बैठाया गया, उससे ऐसा लगता है कि सोनिया जी का कांग्रेस संगठन पर धीरे-धीरे शिकंजा बढ़ता जा रहा है। इसी प्रकार हिमाचल प्रदेश, बिहार और तमिलनाडु में भी ऐसे लोगों के हाथों में राज्यों के कमान सौंपे गए हैं जो पारम्परिक रूप से न केवल कांग्रेसी रहे हैं वरन प्रदेशों में कांग्रेस की जड़ों को अच्छी तरह पहचानते हैं। बिहार में **सदानन्द सिंह को प्रदेश अध्यक्ष पद पर बैठाकर सोनिया जी सम्भवतः पिछड़ों में एक दबंग तथा राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के कट्टर विरोधी तथा उनकी हर चुनौती का डटकर सामना कर रही कुर्मी जाति को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहती हैं और समता पार्टी के वोट बैंक में सेंध लगाना चाहती हैं।** यही नहीं भाजपा-समता तथा जद से निराश तथा केसरी तारिक के विरोधी बिहार के पूर्व मुख्य मंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र को कांग्रेस में वापसी की दिशा सदानन्द सिंह से मिल सकती है क्योंकि इनके सम्बन्ध डॉ. मिश्र से अच्छे रहे हैं पर कुर्मी जाति के मतदाता कांग्रेस की ओर मुड़ जाएंगे, इसके आसार कम नजर आते हैं। इस प्रकार श्रीमती सोनिया गांधी ने अभी तक आन्ध्र प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, पं. बंगाल, दिल्ली, पंजाब, उ.प्र., जम्मु कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा महाराष्ट्र में सीताराम केसरी के पसन्द के कांग्रेस अध्यक्षों के स्थान पर अपनी पसन्द के अध्यक्ष को मनोनीत कर केसरी तथा पवार को दरकिनार करने का प्रयास किया है। बाकी बचे गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक, म.प्र. तथा असम आदि प्रदेशों में या तो उनके वफादार अध्यक्ष हैं या उन्हें शीघ्र बदले जाने की आशा की जा सकती है। कांग्रेस के विश्वस्त सूत्रों के अनुसार प्रदेश कांग्रेस पर पकड़ मजबूत हो जाने के बाद कांग्रेस कार्य समिति तथा महासमिति के पदाधिकारियों में भी अपनी पसन्द के अनुरूप परिवर्तन करना सोनिया जी चाहेंगी। संगठनात्मक फेरबदल के जरिए श्रीमती गांधी-पार्टी को पूरी तरह अपनी और अपने प्रति समर्पित कांग्रेस बनाना चाहती हैं।

सोनिया जी के शाही रवैया से यही प्रतीत होता है कि कांग्रेस के सभी दिग्गज नेता उन्हें महारानी मानें तभी पत्ते खेलेंगी। आपने देखा नहीं विगत लोकसभा चुनाव में कमाल करने के सौ दिन के भीतर ही वरिष्ठ कांग्रेसी नेता शरद पवार के पर काटे गए। यही नहीं मराठा छत्रप और लोकसभा में कांग्रेस के नेता शरद पवार में संगठन कौशल तथा राजनीतिक जनाधार होते हुए भी कांग्रेस संसदीय दल के नेता के पद पर उन्हें न बैठाकर सोनिया जी स्वयं बैठ गयीं ताकि कांग्रेस की सरकार बनने की दशा में संसदीय दल के नेता होने के नाते प्रधानमंत्री के पद के दावेदार सोनिया जी हो सकें।

पवार के मनसूबों को चकनाचूर करने के लिए सोनिया गांधी ने एक बार फिर लामबंदी तेज कर दी है। **हालांकि यह सच है कि शरद पवार को नाराज कर कांग्रेस की नाव किनारे लगेगी, इसमें सन्देह है क्योंकि वे काफी जनाधार वाले तथा प्रतिभाशाली नेता हैं। उनकी प्रतिभा और क्षमता को सोनियां जी नजर अंदाज कर रही हैं।** यह सोचना गलत होगा कि शरद पवार इतनी आसानी से हालात से समझौता कर लेंगे। आखिर वह भी तो महाराष्ट्र में अपना वर्चस्व बनाए रखकर ही केन्द्र की राजनीति में भी महत्वपूर्ण हैसियत बनाए रख सकते हैं। अतएव कांग्रेस की सेहत के लिए अच्छा तो तब होगा जब शरद पवार के समर्थकों को भी उचित महत्व और सम्मान दिया जाय ताकि पार्टी सही मायने में मजबूती प्राप्त कर सके अन्यथा यदि गुटबाजी तेज हुई तो पार्टी का नुकसान ही होगा। वैसे भी सोनिया जी से पवार की ताकत हर मायने में अधिक मानी जाएगी। इसलिए यदि सोनिया जी इसी तरह जोड़तोड़ की राजनीति कर पके आम अपनी गोद में गिरने का इंतजार करती रहीं तो पवार आगे भी जबावी वार करने से बाज नहीं आएंगे क्योंकि वे हार मानने वाले नेता नहीं हैं। पवार सोनिया जी के मिथक तोड़ने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। **यह बात सच है कि जब हड़बड़ी में काम करने वाले धैर्य की राजनीति करते हैं तो वे ज्यादा खतरनाक हो जाते हैं। इसलिए पवार की ताकत को कम करके आंकना सोनियाजी के लिए महंगा पड़ सकता है।**

क्षेत्रीय दलों की दरकती दीवारें

❒ सिद्धेश्वर

क्षेत्रीय दलों का अविर्भाव क्षेत्रीय अस्मिता की रक्षा तथा क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के पोषण के लिए हुआ था, इसे एक वैकल्पिक राजनीति के रूप में देखा जा रहा था और यह उम्मीद की जा रही थी कि इससे क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने और उसकी प्रगति में सहायता मिलेगी। किन्तु विगत एक दशक से क्षेत्रीय राजनीति एवं उसके नेताओं के जो राजनीतिक आचरण रहे हैं उससे तो मात्र क्षेत्रीय राजनीति के लोकतन्त्र विरोधी रूझान ही प्रतिबिम्बित हुए है। उससे न तो किसी खास राजनीतिक दर्शन का विकास करते नजर आया और न ही क्षेत्रीय अस्मिता की रक्षा हो पाई। बल्कि सच कहा जाय तो भारतीय राजनीति का विखण्डीकरण ही हुआ है। आज क्षेत्रीय दलों की स्थिति यह है कि उनकी संरचना में अब लोकतान्त्रिकता के तत्व नहीं दिखाई देते। एक क्षेत्रीय दल किसी राज्य या केन्द्र में सत्तासीन दूसरी पार्टियों को उखाड़ फेंकने के लिए अपनी संवैधानिक शक्तियों का दुरुपयोग करने पर अमादा है इस हद तक कि इसके चलते केन्द्र की सरकार भी गिर सकती है।

प्रारम्भ में एम.जी. रामचन्द्रन तथा एन.टी. रामाराव जैसे नेताओं ने क्रमशः तामिलनाडु तथा आन्ध्रप्रदेश में द्रमुक एवं तेलगुदेशम पार्टियों के सहारे कुछ लोकलुभावन तथा सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने के ख्याल से अपने प्रदेशों में कुछ विशेष योजनाएं प्रारम्भ की किन्तु जिस उत्साह से वे कार्यक्रम शुरू किए गए उसी उत्साह से उन्हें विदा भी कर दिया गया। आन्ध्र प्रदेश में दो रु. किलो गेहूँ, चावल, बिहार में आधी कीमत में धोती-साड़ी तथा हरियाणा में शराब बन्दी का जो हश्र हुआ, उससे आप सभी अवगत हैं।

आज की तारीख में स्थिति यह है कि क्षेत्रीय दलों का विकास सामंती सत्ताओं के रूप में उभर रहा है। उसका नेतृत्व तानाशाही पर उतर आया है। चाहे महाराष्ट्र में शिवसेना के बालठाकरे हों या तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक की सुप्रीमो सुश्री जयललिता, बिहार में राजद के लालू प्रसाद हों या समाजवादी पार्टी के मुखिया मुलायम सिंह यादव, समता के जार्ज फर्नान्डिस, नीतीश कुमार हों या अकाली दल के सुरजीत सिंह बरनाला सभी एक ही रंग में रंगे हैं। इन नेताओं के खिलाफ उनके दल का कोई भी नेता या कार्यकर्ता अपने शीर्ष पर बैठे नेताओं के सुर में सुर नहीं मिला पाएं या उनके विचारों से असहमति जताने का कभी भी साहस बटोरा तो वे उनकी आँख पर चढ़ गए। फिर उसका खामियाजा तो उन्हीं को कभी न कभी भुगतना ही है। असमगण परिषद के महंथी, आन्ध्र प्रदेश में तेदेपा के चन्द्रबाबू नायडू की भी कमोबेश वही स्थिति है।

लोकतन्त्र यदि हमारे राजनीतिक ढाँचे में विकसित नहीं हो पाता तो समाज में उसका विकास भी उन्मुक्त नहीं हो सकता। सामंती इच्छाओं के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय दल लोकतन्त्र के विकास को कुंठित करने वाला ही सिद्ध हो रहा है ? क्या यह सही नहीं कि आज के प्रायः सभी क्षेत्रीय दलों के नेताओं के विचार ही दल के विचार नहीं होते ? उसके अपनी पसन्दगी-नापसन्दगी के आधार पर ही सारे फैसले करता दिखाई दे रहा है जो अन्ततः अलोकतान्त्रिक केन्द्रीकरण को प्रोत्साहित कर रहा है।

गत दो दशक में विकास के फल चखने के साथ ही साथ क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएं तेजी से बढ़ी हैं। केन्द्र और राज्यों में जबतक कांग्रेस की सरकारें होती थीं तबतक दोनों में टकराव की संभावनाएं कम रहती थीं। लेकिन केन्द्रीय स्तर पर जब सरकारें क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संतुष्ट करने में धीरे-धीरे अक्षम होने लगी तो क्षेत्रीय ताकतों ने अपनी अलग पहचान बनानी शुरू की। क्षेत्रीय ताकतों के उभार के इस वर्तमान दौर में सभी राष्ट्रीय दल इनसे किसी न किसी तरह सामंजस्य स्थापित करने में लगी हैं। कांग्रेस हो या भाजपा, जद हो या वामपंथी दल इनका भी राष्ट्रीय स्वरूप धीरे-धीरे सिमटता चला गया। इनकी भी राष्ट्रीय अपील धूमिल होती जा रही है। आज देश में एक दलीय शासन की सीमाएं सिकुड़ती चली जा रही हैं। सिद्धान्त और नीतियों में लगातार गिरावट आती जा रही है। अवसरवादी शक्तियाँ सिर उठाने से बाज नहीं आती। इससे दल टूटने-बिखरने लगे हैं। यह स्थिति नीतियों और सिद्धान्तों में मतभेद के कारण नहीं बल्कि व्यक्तिगत स्वार्थों को लेकर है। इसी के कारण क्षेत्रीय दलों की बाढ़ सी आ गयी। फलतः राष्ट्रीय हैसियत वाली कोई भी ऐसी पार्टी नहीं बची जो कांग्रेस के टूटने से रिक्त हुई जगह को भर सके। इसलिए राष्ट्रीय राजनीति निश्चित तौर पर साझा सरकार की ओर उन्मुख हो गयी। पर उसका भी हश्र जो हो रहा है वह किसी से छिपी नहीं। आज स्थिति यह हो गयी है कि विभिन्न दलों की प्राथमिकता सूची में देश और जनता के हितों का स्थान सिर्फ उनके नेताओं के व्यक्तिगत हितों ने ले रखा है। क्या यह सही नहीं कि अन्नाद्रमुक की सुप्रीमो सुश्री जयललिता येन केन प्रकारेण तथा किसी भी कीमत में केन्द्र की भाजपा गठबन्धन सरकार पर लगातार यह दबाव बना रही है ताकि उनके विरूद्ध सभी मामलें या तो उठा लिए जायं या फिर आरोप से वे मुक्त हो जायं। ठीक इसी प्रकार राजद के अध्यक्ष इस फिराक में हैं कि केन्द्र में उनके सहयोग से ऐसी सरकार आ जाए जिसमें पशुचारा घोटालों से उन्हें मुक्ति मिले। **विडम्बना यह है कि व्यवहारिक राजनीति के नाम पर अक्सर तयशुदा मूल्यों की अवहेलना की गुजांइश खोज ली जाती है। दूसरी बात यह है कि एक ही विचारधारा से जुड़े नेता आपसी मतभेद दूर नहीं कर पाते और जरा-सी राजनीतिक मतभेद प्रारम्भ होते ही नया दल बना लेते हैं।** नेताओं में अहम भाव इतना प्रबल है कि वे एक दूसरे को अपने से कद में छोटा समझते हैं या फिर अपने सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं को बन्धुआ मजदूर समझ बैठते हैं। आज प्रायः प्रत्येक दल में ऐसी घटनाएं देखी जा रही हैं। जद से टूटकर राजद, सपा से हटकर बिहार विकास पार्टी, समता से अलग होकर राजपा, सी.पी.आई से अलग होने पर कुछ विधायकों द्वारा क्रान्तिकारी मंच बनाना इसके ताजा उदाहरण है। इसी प्रकार पिछले दो-तीन माह पूर्व बिहार में राष्ट्रपति शासन लगाने के सवाल पर समता पार्टी में जो भूचाल आया वह नेताओं के अहम भाव का ही द्योतक कहा जाएगा। वह भूचाल अभी मात्र थम्म-सा गया है, भीतर की आग बुझी नहीं है।

इस प्रकार राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय दलों के टुकड़े होना हमारे इतिहास की देन है। अतएव **आज जरूरत इस बात की है कि क्षेत्रीय एवं जातीय राजनीति को विचारधारा की राजनीति में बदला जाय। समाजवादी विचारधारा के आधार पर कांग्रेस व भाजपा का विकल्प तैयार किया जाय।**

इतिहास अंधेरों का

❐ वीणा जैन

नाम ढोती है जिन्दगी
जीने की बेवसी में,
और, लिखती है
इतिहास अंधेरों का-
सदी-सदी,
चलो, वहाँ एक दीप जला दें ।

पकती रोटी की महक को
तरसती है, जिन्दगी
थक जाती है, हथेलियाँ
भूख से-
बिलखते लाड़लों को थपकाते ।
चलो; वहाँ-
जीवन की सरगम सुना दें ।

अनपढ़, बेजुबान, दलित-
रहते हैं, गंदी बस्तियों में
नाचती है-
गरीबी; नंगा नाच जहाँ ।
चलो
उन्हें भी गले से लगा लें ।

महलों के जगमगाते कंगूरों से
दीयों की लम्बी कतारों से-
एक दीया उठाकर
उनके नाम लिख दें
जो जीते हैं, उम्र भर अभावों में
मरते हैं जो अंधेरों में ।
चलों उन्हें भी
उनका हक दिला दें ।

संपर्क : 29/10, बालीगंज पार्क, देवकुंज
तीसरी मंजिल, कलकत्ता-19 (प. बंगाल)

याचना

❐ डॉ. वीरेन्द्र कुमार वसु

ईश्वर के सम्मुख जाने पर
सब लोग याचना करते हैं,
और मांगते हैं वे चीजें,
जिनका अभाव रहता है, उनके
जीवन में,
धन-दौलत, मान-प्रतिष्ठा,
ऊँचे पद, आलीशान मकान,
बंगला, मोटरकार और
राजनीतिक ओहदा,
ये ही चाहतें हैं सब
उस कृपालु ईश्वर से,
लेकिन-
उसी ईश्वर से
क्यों नहीं याचना करते सब,
कि ईश्वर दे उन्हें
सद्धर्म, ईमान, मानवता,
परोपकारिता, दया करुणा, माया, ममता
और सच्चरित्रता के भाव, मन में,
क्यों नहीं मांगते सब
सत्य, प्रेम और अहिंसा के भाव
जिनकी पूर्ति से
प्रशस्त हो जीवन के सत्यमार्ग !

संपर्क : एल.के. कॉलेज
सीतामढ़ी (बिहार)

पाँच हाइकु

❐ डॉ. भगवतशरण अग्रवाल

1. *कुतर रहे*
देश का संविधान
पक्षों के चूहे ।

2. *पाँच थे तो क्या ?*
बचा सके एक भी
द्रुपदपुत्री ।

3. *अंधी ममता*
शत पुत्र खा गई
कुरूक्षेत्र में ।

4. *संभव नहीं*
जहाँ से चले वहीं
लौट के आना ।

5. *शाम की मुग्धा*
प्रात: सातयौवना
गंध, पराग ।

संपर्क : पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, सत्यम् 396, सरस्वती नगर, आजाद सोसाइटी के पास, अहमदाबाद-380015

कवि बेचारा नहीं होता

❐ डॉ. बच्चन पाठक 'सलिल'

मैं कवि हूँ, पर बेचारा नहीं हूँ
शाकाहारी हूँ
पर किसी का चारा नहीं हूँ
मैं नहीं हूँ वह भेड़िया, जो-
सौन्दर्य के प्रतीक मृग-शावक के प्राण हरता है,
मैं वह मृग छौना भी नहीं हूँ,
जो किसी हिंस्र का आहार बनता है ।
मैं नहीं हूँ भालू या वन्दर
जिसे पकड़कर सर्कस में नचाया जाए,
मैं नहीं हूँ वह सुदर्शन तोता,
जिसे स्वर्ण पिंजर में रख चाहे जो रटाया जाए ।
मैं हूँ कवि, युग का चारण
मैं सब कुछ जानता हूँ
मोहन और मारण ।

संपर्क : 'काव्यलोक' गोयल भवन, बिस्टुपुर, जमशेदपुर

स्वर्ण जयंती

❒ विद्या सागर जोशी

आजादी की पचासवीं जयन्ती का उत्सव
यहाँ-वहाँ
महीनों से मनाया गया
विधान-मण्डलों में
गहन विचार मंथन हुआ।
जहाँ देखो
स्वर्ण-जयंती का लेबल लगा हुआ
मीडिया में धूम मची
गुटके से लेकर रेवड़ी तक से
स्वर्ण जयंती नहीं बची।
देश ने बड़ी दूरी पार की
सरकार ने भी
केंचुली उतार दी
इस खुशी में
हम नगरवासी भी
पीछे नहीं रहे।
अपने इलाके की
पचास सालों की उपलब्धियों पर
हमने भी स्वर्ण-जयंती के
नाम-पट्ट लगा दिए-जैसे
स्वर्ण-जयंती टूटी सड़क
स्वर्ण-जयंती खाई गड्ढा
स्वर्ण-जयंती सड़ता कचरा
स्वर्ण-जयंती गन्दा नाला,
स्वर्ण-जयंती पानी काला,
स्वर्ण-जयंती सूखा नल,
स्वर्ण-जयंती दुर्घटना-स्थल,
इस प्रकार आजादी की स्वर्ण-जयंती
हमारी बस्ती में भी
पूरी मस्ती में हिट हुई।
हमें गर्व है कि हमारी ऐसी
हर उपलब्धि अमिट है।
हम इन्हें कभी नहीं भुला सकते हैं।
लेकिन फिलहाल तो सिर्फ
परमाणु धमाकों से
अपनी छाती फुला सकते हैं।
यही नहीं, पेट में पत्थर बांधे
अपने दोस्त के साथ
दुनियाँ को हिला सकते हैं।

सम्पर्क : ई.-7/एल.ए.-318
अरेरा कॉलोनी-भोपाल (म.प्र.)-462016

ग़ज़ल

❒ मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'

दूर जिनसे दूरदर्शन, दूर है आकाशवाणी।
है उन्हीं के पास चलकर कुछ ग़ज़ल अपनी सुनानी॥

रो रहा है गाँव दुख से, कह रहा अपनी कहानी।
अनसुनी आवाज, सुख से सो रही है राजधानी॥

आँख में बरसात कितनी और दिल कितना सुलगता।
काश! कोई रुक-ठहर कर देखता यह आग-पानी॥

खार हम-तुम बाँट लेंगे, रात काली काट लेंगे।
चाँदनी उनके लिए, उनके लिए है रातरानी॥

आप तो हुशियार बाजी हार कर भी जीत बैठे।
और वह लाचार जिसने जीतकर भी हार मानी॥

मीत कुछ नवगीत कहते, मीत कुछ जनगीत कहते।
गीत को मैं गीत कहता हूँ खुदा की मेहरबानी॥

जा रहा जो छोड़ जायें याद कुछ, अपनी निशानी।
आ रहा जो जिन्दगी को दे जवानी, दे रवानी॥

संपर्क : 6/209, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना-20

ग़ज़ल

❒ जोगेश्वर जख्मी

काटों के बिछावन पर गुलशन का ख्वाब
आ नहीं सकता कभी भूले से भी ख्वाब।
बालू के घरौंदो में गुजारी तमाम उम्र,
क्या होगा देखकर नामुमकिन सा ख्वाब।
जो था बताया सब को छुपा नहीं कभी,
खुद नहीं देखा दिखाया भी नहीं ख्वाब।
मिल जाय कहीं, मुझको जन्नत की इक परी सी,
आईना देखा है, देखा नहीं है ख्वाब,
शहरों में इमारत है गरचे कि बहुत सुन्दर,
मुझको भी मयस्सर हो ऐसा नहीं है ख्वाब।
जब भी चला तो हौसला भी साथ में चला,
हार में भी जीत का देखा है मैंने ख्वाब

संपर्क : समता सदन, कटिहार-854105

पाँच तीर-टिकौरे

❒ रामवचन सिंह 'आनंद'

(1)
भूख से तड़पते
इन्सान के रोटी मांगने पर
वे बौखलाये
बुदबुदाये
हरे ! हरे !!
देखता नहीं
चीनी चुगा रहा हूँ
कितनी भूखी हैं
सूखी हैं
बेचारी चीटियां
और बीच में तुम आ टपके,
मुंह बाये !!

(2)
हारे हुए नेताजी,
आन्दोलन चला रहे हैं ?
जब वे मंत्री थे,
कुछ दे न सके जनता को
अब दिला रहे हैं !!

(3)
रेफरी ने कहा,
कायदे से जूझें !
यह 'बाक्सिंग-रिंग है
संसद न बूझें !!

(4)
समाज-सेवा
राजनीति और
साहित्य की
वे सजीव मूर्ति हैं !
जहाँ
दल-संस्था-सम्मेलन
या संगठन में
अध्यक्ष का अभाव हो,
वहाँ वे
रिक्त-स्थान की पूर्ति हैं !!

(5)
आखिर
डाक-विभाग ने
कछुए को
मात दे ही दी है !
यह उपलब्धि
उसने
मात्र डाक-दरों में
वृद्धि कर
प्राप्त कर ली है !!

संपर्क : चक्रधरपुर, जिला-सिंहभूम (पश्चिमी)

सच का उत्ताप

❒ डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद

गाँवों के बीच
एक नगर रहा
अब तो महानगर बन गया,
अचानक उमड़ती सुनहली ईंटों से
अट्टालिकाएँ अकड़ कर खड़ी हो गयीं।
कारों की चमक से
चौराहे के चेहरे चमक उठे
उद्यानों में
क्रिकेट के बॉल चौके लगाते
कुंज में मॉडलिंग
मंच पर फैशन शो
पहाड़ी पर फिल्माने की
कामुक व्यस्तता।
पोस्टरों-विज्ञापनों से
दीवारें सज रहीं
सड़कों पर
नारे और दुर्घटनाएँ
कभी अंधेरा, कभी उजाला
अपराधों के मूक साक्ष्य बने रहते।
एक सुबह
गांवों ने सुना-
कर्ज में डूबा महानगर
अपने आपको
गोरे महाजनों के हाथों सौंप रहा
दूसरे दिन संध्या में
महानगर का एक हिस्सा
विस्फोट से धुआँ-धुआँ हो गया
गांव के लड़के
घायल हो टुकड़ों में लौट सके।
विदेशी मजहबी उग्रवाद ने
महानगर में घुसकर
अपनी ताकत दिखा दी।
गांवों ने सर पीट लिया
क्या नई दिल्ली का स्वागत
साजिशों की लपटों से होगा?
क्या इस सच के उत्ताप को
सिर झुकाकर सहना होगा?

संपर्क : त्रिपाठी भवन, राजेन्द्रनगर
पथसं.-13 ए, पटना-16

क्षणिकाए

सुख

हमारी हुकूमत का
यही है सुख
कि हमारे एक नहीं
कई है मुख
हमने एक ही धागे में
ऐसी माला पिरो दी है
हमी सरकार
हमी तटस्थ
और हमी विरोधी हैं।

सत्य

भूखे फकीर ने
तड़प कर कहा
सत्य की परिभाषा
बहुत छोटी है
केवल एक शब्द
'रोटी' है।

प्रजातंत्र

जब देश में भुखमरी हो
जनता करों से अधमीर हो
देश के नवयुवक नंगे हो
चारो तरफ हड़तालें और दंगे हों।

डॉ. हीरा लाल सहनी

ग़ज़ल

❒ गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव

जंगल में आग किसने लगाई पता करो
पेड़ों की छांव किसने चुराई पता करो।

सरहद के दोनों ओर खड़ी आदमी की जात
बंदूक पहले किसने उठाई पता करो।

अब तो सभी ने थाम लिए अस्त्र हाथ में
नफरत की बात किसने चलाई पता करो।

निर्मल नदी का सीना रंगा लाल खून से
दुल्हन की मांग किसने मिटाई पता करो।

बरगद बबूल मौन हो मातम मना रहे
मरघट की राह किसने दिखाई पता करो।

संपर्क : अपर उप नियंत्रक महालेखा परीक्षक
भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक का कार्यालय
10 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002

प्रणय सूत्र

❒ आशाराम राजपूत

प्रणय सूत्र का चित्र बना दो आज मधुरिमे अपने कर से ।

बहुत बार देखा है सागर
में उठती गिरती लहरों को ।
वायु बदल ही देती जल में
सागर में उठती लहरों को ।।

पर अब ज्वार उमड़ आने दो आज मधुरिमे अपने उर से ।
प्रणय सूत्र का चित्र बना दो आज मधुरिमे अपने कर से ।।

निष्ठुर जग का छोड़ सहारा
केवल तुमको ही अपनाया ।
प्रस्फुटित करने बीज मिलन के
आखों से पानी बरसाया ।।

सिंचन कर दो शुष्क विजन का आज मधुरिमे प्रेम सलिल से ।
प्रणय सूत्र का चित्र बना दो आज मधुरिमे अपने कर से ।

कह न सकोगी निज दुख जग से
सह न सकोगी एकाकीपन ।
आखिर तुमसे कहा इसलिये
मेरा भी तुमसे अपनापन ।।

जग की छोड़ व्यथाएँ, उंगली गह कर अपने कोमल कर से ।
प्रणय सूत्र का चित्र बना दो आज मधुरिमे अपने कर से ।

अब तुम कह दो सिहरन लेकर
घड़ी मिलन की आ जाने दो ।
हंस कर खूब रचेंगे दुनियां
बाहु-पाश में बंध जाने दो ।।

इस विरही की प्रीति पुकारे, तुम्हें मधुरिमे नाजुक उर से
प्रणय सूत्र का चित्र बना दो आज मधुरिमे अपने कर से ।

संपर्क : कृषि उपज मण्डी समिति, पोरसा, जिला-मुरैना (म.प्र.)

नई पीढ़ी

ग़ज़ल

❒ सरोज कुमार

देखा करता हूँ मैं भी सपने कभी-कभी,
पर कच्ची नींद में जगाते हैं अपने कभी-कभी ।
चाहता हूं जिन्दगी की ऊँचाइयों को छू लूँ,
पर रोड़े अटकाते रहे, अपने कभी-कभी ।
बनाता हूँ मनसूबा ब़हारों के साथ जीने का,
पर पतझड़ में ढकेलते हैं अपने कभी-कभी ।
चलता हूँ रास्ते पर धवल वस्त्र पहनकर,
कीचड़ उछालते हैं अपने कभी-कभी
दुनिया को छोड़ मैं खुद को खुद में ही ढूंढ़ता हूं,
पर जिंदगी में, घुसते हैं अपने कभी-कभी ।
ख़ुशियों के साथ मेरा, अपना है वास्ता,
पर दर्द भी देते हैं अपने कभी कभी ।

प्रभु से विनती

❒ पन्नालाल 'प्यासा'

हे प्रभु ! मुझे नेकदिल इंसान बनाना
दीनों की आह सुन सकूं, इतना विनम्र बनाना
आया हूँ तेरे द्वार बनकर भिखारी
स्नेह की भिक्षा देकर भर दो झोली हमारी
जिससे कुछ बांट सकूं इतनी करुणा बरसाना
हे प्रभु ! मुझे नेक दिल इंसान बनाना
पर्वतों से चलता गंगाजल दिल में लिए उफान
जमीं पर आ सींचता है सबका प्राण
जो स्नेह गंगा को दिया वही मुझे भी देना
हे प्रभु ! मुझे भी नेक दिल इंसान बनाना

संपर्क : एच.आर.डी. भवन, महाराजा हाता, कटिरा, आरा

ग़ज़ल

❒ प्रतिभा सिंह

जिस घडी तुमसे अदा रस्म-ए-वफा हो जायगी,
बस उसी लम्हा जमीं ये आसमां हो जायेगी ।

जख्म गहरा है मगर तू जब्त कर लेना ऐ दिल,
आह निकलेगी तो फिर रुसवाइयाँ हो जायेंगी ।

तेरे दामन में सिवा जौके-जफा के कुछ नहीं,
दो ही लफ्जों में तेरी हस्ती बयाँ हो जायेगी ।

गर मुहब्बत यूँ ही तीरे-चुर-सितम बनती रही,
दावा है ये आजकल में बद्दुआ हो जायेगी ।

दिल में सोज-ए-गम छुपाने की तमन्ना थी मगर,
इल्म न था आँख ये पागल घटा हो जायेगी ।

अब अज़ल का थाम लूँ दामन भला इसमें ही है,
क्या खबर कल जिन्दगी से फिर खता हो जायेगी ।

संपर्क : वलीपुर (दुर्गा मंदिर) प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

स्वरूप

❒ मुल्कराज आनन्द

कुम्हारों ने
मिट्टी को रौंदकर
दिया घड़ा का स्वरूप
लगाया ताप और धूप
पंजा मारा तो...
आवाज निकली-
"हम आत्मनिर्भर हैं ।"
"आँखें दिखाओगे ?"
"आँखें दी नहीं,
अपना सूखा शरीर भी सीचेंगे ।"
कर लो मनमानी
दोबारा
हम तुम्हें स्वरूप नहीं देंगे ।
तुम लाचार हो जाओगे ।
फिर मुझे गाड़ोगे ।
और तुम्हारे पेट की आग से हम पकेंगे ।
सोच लो ! अच्छी तरह सोच लो !!
परिस्थिति के चंगुल में हो !!

संपर्क : जान-पहचान संघ, पसराहा, खगड़िया, बिहार

घनश्याम की दो ग़ज़लें

जुल्म जब बेहिसाब होता है
तब कोई इनक्लाब होता है ।

जो मिटाता है जग से अन्धेरा
तो वही आफताब होता है ।

तितलियों की कमी नहीं होती
जिस चमन में गुलाब होता है ।

आपदाओं से जूझनेवाला
शख्स ही कामयाब होता है ।

सिरफिरों के करीब रहने से
वक्त नाहक खराब होता है ।

शांत होती नहीं है उत्सुकता
रुख पे जबतक नकाब होता है ।

प्यार करने से क्या नहीं मिलता
ये हुनर लाजवाब होता है ।

वो जिन्दगी क्या जिन्दगी जो जिन्दगी से दूर है
इक जिन्दगी के वास्ते हर ज़िन्दगी मजबूर है ।

कितने महल ख्वाबों के टूटे जिन्दगी के मोड़ पर
यूं टेटते रहना ही शायद ख्वाब को मंजूर है ।

तुम जिन्दगी के आईने में जिन्दगी को देख लो
एहसास से बढ़कर न कोई जिन्दगी का नूर है ।

कुछ लोग जीते जिन्दगी को जिन्दगी के ढंग से
लेकिन जिसे हम जी रहे वह जिन्दगी नासूर है ।

मांगो ! मिलेगा खाक ? जब फूटी हुई तकदीर हो
दुत्कारती है जिन्दगी और मौत भी मगरूर है ।

यूं ठोकरें खाकर लहू के घूंट पी-पीकर सफर
इस जिन्दगी के काट लेने का अजब दस्तूर है ।

उसने हमारी जिन्दगी को जिन्दगी समझा नहीं
जलता है मेरा आशियां पर वो नशे में चूर है ।

संपर्क : पावर हाउस, लालदरवाजा
मुंगेर-811201

कवि व्यभिचारी चोर

❒ प्रो. डी.आर ब्रह्मचारी

कविता के अर्थ-दोहन में संकेत-ग्रह के सारे आयुध-व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, सिद्ध-पद-सांनिध्य, वाक्यशेष और विकृति-तो फेल हुए ही 'वाक्य पदीय' कंपनी की-'संयोगोविप्रयोगश्च'-सारी औषधियाँ उस समय स्मृति में नहीं आ सकीं। परिणामत: अर्थ-छवि ऐसी कौंधी कि आश्चर्य हुए बिना नहीं रहा जब मैं रेलगाड़ी की यात्रा करते समय एक डब्बे में कई नवयुवतियों का उस दिन वार्त्तालाप सुना।

संयोग ही इसे कहा जाय कि गाड़ी में खचाखच भीड़ होने के कारण किसी प्रकार मैं देह सिकोड़कर उसी डब्बे में खड़ा हो गया जहाँ उन लोगों में हंसी के फव्वारे के बीच जोर-जोर से बातें हो रही थीं। 'चाय गरम चाय गरम, पापड़ भाजा-पापड़ भाजा, काबुली चना-काबुली चना' के कोलाहल में भी एकाग्रचित्त हो मैं उनकी ओर श्रवणाभिमुख रहा। एक युवती ने कहा-कवि, प्रेमी और पागल एक होते हैं। दूसरी ने कहा-

वे गगन को अग्नि-शर से बेधते हैं
और तुम उलझे हुए अलकावलि में

तीसरी ने कहा-

तुम कहते हो मर्द मगर मन के भीतर
यह कलावंत हमसे भी बढ़कर नारी था

चौथी ने कहा-

चरण धरत चिंता करत, नैक्र हुँ नींद न सोर
सुवरण को ढूँढे फिरत, कवि व्यभिचारी चोर

छोटे-छोटे कई बच्चे-बच्चियाँ भी उन्हीं की देखा देखी समवेत स्वर में आवृति पूर्वक कह उठे-कवि व्यभिचारी चोर, कवि व्यभिचारी चोर। ऊदे बादल सदृश, लज्जारक्त मुखी ने तुनक कर कहा-ऊँ हूँ, माँ इन कमवक्तों को मना नहीं करोगी? माँ ने पूछा, क्या हुआ बेटी? शायद वह अन्यमनस्क थी। 'देखती नहीं हो ये मेरा सर खाए जा रहे हैं।' थोड़े अंतराल के बाद एक किशोर कह बैठा-

सुवरण को ढूँढे फिरत कवि व्यभिचारी चोर युवती ने कहा, अब मैं चली जाती हूँ, दूसरे डब्बे में। वह किशोर शायद उसकी भाभी का भाई था। जो उसके पारस्परिक वार्तालाप से ध्वनित हो गया था।

'कवि व्यभिचारी चोर' की आवृति से मेरा मन भी सुवर्ण-स्थान ढूँढने लगा। दीप के प्रकाश में उपमेय और उपमान दोनों उद्भासित हो उठते हैं, एक ही धर्म से शासित होने लगते हैं। चरण धरना, चिंता करना नींद-शोर नहीं भाना तथा सुवर्ण को ढूँढते फिरना कवि महोदय को व्यभिचारी और चोर की पंक्ति में खड़ाकर इन लड़कियों ने असामान्य सिद्ध किया? पहली ने जो कहा था-कवि प्रेमी और पागल एक होते हैं। प्रेमी तो प्रेमी परंतु पागल क्या?

किशोर ने दोहे के उत्तरार्द्ध के दो चरणों-सुवरण को ढूँढे फिरत, कवि व्यभिचारी चोर-को कहकर तप्तकंचन वर्णाभा को यह तो नहीं कहा-कवि का व्यापार सुवर्णाभा को ढूढ़ना होता है। अत: Be ware of Poets अभंग श्लेष का चमत्कार ही विवक्षित था तो वह चरण-चिंता में भी है। पकड़ नहीं पा रहा था कि आखिर बात क्या है?

कवि ही प्रस्तुत और व्यभिचारी तथा चोर अप्रस्तुत क्यों? कवि अप्रस्तुत क्यों नहीं? फिर, यह कलावंत........और तुम उलझे हुए.. ....।' का साहचर्य जो ठहरा। तुम का अभिप्रेत क्या? सभी की सभी युवतियाँ काव्य शास्त्र में निष्णात थीं? क्या प्रमाण?

मन तो निरंकुश होता है ना। बिनुपद चलै, सुनै बिनु काना। पात्रे घृतं वा घृते पात्रम् भी मन के व्यापार के अंतर्गत ही आता है। वस्तु में सौंदर्य या द्रष्टा में? याद हो आई छुटपन की एक कहानी।

एक वृक्ष पर चिड़िया बोल रही थी। नीचे एक साधु निकल रहा था। कहा, चिड़िया कहती है-राम सिया दशरथ! मौलवी जा रहा था। कहा, परिंदा बोलता है-सुभान तेरी कुदरत। कुंजड़नी पास कर रही थी, बोली पंछी बोलता है-नींबू मूली अदरक। पहलवान गुजर रहा था। उसने कहा, पखेरू बोलता है-दंड कुश्ती कसरत।

वहाँ भी चार, यहाँ भी चार। क्या कहा जाय। वहाँ के चारों में जहाँ वैभिन्य था, वहाँ यहाँ के चारों में बहुत कुछ साम्य।

बलात् हटाने पर भी मन कंपास का कांटा बना था। वह जबर्दस्ती भीतर घुसना चाहता था। पता चला कुंदन का रंग फीका करने वाली उस युवती का नाम 'कविता' था। उसके वरण के जिस वर की चर्चा हो रही थी उसका नाम 'कवि शेखर' था। संयोग से महाशय कवि थे भी। कन्या वरयते रूपं।

अभिनेता, अभियंता, अधिवक्ता, चिकित्सक आदि के साथ कार में बैठकर सैर-सपाटा की तमन्ना रखने वाली को भला एक अदना सा कवि कैसे रास आए। तो कवि ऐसा गया गुजरा हो गया कि किसी भी लड़की को वह नहीं रुचा?

अष्टछाप के यशस्वी कवि नंद दास हो गए हैं जिनके विषय में प्रसिद्ध है-

'और कवि गढ़िया नंद दास जड़िया'

निठल्ला जानकर जब घर के लोगों ने ताना देना शुरू किया तो भागे वृदावन की ओर। ऐसा होता है-कविरेक : प्रजापति:।

और भी, कबीर के गीत को सुनकर तड़पते हुए रोगियों को दिलासा देना कहाँ तक संभव है? निश्चय ही साहित्य सर्वसाधारण के लिए जीविकोपार्जन का प्रभावकारी माध्यम नहीं हो सकता।

जब-जब साहित्य को जीविकोपार्जन का माध्यम बनाया गया है, समाज का स्वास्थ्य बिगड़ा है जिसके दंश से आज भी हम पीड़ित हैं। वह चाहे 'पहिलि बदसिम' का साहित्य हो या 'कटि के कंचन काटि विधि का।' किसी प्रकार के नारे का या बुक स्टॉलों पर बंद पैकेट का।

क्या मनुष्य को केवल चारा या भूसा चाहिए, उसके बाद इतिश्री? तो फिर बुद्ध ने खूंटा क्यों तोड़ा? क्या यही हाल चाणक्य, तिलक, गांधी, जयप्रकाश, चन्द्रशेखर या भगत सिंह का नहीं? मार्क्स ने अपने कई बच्चों को दवा-दारू के अभाव में काल-कवलित होते देखा। महावीर प्र. द्विवेदी ने 150/- रुपये की रेलवे ट्रेफिक सुपरिंटेंडेंसी छोड़कर तेईस रुपये की संपादकी की। प्रेमचंद ने भी शिक्षकी का त्याग किया। 'सितारों के आगे जहाँ और भी है।'

'हम शायर है दरोग हमारा काम है।' यही सब सोचकर तुलसी दास ने बेवाक कहा था-कवि न होउँ नहिं चतुर कहावउँ।

हजारी प्र. द्विवेदी ने कविता को महामाया की इच्छाशक्ति कहा है । वाल्मीकि इच्छा शक्ति के समर्थक । व्यास कल्पलोक के निर्माण कर्ता । संपूर्ण कविता में निष्कामता का उद्घोषक 'कवीनामुशना कविः' को कविता अर्जुन अर्थभार से रहित, सत्वार्थ मात्र । कालिदास अव्यवहार्य ।

ज्यों-ज्यों सोचता हूँ मुआमला सुलझने की बजाय उत्तरोत्तर उलझता जा रहा है । आगे उन्होंने लिखा, इच्छाशक्ति कल्पलोक का निर्माण कर सकती है क्रिया शक्ति सृष्ट पदार्थों तक सीमित है । फिर वदतो व्याघात ! क्या इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति का प्रतिलोम है ? कल्प-क्लृप-निर्माण का पर्याय, अत्यंत व्यापक शब्द है । व्यवहार उसके वृत्त से परे नहीं । फिर तो काम मंगल से मंडित श्रेय सर्ग इच्छा का है परिणाम ।' बिना विभाग के अकेले स्थायीभाव क्या रसोद्रेक में सक्षम् हो सकता है ?

कल्पलोक व्यवहार लोक से यदि इतर है तो साम्राज्यवादियों के दमन-चक्र में कवि क्यों पिसा ? उसकी रचनाओं का होलिका दाह क्यों हुआ ?

'है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं । अभी-अभी तसलीमा इसका ताजा उदाहरण है ।

लोहियाजी ने कहा था, जब चारों तरफ से बेझेल हमले हों तो बचाना, थामना, टेक देना शायद ही तुलसी से बढ़कर कोई कर सकता है ।

करने को ज्ञानोद्धत प्रहार
तोड़ने को विषम वज्रद्वार
उमड़े भारत का भ्रम अपार हरने को ।

राम निवास शर्मा ने ठीक ही लिखा है, **जो वीर होते हैं संस्कृति की रक्षा के लिए वीरगति प्राप्त करते हैं । लोलुप सत्ता के पाये बनते हैं तब संस्कृति की रक्षा का भार आता है कवि के कंधे पर । और वह उर्म्मिल जल में निश्चलत्प्राण पर शतदल खिलाता है ।**

रैक्व 'विवाह' की जगह 'उद्वाह' करता है । द्विवेदी जी की उक्ति वैचित्र्य यहाँ भी द्रष्टव्य है-उत्पन्न कवि चाहे तो कविता के कल्पलोक में फूल-सी सुकुमार बालिका से वज्र कठोर महिष का निर्दलन करवा सकता है पर, व्यवहार जगत् में यह संभव नहीं दीखता । यहाँ भी उन्होंने इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति को दो विपरीत बिंदुओं पर रखकर देखा है परंतु वस्तु स्थिति है-कहियत भिन्न न भिन्न ।

मनोशक्ति देह शक्ति की संचालिका है, नियामिका है । 'विश्व है असि का नहीं संकल्प का है ।' स्वयं द्विवेदी जी ने दैनंदिन जीवन में अंतर्यामी के निर्णय को ही सर्वोपरि माना है ।

मानव-मूल्य का उद्गाता संवेदनशील कवि अहोरात्र जागरण कर उसकी रक्षा को अहर्निश कटिबद्ध रहता है । 'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाग्रति संयमी ।' वाणी का अमोघ शक्ति उसे सिद्ध है । परंतु चमक-दमक वाली दुनिया को कोई क्या कहे । विधाता की सृष्टि मर्त्य है, कवि की अमर्त्य । पश्यि देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति । इसलिए जहाँ अन्य जीकर मरते हैं, कवि मरकर जीता है ।

कवि कोविद विज्ञान विशारद कलाकार पंडित ज्ञानी,
कनक नहीं कल्पना ज्ञान उज्ज्वल चरित्र के अभिमानी,
इन विभूतियों को जब तक संसार नहीं पहचानेगा
राजाओं से अधिक पूज्य जब तक न इसे वह मानेगा
तब तक पड़ी आग में धरती इसी तरह अकुलाएगी
चाहे जो कुछ करे दुखों से छूट नहीं वह पाएगी ।

संपर्क : नक्कूथान, मोहनपुर, समस्तीपुर, पिन-848101

With Best Compliments from :

The Photo Makers

THE PHOTO MAKERS

Automatic Colour Lab

6-7, Sheohar Sadan, Fraser Road, Patna-800 001 (India)
Phone : 224868, 222955, Pager : 962571952

ओपरेशन ब्लैकस्टार

❒ ल. बालसुब्रमण्यम

भारत की राजधानी नागपुर के हवाई अड्डे पर पेन एम के जंबोजेट पर जब मैं उतरा तो मेरे रोम-रोम पुलकित हो रहे थे। अपने पूर्वजों की पुण्यभूमि में मैं पहली बार पदार्पण कर रहा था। दिसम्बर 2025 की सर्द रात थी। मैंने अपने ओवरकोट को अपने शरीर पर और मजबूती से लपेट लिया और लॉज में जाकर अपना सामान ले आया। हालांकि मेरे पूर्वज इसी देश के नागरिक थे, पर मैं अमरीकन था। इसकी कहानी भी लंबी है। मेरे माता-पिता देश के उन सहस्त्रों मध्यम वर्गीय भारतीयों में से एक थे जिन्हें सन् 2000 के उन काले दिनों में देश छोड़कर अन्यत्र बसना पड़ा था।

विदेश में रहते हुए भी मेरे माता-पिता ने मुझमें अपने मूल देश के प्रति संवेदना कूट-कूट कर भर दी थी। उनके मन में अपने देश को लेकर एक बहुत गहरी लज्जा एवं वितृष्णा की भावना थी जिसे अनायास ही मैंने भी आत्मसात कर ली थी। मेरे माता-पिता ने मुझसे अनेक बार ओपरेशन ब्लैकस्टार का जिक्र किया था, जिसने इस देश के इतिहास को ही बदलकर रख दिया था। वह उनकी जिंदगी की सबसे अहम घटना थी। जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, अपने मूल देश के बारे में मेरी जिज्ञासा बढ़ी, यद्यपि मैं जन्म से अमरीकी था, पर मेरे माता-पिता के भारतीय संस्कारों का भी मेरे विकास में एक बहुत बड़ा हाथ था। इन संस्कारों को समझे बगैर मैं स्वयं अपने आपको ठीक प्रकार से समझ नहीं सकता था। मैं भारत आया भी इसी उद्देश्य से था कि मैं अपने मूल देश को समझ सकूं। भारत आने के लिए मैंने जो अवसर चुना वह भी इस ओपरेशन ब्लैकस्टार से जुड़ा था। हर साल 23 दिसंबर को भारत अपनी दूसरी आजादी का पर्व मनाता था। इस वर्ष इस दूसरी आजादी का पच्चीसवां वर्ष था और देश भर में समारोह हो रहे थे। आज से ठीक पच्चीस साल पहले ही ओपरेशन ब्लैकस्टार को अंजाम दिया गया था, जिससे भारत को यह दूसरी आजादी हासिल हुई थी। मेरा इरादा था कि इन समारोहों में भाग लेकर मैं न केवल उस संस्कृति को ठीक प्रकार से समझूं जो मुझे घुट्टी में घुलाकर पिलाई गई थी बल्कि इस ओपरेशन ब्लैकस्टार के ऐतिहासिक महत्व के बारे में भी कुछ अधिक जानूं।

राजधानी नागपुर से अगले ही दिन मैं कुछ अन्य देशी-विदेशी पर्यटकों के साथ दिल्ली को रवाना हुआ, वही दिल्ली, जो पहले भारत की राजधानी हुआ करती थी, और जो उसी ओपरेशन ब्लैकस्टार में तबाह हो गई थी। हमारे गाइड ने इस ऐतिहासिक नगर के इतिहास का विहंगम चित्र प्रस्तुत किया। मालूम पड़ा कि यह शहर हजारों साल पुराना था और वह सच्चे अर्थों में खंडहरों का शहर था। यहां महाभारत के कौरव-पांडवों से लेकर मुगल, मराठा, ब्रिटिश, नेहरू आदि अनेक राजवंशों ने शासन किया था और उन सबने भरपूर मात्रा में अपने भवनों और महलों के खंडहर छोड़े थे।

गाइड के साथ हम संसद भवन, सर्वोच्च न्यायालय आदि के खंडहर देखने गए। सन् 1947 को मिली प्रथम आजादी के बाद के लगभग पचपन वर्षों तक यहीं से इस विशाल देश का शासन होता रहा था। एक में प्रधान मंत्री और सांसदों का कार्यालय था, दूसरे में राष्ट्रपति और तीसरे में देश के सर्वोच्च न्यायाधीश का। ओपरेशन ब्लैकस्टार से जुड़ी घटनाओं में ये तीनों ही संस्थाएं ध्वस्त हो गई थीं। संसद भवन के खंडहरों से ही स्पष्ट हो रहा था कि अपने समय वह एक अत्यंत भव्य और कलात्मक इमारत रहा होगा। हमारे गाइड ने बताया कि वह सैकड़ों स्तंभों पर टिकी एक गोल इमारत थी, जिसे ब्रिटिश शासकों ने बनाया था। मेरे हाथ में जो सूचना पुस्तक थी, उसमें इस इमारत का एक चित्र था। उसकी सहायता से मैं अपनी कल्पना की आंखों से इस खंडहर को अपने मूल रूप में देखने की चेष्टा करने लगा। एक समय इसकी दीर्घाओं और सभाकक्षों में देश के सबसे शक्तिशाली व्यक्तियों की रौबीली आवाजें गूंजा करती थीं। आज वहां कौओं की कांव-कांव और कुत्तों का रूदन ही सुनाई पड़ रहा था। संसद भवन के विशाल खंभे इधर-उधर बिखरे पड़े थे। उनमें से एक पर बैठकर मैं इस भव्य खंडहर को बड़े गौर से देखने लगा। मेरे माता-पिता और उनकी पीढ़ी के करोड़ों लोगों के लिए यह एक महत्वपूर्ण प्रतीक रहा था। उनके इस देश से पलायन करने के पीछे भी इसका पराभव एक मुख्य कारण था। मेरे माता-पिता से जो संस्कार मुझे मिले थे, उसके जरिए यह खंडहर मेरी अपनी जिंदगी से भी जुड़ा था। यह खंडहर एक प्रकार से मेरे माता-पिता की पीढ़ी की समस्त आशाओं, विश्वासों और सपनों का खंडहर था। उनके मन की कुंठा को मैंने भी अनायास ही अपने जेहन में उतार लिया था। इस कुंठा से मुक्ति पाने के लिए मेरे लिए यह आवश्यक था कि मैं संसद भवन के खंडहर में बदलने के पीछे की परिघटनाओं को, जिनमें से प्रमुख स्वयं ओपरेशन ब्लैकस्टार था, ठीक प्रकार से समझूं। इससे मुझे स्वयं अपने आपको समझने में भी मदद मिलेगी।

संसद भवन की टूटी-फूटी दीवारों पर कई जगह ओपरेशन ब्लैकस्टार के मूक गवाह स्वरूप टैंकों के गोलों के आघात से बने कोटर नजर आ रहे थे। सामने एक नीले पट्ट पर पुरातत्व विभाग का एक साइन बोर्ड लगा हुआ था जिसमें एक ऐतिहासिक खंडहर के बारे में कुछ जानकारी दी गई थी। मैं उठा और उस तक गया। उसमें संसद भवन और ओपरेशन ब्लैकस्टार का संक्षिप्त विवरण दिया गया था।

अपने भारत प्रवास के दौरान मैं बहुत से भारतीय इतिहासकारों, लेखकों, पत्रकारों, संपादकों आदि से मिला और उन सबसे ओपरेशन ब्लैकस्टार के बारे में पूछा। मैंने देखा कि वे सब उसकी जिक्र मात्र से लज्जा एवं अपराध बोध महसूस करते हैं। यह देखकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, क्योंकि यही भाव मैंने अमरीका में बसे अपने माता-पिता की पीढ़ी के लोगों में भी देखा था। तो क्या जिस कुंठा से मैं और मेरे माता-पिता ग्रस्त थे, वह समस्त भारतवासियों को साल रही है? इस सब खोजबीन से मुझे ओपरेशन ब्लैकस्टार और उससे जुड़ी घटनाओं की सही-सही जानकारी मिल गई ...।

ओपरेशन ब्लैकस्टार की पृष्ठभूमि की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी थी सन् 1999 में संसद द्वारा पारित किया गया वह विधेयक, जिसने सांसदों को देश के न्यायालयों के अधिकार-क्षेत्र से मुक्त कर दिया। अब किसी भी आपराधिक मामले में किसी विधायक के विरुद्ध देश की किसी भी अदालत में मुकदमा नहीं चल

सकता था, न ही कोई अदालत उसे सजा सुना सकती थी। वे केवल संसद को जवाबदेह थे। सांसदों को यह विधेयक इसलिए लाना पड़ा था क्योंकि पिछले कुछ सालों से बहुत से सांसद अनेक प्रकार के वित्तीय घोटालों में उलझ गए थे और उनमें से कई को न्यायालयों ने कड़ी सजा दी थी। कई सरकारें भी इन घोटालों के कारण गिरीं और कई उभरते नेताओं और सांसदों का भविष्य न्यायालय की इन कार्रवाइयों से धूल में मिल गया। इससे परेशान होकर सांसदों ने यह विधेयक पारित किया ताकि आगे से उन के विरुद्ध किसी भी प्रकार की न्यायिक कार्रवाई न हो सके, भले ही उनका अपराध कितना ही जघन्य क्यों न हो। परंतु इस विधेयक का एक नकारात्मक नतीजा यह निकला कि आपराधिक जगत की अनेक हस्तियों के लिए संसद अब सबसे सुरक्षित स्थल प्रतीत होने लगा, क्योंकि सांसद बनकर वे देश के कानून से ऊपर हो सकते थे। तब इसमें आश्चर्य ही क्या कि इस विधेयक के आने के कुछ ही दिनों में आपराधिक ताकतों ने सभी राजनीतिक दलों पर धीरे-धीरे अपना कब्जा जमा लिया। नेताओं और माफिया डोनों के बीच चोली-दामन का संबंध तो पहले से ही चला आ रहा था। अब फर्क इतना ही हुआ कि माफिया तत्वों ने नेताओं को धीरे-धीरे राजनीतिक प्रक्रिया के हाशिए पर ढकेल दिया और स्वयं नेता की भूमिका भी निभाने लगे, या फिर नेता स्वयं माफिया डोन बन गए। जनवरी 2000 में हुआ आम चुनाव भारत के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। इसमें पहली बार संसद पर आपराधिक तत्वों का पूर्ण कब्जा हो गया। उनकी कोई अलग पार्टी नहीं थी, वरन वे सभी पार्टियों में घुसे हुए थे। चुनाव के बाद संसद में आए सदस्यों में से एक अच्छी तादाद माफिया डोनों या उनके नुमाइंदों की थी। इन सांसदों में आपसी तालमेल था और इस कारण वे संसद की हर गतिविधि को प्रभावित करने की स्थिति में थे।

इस नई माफिया सरकार के प्रथम तीन-चार महीनों में संसद ने ऐसे अनेक विधेयक पारित किए जिससे माफिया की स्थिति और अधिक मजबूत हो उठी। इसी दौरान माफिया सांसदों का विरोध करने वाले अनेक अन्य सांसद मारे गए। कुछ की हत्या तो सरेआम संसद भवन के सभा कक्ष में ही हुई और दूरदर्शन के कैमरों के जरिए सारे देश ने इन हत्याओं को होते हुए देखा, मानो वे कोई हिंदी चलचित्र देख रहे हों। इन सब हत्याओं से संसद के भीतर माफिया सांसदों का विरोध लगभग समाप्त हो गया। उन दिनों श्री देवी प्रसाद देश के प्रधान मंत्री थे। वे बेचारे एक सीधे-सादे कॉलेज के प्रोफेसर थे। माफिया सांसदों ने उन्हें यही सोचकर प्रधानमंत्री बनाया था कि उनके हाथ की कठपुतली बने रहेंगे। पर चार-पांच महीनों बाद देश की सर्वोच्च संस्था में हो रही इस धांधली से देवी प्रसाद की अंतरात्मा कुलबुलाने लगी और वे माफिया सांसदों के आदेशों का पालन करने से इन्कार करने लगे।

तब वह घटना घटी जिससे संसद भवन का ध्वस्त होना अवश्यंभावी हो गया। माफिया सांसदों ने प्रधानमंत्री और उनके समर्थकों का अपहरण कर लिया और यह घोषित कर दिया कि देश पर उनका कब्जा है। उन्होंने संसद भवन को ही अपना अड्डा बना लिया और रातों-रात उसे आधुनिक हथियारों से घेर कर उसकी किलेबंदी कर ली। उन्होंने यह भी धमकी दी कि यदि भारतीय सेना उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई करेगी तो वे दिल्ली पर परमाणु बम गिरा देंगे। सांसदों की इस धमकी से सारा देश दंग रह गया। दिल्लीवासियों ने तो तुरंत ही दिल्ली खाली कर दी। अपनी धमकी को सिद्ध करने के लिए सांसदों ने राष्ट्रपति भवन और सर्वोच्च न्यायालय पर दो एक प्रक्षेपास्त्र भी दाग दिए, जिससे ये दोनों ही खंडहर में बदल गए और तत्कालीन राष्ट्रपति और सर्वोच्च न्यायाधीश मारे गए। फिर माफिया सांसद धीरे-धीरे देश पर अपना वर्चस्व बढ़ाने लगे। प्रधानमंत्री देवी प्रसाद और अन्य विरोधी सांसदों की हत्या कर दी गई और इस तरह संसद में माफिया सांसदों का पूरा बहुमत हो गया। इससे उनके द्वारा पारित अनेक विधेयकों को कानूनी हैसियत भी प्राप्त हो गई क्योंकि वे अब संसद में बहुमत में थे।

लेकिन यह सब कब तक चल सकता था। आखिर जनता के रोष तले माफिया सांसदों की भी एक न चल सकी। सौभाग्य से इस जन आंदोलन को सेना का पूरा-पूरा समर्थन मिला। इस समर्थन के बिना जनता के लिए सांसदों को हराना संभव न हो पाता क्योंकि सांसद सभी प्रकार के आधुनिक हथियारों से लैस थे। सेना को भी सांसदों से कई दिनों तक युद्ध करना पड़ा था, जिसमें सभी आधुनिक हथियारों का उपयोग दोनों पक्षों ने किया। सांसदों से हुई इस लड़ाई में सैकड़ों नागरिक और सैनिक मारे गए, जिन्हें आज भारत में शहीदों की तरह पूजा जाता है। आखिर सेना को संसद भवन को ही बारूद से उड़ा देना पड़ा क्योंकि सांसदों ने आत्मसमर्पण करने से इन्कार कर दिया और उन्होंने परमाणु अस्त्रों के उपयोग की अपनी धमकी दुहराई। सेना के इस हमले में, जिसे ही ऑपरेशन ब्लैकस्टार नाम दिया गया था, सारे सांसद तो मारे ही गए, उनके साथ संसद भवन भी खंडहर में बदल गया।

संसद के नष्ट होने के बाद बहुत दिनों तक देश में अराजकता रही। फिर धीरे-धीरे स्थिति सामान्य होती गई। सेना की सैद्धांतिकता की दाद देनी चाहिए कि इस कठिन दौर में उसने देश की बागडोर छीनने की कोशिश नहीं की, बल्कि देश को बाहरी ताकतों से बचाने की ओर ध्यान लगाया। सेना की इस तटस्थता का मुख्य कारण यह हो सकता है कि ऑपरेशन ब्लैकस्टार में जनता और सैनिकों ने कंधे से कंधा मिलाकर लड़ा। धीरे-धीरे नई जनतांत्रिक संस्थाओं का गठन हुआ। देश की राजधानी नागपुर बनाई गई। ससंद की जगह जनसभा ने ले ली। इसका गठन 23 दिसंबर 2000 को हुआ। इसी दिन सभी नागरिकों ने वह ऐतिहासिक प्रण भी लिया कि भविष्य में वे राजनीति का अपराधीकरण नहीं होने देंगे। इस प्रण को नागपुर घोषणा के रूप में भी जाना जाता है और वह एक प्रकार से देश का नया संविधान है। पिछले पच्चीस वर्षों में इसी 23 दिसंबर को भारत अपनी दूसरी आजादी का पर्व मनाता आ रहा है....।

भारत की दूसरी आजादी के पच्चीसवें साल के समारोहों में भाग लेने के बाद मैं अपने देश लौट चला। पेन एम के विमान पर बैठे मैं सोचता गया कि क्या आजादी का भारत का यह दूसरा प्रयोग पहले से अधिक सफल हो सकेगा, और भारतीयों की कंगाली, भूख और अशिक्षा दूर हो सकेगी, या जनसभा का भी आज से पच्चीस-पचास वर्ष बाद वही हस्र होगा जो संसद का हुआ था?

न जानें क्यों मुझे इस बात से बड़ी राहत मिल रही थी कि मैं इस अभागे देश का नागरिक नहीं हूँ। मुझे अपने देश अमरीका के प्रति बड़ा नाज़ और अपनापन महसूस होने लगा। यह भाव मुझमें इससे पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने देखा कि मैं भारत की केंचुली उतार फेंकने में सफल हो गया हूं और सच्ची दृष्टि में, दिलो-दिमाग से, अमेरीकन हो गया हूँ। भारत को लेकर जो कुंठा मेरे जेहन में बैठी हुई थी, उससे भी मैं मुक्त हो गया था। अब मेरा भारत से कोई सरोकार नहीं रह गया था।

संपर्क : सी.-105, प्रीमियर अपार्टमेन्ट्स
बोडकदेव, अहमदाबाद-380054

घोटाला-कला या बला ?

❒ डॉ. राम भगवान सिंह

घोटालों के महासागर वाले इस प्रदेश में हमारे लेखक व्यंग्य की प्रहारात्मकता से सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं। पर क्या यह स्वार्थ, लिप्सा में आकंठ डूबे लोगों को रास आ सकेगा ? .....-प्रधान संपादक

घोटालों के धुआंधार चौके-छक्के देखते-सुनते इस बार मेरी गृह सलाहकार ने कहा, "घोटाले पर आप भी लिखिए न !" उसी तरह जैसे पड़ोसिन ने ब्वाय बॉब कटवाए तो उन्होंने भी । खैर, पहले तो मैंने आस-पास नजर दौड़ायी कि कहीं कोई सुन तो नहीं रहा है ? सुना है दीवारों के भी कान होते हैं । फिर मैंने कहा, "धीरे-धीरे बोल, कहीं कोई सुन न ले । और हाँ, भाग्यवान, न तो मैं संचार मंत्री रहा हूँ और न ही तुम किसी स्टेट की अम्मां । घोटाले की बात हम क्या जानें । और फिर इस विषय पर लिखने में भारी खतरा है । इस पर सेंसर की कैंची चल सकती है, सीबीआई वाले कह सकते हैं, बिना किसी घोटाले में अन्तर्लिप्त हुए तुम ऐसी रहस्यपूर्ण बातें लिख ही नहीं सकते । घोटाला करनेवाला तो अपनी पत्नी और घोटाला करनेवाली अपने पति या प्रेमी को भी ऐसी बातें नहीं बताती, वो फिर तुम्हें यह सब कैसे पता है ! जरूर तुम किसी घोटाले से या घोटालाबाज से अथवा किसी घोटालाबाजिनी से फंसे हुए हो । "पर पत्नी ने मेरी दलील को अस्वीकार करते हुए एक पूर्वाग्रह ग्रसित जज की तरह फैसला सुनाया, "आपमें घोटाला करने का दम तो है नहीं, पर क्या आपमें घोटाला पर लिखने की भी कूवत नहीं है ? आपको इसी पर लिखना है ।"

सच पूछिए तो गृह न्यायालय के आदेश की अवमानना करने की ताकत मुझमें नहीं है । मगर मोहलत की मांग तो कर ही सकता हूँ । पहले तो विचार आया कि मैं चुप लगा जाऊँ । वह समझ लेगी कि मैं मौन चुनौती दे रहा हूँ कि ऐसे मामलों में टांग अड़ाने का तुम्हें अधिकार नहीं है । तुम्हारा न्यायालय मेरे व्यक्तित्व के अनुपात में बहुत छोटा है । और आप जानते हैं, घर के न्यायालय में मात्र सम्मन हो सकता है, वारंट नहीं । और कैद की परवाह किसे है, घर में तो आदमी हमेशा घरवाली के कैद में रहता ही है । पर जेल में अच्छा खाना मिले, इसके लिए अधिकारी से मिलकर रहना बुद्धिमानी है । अस्तु, मैंने निवेदन किया, "इतने कम समय में सुरसा के मुंह जैसा घोटाला विषय पर कैसे लिखा जा सकता है ?" जवाब मिला, "अजी, मेरी सहेली की सहेली के वो नेता हैं । उन्हें जब पन्द्रह मिनट का भाषण तैयार करना होता है तो दो दिनों का समय लगता है और जब आधे घंटे का भाषण तैयार करना होता है तो तीन दिनों का समय लगता है, मगर जब उन्हें घंटे-दो-घंटे का भाषण करना होता है, तो वे हमेशा तैयार रहते हैं । और जब एक

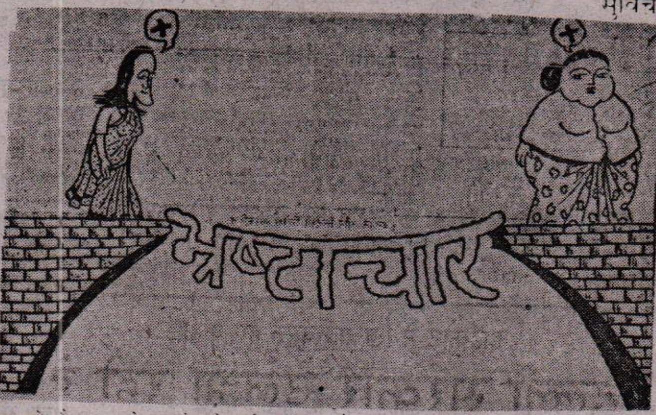

नेता बोलने को हमेशा तैयार रहता है तो नेता का निर्माता अर्थात् अध्यापक क्या महज एक लेख के लिए हमेशा तैयार नहीं रह सकता ?"

फिर भी, आधार ग्रंथों के अभाव में और उससे भी अधिक महत्वपूर्ण घोटालाबाज दोस्तों में और रिश्तेदारों के अभाव में अखबारों की याद आयी । पर अफसोस, ये अखबार तो खाद की जगह तेजाब से भरे होते हैं और अच्छी हरी-भरी फसल को बर्बाद कर देते हैं । इनके लिए कागज को काला करना कला है और लोगों के शयनकक्ष से लेकर शौचालय तक में प्रवेश करना विज्ञान । स्पष्ट है कि ये न तो घोटाले की कला समझते हैं और न ही इसका विज्ञान । इनलोगों ने विश्व-बाजार में मुंहमांगी कीमत पर बिक सकनेवाली हमारी आधुनिकतम घोटाला तकनीक को छिन्न-भिन्न कर दिया । जैसे बन्दर मोतियों की माला को तहस-नहस कर देता है । थोड़ा रुक जाते तो भी गनीमत थी । कम से कम तब तक कॉपीराइट तो हो जाता । हमारे आविष्कारों की संख्या में एक की वृद्धि तो होती । जिस तरह मिस यूनिवर्स के बाद मिस वर्ल्ड का खिताब मिला, उसी तरह एक और खिताब मिला मिस घोटाला और विश्व घोटालाबाज का ।

सोचने की बात है, आखिर यह घोटाला कला है या विज्ञान, धर्म है या राजनीति । मेरे मुविचार में घोटाला एक कला है । बड़ी ही बारीक, नाजुक कला-मकड़ी के जाल की तरह । वास्तव में यह कला मकड़जाल से बेहतर और उच्चतर कोटि की होती है, क्योंकि यह रंगीन होती है जबकि मकड़ी का जाल रंगहीन होता है । और दूसरी बात, हर जाले के अन्दर मकड़ी स्वयं कैद हो जाती है । पर, घोटाले की कला की खासियत यह है कि इसमें घोटालाबाज स्वयं कम ही फंसता है । प्राय: वह एक्स्ट्रा से काम चला लेता है जैसे फिल्मों के नामी हीरो खतरनाक दृश्यों में एक्स्ट्रा कलाकारों और स्टंटवालों को भिड़ा देते हैं । घोटाले की कला इतनी सूक्ष्म होती है कि इसके रेशे बिना सीबीआई मार्का वाले लेन्स के दिखाई नहीं पड़ते । जाहिर है कि ऐसी कला अर्जित करने में एकलव्य से भी ज्यादा स्वाध्याय और एकाग्रचित्तता की जरूरत होती है । तभी हाथ की सफाई निखरती है, घोटाला चमत्कार दिखाई देने लगता है । आप घर में सरकारी अथवा गैर सरकारी खज़ाने से धन बटोर कर रखें और ऐसा लगे कि कुबेर देवता ने छप्पर फाड़कर स्वयं आपके यहाँ नोटों की बारिश की हो । और जब इन्द्र देवता के जल की बारिश पर टैक्स नहीं लगता तो कुबेर देवता

के धन की बारिश पर टैक्स क्यों ?

घोटाला हाथ की सफाई है । हाथ इतना कुशल होना चाहिए कि सच और झूठ का मिश्रण चोर और सिपाही की तरह मिलनसार बन जाए जिससे यह कहना मुश्किल हो जाए कि घोटाला से हवाला अथवा हवाला से घोटाला है, या फिर हवाला ही घोटाला है या घोटाला ही हवाला है । इस कला की सिद्धि में समय लगता है, तभी परिपक्वता आती है । इसका एक सर्वमान्य फार्मूला है-खाओ और खिलाओ । इस अलिखित नीति का पालन करने से पंथ और गोपनीयता की शपथ भंग न करने से घोटाला निष्कलंक सफल होता है । इसकी बाह्य चमक ऐसी मनमोहक और फिसलनदार होती है कि दाग तो बस ढूंढ़ते रह जाएंगे आप ।

वैसे घोटाला एक विज्ञान भी है । जैसे उपग्रह को अंतरिक्ष में भेजने से पहले वैज्ञानिक जोड़-घटाव करते हैं, उसी तरह घोटाले की योजना बनानी पड़ती है । आवश्यक उपकरण जुटाने पड़ते हैं, कई सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं । फिर घोटाले से अर्जित लाभ को मिट्टी के कच्चे घड़ों में रखना होता है और हमेशा सतर्क रहना पड़ता है कि ये घड़े फूटे नहीं । दिक्कत यही है कि घोटाले का धन कच्चे घड़े में ही रखा जाता है । किसी धातु के पक्के बर्तन में रखने से बर्तन ही टूट जाते हैं । साथ ही, इस घड़े का मुंह एक गुप्त.मंत्र पढ़ने से खुलता है और उसी मंत्र से बन्द भी होता है । यह मंत्र यदि किसी के कान में पड़ गया तो खजाना खाली और मालिक अन्धा हो जाता है ।

आप पूछ सकते हैं, घोटाला धर्म है या राजनीति । मेरा उत्तर है-यह दोनों का संगम है। घोटाला युगधर्म है और राजनीति है । घोटाले का दुर्भाग्य यह है कि अभी तक इस कला को मान्यता प्राप्त नहीं हुई है । हमारे शास्त्रों में चौर कला अर्थात चोरी करने की कला को तो कला कहा गया है, किन्तु इस नवीनतम कला, घोटाले की कला को अभी तक पजीकृत नहीं किया गया है । हमारी नवीन शिक्षा पद्धति में व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया गया है, लेकिन ऐसे लाभकारी, भारी व्यवसाय का समावेश होना अभी बाकी है । प्रचार माध्यमों का पुनीत कर्तव्य है कि अपनी पावन पीत पत्रकारिता की खातिर घोटाले को शीर्ष स्थान प्रदान करें और हर रोज घोटाले-दर्शन की प्यासी अंखियां अखबार में अपने प्रिय का दर्शन कर निहाल हो जाती हैं । घोटाला हमारे भोजन को चटपटा बनाता है, हमारी पाचन-शक्ति को बढ़ाता है, हमारे जीवन को सरस बनाता है, हमारी कल्पना को निखारता है । पसीने की बदबूदार कमाई में न वह शान है, न जान है, न मान है । एक बात और है, गुमनामी की जिंदगी भी भला कोई जिंदगी है । सच तो कहा है, 'बदनाम होंगे तो क्या नाम न होगा ?' इसीलिए तो घोटाला एक हसीन कला है, वैसे पकड़े जाने पर, सच कहूँ तो घोटाला एक बला है ।

संपर्क : अंग्रेजी विभागाध्यक्ष
बी. एस. कॉलेज, लोहरदगा

लौह पुरूष सरदार पटेल के 123वें जयंती-समारोह के अवसर पर शुभकामनाएं

नालन्दा मेडिकल्स
मखनियाँ कुआँ रोड, पटना-800 004

न्यू नालन्दा मेडिकल्स
खजांची रोड, पटना-800 004

आकाश कोच
पटना-हजारीबाग सर्विस

नरसंहार में मरने की इच्छा

❒ अरुण कुमार गौतम

यह सच है कि एक बीमार और लाचार व्यक्ति भी मरना नहीं चाहता । सुख से जीने की तमन्ना तो सभी की रहती है किन्तु किसी कारणवश किसी का जीवन घोर निराशामय हो जाता है तब वह मर जाने में ही सुख समझता है । मेरी भी अंतरात्मा तो मुझे मरने को नहीं कहती किन्तु शिक्षित बेरोजगारी की जिन्दगी मेरे ऊपर भार-सी हो गयी है तो स्वर्ग के सुख का स्वप्न देखने की बात भूलकर अब मैं इस दुनिया को अलविदा कहकर विदा ही हो जाना चाहता हूँ । परिवार का भार मेरे दिल में दर्द की टीश उठाता रहता है । सचमुच यह दुनिया दुःखमय है और जो व्यक्ति दुखों से समझौता करने को तैयार उसके लिए तो ठीक है किन्तु दुःख और संघर्ष से घबराने वाले हम जैसे लोगों को तो यह दुनिया निश्चित ही छोड़ देना चाहिए ।

यूं तो अबतक कई बार मैं आत्महत्या करने का असफल प्रयास कर चुका हूँ किन्तु 'जाके राखे साइयां मार सकै न कोय' की तरह बच-बच गया हूँ । समझ में नहीं आता है कि बेदर्द भगवान मेरे दिल के दर्द को क्यों नहीं बुझते और फिर मुझे मरने भी क्यों नहीं देते ?

लेकिन इधर अब मेरा भी इरादा बदल गया है । अब आत्महत्या का विचार छोड़कर मैं दो कदम आगे की बात सोचने लगा हूँ । वो यह कि इस मनहूस जीवन में तो मैं परिवार के लिए कुछ कर नहीं पा रहा हूँ तो अब मरकर ही कल्याण करना चाहता हूँ । जब से मैं बिहार में नरसंहारों में मारे जाने वाले लोगों के आश्रितों को एकाध लाख रुपये, सरकारी नौकरी और इन्दिरा आवास योजना का मकान उपहार स्वरूप दिये जाने की बात सुना हूँ तबसे कुछ ज्यादा ही प्रसन्न रहने लगा हूँ । अब तो कहीं भी नरसंहार हो जाता है तो सुनकर मेरे दिल को बड़ी ठेस लगती है । ऐसा यह जानकर नहीं होता है कि वहां मारे गये लोगों में एक मैं बदनसीब क्यों नहीं मारा गया । मुझे तो क्रोध उन हत्यारों पर आता है जो मुझे सूचना दिये बगैर जनसंहार करके मेरी इच्छाओं पर पानी फेर देते हैं ।

पिछले दिन मैं बड़ी जोर से बीमार पड़ा या यूं कहिए कि पेचिश का शिकार हो गया था । एक शाम मैं बिछावन पर पड़े-पड़े फूट-फूटकर यह सोचकर रो पड़ा कि यदि मैं यूं ही मर गया तब फिर मेरी हार्दिक इच्छा का क्या होगा ? तभी मेरी पत्नी मेरे समक्ष उपस्थित होकर पूछ बैठीं कि बच्चों की तरह फूट-फूटकर आप क्यों रो रहे हैं ? धैर्य रखिए, अब आप एक-दो दिन में ठीक हो जायेंगे । मैंने कहा कि मैं इसलिए नहीं रो रहा हूँ कि ठीक नहीं हो पा रहा हूँ, बल्कि मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि कहीं ऐसे ही पड़े-पड़े मैं दम न तोड़ दूँ ।

"ऐसे क्यों बोलते हो जी ? मेरे जीते जी तुम मरने की बात क्यों करते हो, फिर हम अकेले रहेंगे क्या ?" पत्नी निराश होकर बोली ।

"मरना तो मैं भी नहीं चाहता जानेमन, बल्कि अब तो मैं किसी नरसंहार में मारा जाना चाहता हूँ ।"

"क्या ?" "हाँ मेरी रानी, ताकि जीवन में मैं तुम लोगों के लिए कुछ नहीं कर पा रहा हूँ तब शहीद होकर तो सरकार से बहुत कुछ लाभ दिलवा दूँ ।"

"क्या ?" हाँ मेरी जान, जब मैं किसी नरसंहार में मारा जाऊँगा तब तुम्हें सरकार की ओर से एकाध लाख रुपये, सरकारी नौकरी और इन्दिरा आवास योजना का मकान उपहार स्वरूप दिये जायेंगे ।"

"सच !" उसके चेहरे पर खुशी के भाव छलक आये । उसने मुझसे आश्चर्यचकित होकर पूछा, "लेकिन किसी नरसंहार में आप कैसे मारे जायेंगे मेरे प्रियतम पतिदेव ?"

"यही तो चिंता का विषय है रानी ! लेकिन आपका वैचारिक सहयोग यदि मिलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मैं इस दुनिया से दूर हो जाऊँगा ।"

"लेकिन कब और कैसे होगा यह सब ?"

"अब शीघ्र ही होगा । इसके लिए मैं रणवीर सेना, माले और एम.सी.सी. वाले से मिलकर निकट भविष्य में होने वाले नरसंहार के विषय में जानकारी प्राप्त करूँगा ।"

"अरे वाह पियाजी ! क्या दिमाग है आपका ! आपका भी कोई जवाब नहीं । तब मैंने भी चवनिया मुस्की लेकर कहा-"बीबीजान आपका भी तो कोई जवाब नहीं है । आखिर आप धर्मपत्नी तो मेरी ही हैं ना ।"

"लेकिन मैं एक बात कहूँ जी ?"

"हाँ हाँ, क्यों नहीं ?"

"किसी बैंक में हम दोनों के नाम से एक ज्वाइंट एकाउन्ट खुलवा दीजिए ताकि आपके मरने के बाद मुझे रुपये लेने में कोई दिक्कत नहीं हो ।"

"तो मेरी नथनिया बेच दीजिए ना जी । आखिर ऐसे ही तो बक्से में पड़ी है । उसके रुपये एक अच्छा काम में लग जाये तो बहुत ही अच्छा रहेगा ।"

पत्नी के दिल की ऐसी बात सुनकर मेरा दिल खुश हो गया । तो सच मानिए भाई कि मैं तो उस दिन का बेसब्री से इंतजार में हूँ जिस दिन मैं किसी नरसंहार में शहीद हो जाऊँगा वह दिन जीवन का सबसे स्वर्णिम दिन होगा । लोग मेरी हत्या पर हाय-हाय करेंगे तो मेरी बीबी की आँखों से खुशी के मोती झरेंगे । हम तो अपने बेरोजगार, लाचार और निकम्मे भाइयों से कहेंगे कि-

न आत्महत्या करो न बीमार हो मरो,
मरना है यारों तो नरसंहार में मरो

संपर्क : अरुण कुमार गौतम, अराप
भाया-बिक्रम, पटना

दहेज के बहाने

❒ डॉ. कृष्णानंद द्विवेदी

पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण और ताम-झाम में हम अपनी पारंपरिक जीवन शैली की उन्मुक्तता और निस्पृह मानवीय भावों को भुलाते जा रहे हैं । क्या हम उन्नति कर रहे हैं अथवा.... ? प्रस्तुत है लेखक का संस्कृति शोधक दृष्टिकोण ।. -संपादक

भोजपुरी के विवाह-गीत की एक कड़ी है-'लडना जनक बाबा धोतिया हाथे पान के बीड़ा, करु न समधिया से विनती सिरु आजु नवाई ।' यह गीत कन्यादान के समय गाया जाता है । इसमें अस्मिता, विनम्रता, पारंपरिक वंशानुगत गौरव, स्नेह, अभाव-प्रदर्शन तथा कन्या-पिता की लौकिक अभिशप्तताओं के साथ जीवन को मंगलमय बनाने का अनुबोधन होता है । मंडप में मंगल वेदी पर वर-वधू, आचार्य, पूज्य पुरुष तथा पंच तत्वों की उपस्थिति में गाँव की स्त्रियाँ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का उक्त प्ररोचन करती हैं । उनके कंठ का उक्त प्रतिबोधन इस लोक के हर कन्या-पिता को राजा जनक और उनकी कन्या को शुचिता सीता के समान मानता है । वर-पक्ष के सम्मुख कन्या-पक्ष का विनम्रता-प्रदर्शन इस तथ्य को उजागर करता है कि मेरी पुत्री को मेरे द्वारा दिया गया स्नेह, प्रेम और अपनत्व उस घर में भी सुलभ होता रहे । शान्ति, सभ्यता शुचिता एवं मंगलसूचक प्रतीक पीली धोती वर-पक्ष को अर्पित की जाती है जो इस बात का साक्ष्य होती है कि शील, आचरण, मर्यादा और सामाजिक प्रतिष्ठा-सब आपको समर्पित कर दिया । इसकी लज्जा आपके ही हाथों में सुरक्षित रहेगी । पान के बीड़ा से त्रिकोणात्मकता का परिज्ञान कराकर यह प्रतीति करायी जाती है कि त्रिगुणात्मक शक्तियाँ सत्व, रज, तम, (लक्ष्मी, काली, सरस्वती) अथवा त्रिदेव (राम, कृष्ण, महादेव) अपूर्व नवेला वर-वधू का सौरूय-विवर्धन करें तथा कंटकाकीर्ण सौध को सुगम, सम्पन्न, सौभाग्यवर्द्धक तथा शुभ लक्षणों वाला बनायें । चतुर्वर्तीसमायुक्त (ज्ञान, कर्म, भावना और संकल्प; जेतव्य वधू-पिता का हिरण्यमय पाग समाज में सर्वदा समुत्थित रहा लेकिन अपनी कन्या के आनन्दमय जीवन की मनोभिलाषा में स्वयमेव बद्धाञ्जलि होकर नमित हो जाता है ।

विवाह आज भी होते हैं लेकिन उनमें नहीं होता है तो हमारी आर्यपुत्रियों के कंठों का वह प्ररोचन, जो हमें पल-प्रतिपल प्रतीति कराते रहता था कि सम्पन्नता से ऊपर कौटुम्बिक स्नेहाभिलन का महत्व होता है, केन्द्रीकृत अहंकारों से महत्वपूर्ण विनम्रता-प्रदर्शन है और राजसी तथा तामसी वृत्तियों की तुलना में सात्विक का श्रेष्ठांश है । कुनबे की अहंकार-शून्य जीवन शैली की प्रस्तुति मन के सारे मैल को धोकर हृदय से हृदय का मिलन करानेवाली थी । पर, जब से कुल-ललनाओं का शहरीकरण हुआ, माएँ 'मम्मी' बनी, चाचियाँ 'अंटी', बहनें 'मैडम' और दादियों ने ओल्ड 'जेन्टल लेडी' का रूप ले लिया, वे परम्परागत विचार विलुप्त होते चले गये । सभ्यता के कई कष्टकंटक सोपानों को इन नन्हें कदमों ने नापा है । लेकिन सोपानों को पार करते जाने के उतावलेपन में संस्कृतियाँ पीछे छूटती चली गईं । वे अपूर्व कथन अब सुनने को नहीं मिलते और कदाचित इसी कारण समाज के इस पवित्र वैवाहिक रस्मो-रिवाज में वधू-पिता की तखसीस का वर्णन नहीं होता बल्कि वणिक वृत्ति के आवेश में धोती खोल कृत्य का नग्न प्रदर्शन होता है । अब कोई जनक अपनी सीता का हाथ राम के हाथों में सुर्पुद नहीं करता वरन् एक पढ़ा-लिखा तथाकथित फैशन परस्त 'ब्राइड' 'ग्रुम' के साथ शौक के लिए 'मैरेज' रचाता है । अविश्वासी मनुष्यों की स्वार्थपरक प्रवंचनाओं ने हमारी निश्छलता को बार-बार ठोकर मारा है और हमने भी उनके गंवारापन को उदारतापूर्वक बार-बार क्षमा किया है । हमने पहलू से ज्यादा विन्दू की अभ्यर्थना की और परलोक से ज्यादा लोक को श्रेष्ठांकित किया । इसी कारण वैवाहिक जीवन के भविष्य-निर्माण में पितरों के आशीर्वाद से वंचित होते चले गये तथा **निरर्थक आत्मविश्वास से पूरित होकर छूंछे घट में मंगल की आवतारणा की भ्रान्ति पालकर उर्ध्वंग अंबर की ऊँचाइयाँ नाप लेने की आत्मश्लाघा करते रहे ।**

राजा जनक के यहां बारात आयी थी । बारात ने सीता को 'सुभग सयानी' पाया था । वह समाज-शास्त्र में एम.ए. नहीं थी, मैरेज मैनेजमेंट का कोर्स भी नहीं की थी । फिर भी युवावस्था की मेच्योरिटी थी, अपनापन का बोध था और था कुल-मर्यादा के शील-अनुरक्षण का प्रातिभ । गंधकारिकाओं से वह भावी वर के माता-पिता और अन्य कौटुम्बिक जनों से विलग होकर अपना अलग कुनबा बसाने की मंत्रणा नहीं की थी । इसी कारण वर-गृह में उन्हें स्नेह, सौहार्द्र और सम्मान मिला । राजा जनक भी बारातियों का हृदयोल्लास से स्वागत किये थे । सोने की थाल में उन्हें ज्योनार कराया था और विभिन्न प्रकार की वस्तुएं दहेज देकर सीता को वर-गृह के लिए विदा किया था । कण्व ऋषि के आश्रम में पली-बढ़ी शकुंतला दुष्यंत के साथ जब विदा होने लगी तो लता-गुल्म पशवादिक भी आंखों में स्नेहाश्रु लिये शकुंतला के आगे नमित हो गये थे । पर, विद्युत-लड़ियों की जगमगाहट के फैशनपरस्त मंडप में हृदय से हृदय के इस भावोल्लासपूर्ण मिलन का अवकाश नहीं है । गौरी के 'गौरीश' जब से अपने मुख को लोलुपता के आवरण में ढंक लिये और अपने चारों ओर आधुनिकता की अभेद्य दीवार खड़ी कर लिये, तब से मंगला 'अमंगालाएं' बनायी जाने लगी और साध्वी सीता दशरथात्मजों की

प्रताड़नाओं से ज्वाला का ग्रास बनने लगी। एक गई, दूसरी आई। तीसरी-चौथी के आने का नैरन्तर्य तब तक कायम रहेगा जब तक मारुति, कलर टी.वी., और विडियो की भोग लिप्सा के अरमान पूरे नहीं हो जाते। मनुष्योत्पादक कारखानों पर बहशी प्रहार सभ्य समाज की महत्तम उपलब्धि है।

राजा जनक के 'दाइज अमित न सकिय कहि, दीन्ह दहेज बहोरि'-आज की अनुकरणशील बाध्यता है। 'कैश' और काइंड्स के बिना अब कोई राम सीता का हाथ नहीं थामता। दुष्यन्तों की आँख कण्व की कुटिया की अनमोल तौफ़ीक पर अटक गई है। इसी कारण दुष्यंतों के बाजार हैं, खरीददार गायब हो चुके हैं। यदि हैं भी तो बोलियाँ ऊँची हैं। धोती और पाग चरणों में समर्पित कर देने के बाद भी टिकाऊ माल मिल ही जाए-इस बात की गारंटी नहीं है। पोर्टेबल सभ्यता है, संस्कृति पिछड़ गई है। धोतियाँ हैं, पीलापन गायब हो चुका है। पान का बीड़ा भी है लेकिन मांगल्य बोध का अभाव हो गया है। कन्यादान के व्यस्ततम आयोजनों में कुटुम्बी जनों के श्रम-सीकर की गंध तामझाम में विलुप्त हो गई है।

आपने सुना होगा, बादशाह अकबर ने जोधाबाई का हाथ थामा था। अकबर का कोई वसीयतनामा उसके वंशजों ने इतिहासज्ञों को सुपुर्द नहीं किया जिससे यह मालूम हो सके कि हिन्दू पद्धति के अनुसार जोधाबाई के घर वालों ने उन्हें कितनी पीली धोतियाँ और कितने बीड़े पान दहेज में दिये थे? अथवा इस्लामिक रस्मो-रिवाज के मुताबिक अकबर ने कितनी रकम मेहर का कुबूल किया था? दहेज की यह बाध्यता सभी लोकों और सभी जातियों में रही है। हिन्दुओं के यहाँ वर को 'दहेज' दिया जाता है। शिवाजी की संताने 'हुंडी' दिया करती हैं। क्रिश्चियन भी इस परंपरा से अछूते नहीं हैं। आदिवासियों की एक उपजाति की परंपराएँ तो अजीब हैं। उनके यहाँ कन्या ही वर का वरण कर अपने घर ले जाती हैं। वर को घर की चहारदिवारी के अंदर रहना होता है। औरतें स्कूल-कॉलेज जाती हैं, ऑफिस जाती हैं, अपने पतियों की प्रतिपालिका होती हैं। और हाँ, वरों के द्वारा किसी बात का विरोध करने पर उनकी ठुकाई भी करती हैं। पत्नी को ऑफिस जाना है, समय पर खाना तैयार रहता है, कपड़े धुले और प्रेस रहते हैं, बच्चों का पालन-पोषण सही ढंग से होता है और घर में भी करीनेपन की कमी नहीं रहती। अर्थात् वर पूर्णत: आदर्श पत्नीव्रत रहते हैं। अपने यहां कुछ दिन पहले तक 'सती' होने की परंपरा थी। लेकिन अभी तक ज्ञात नहीं हुआ है कि उनके यहाँ पति 'सता' (?) होते हैं कि नहीं। आप अपनी पत्नियों पर अत्याचार नहीं कर सकते, नारी-मुक्ति आन्दोलन की तलवार माथे पर लटकती रहती है। उधर भी वर-मुक्ति आन्दोलन जैसी कोई संस्था काम कर रही है, इस बात की जानकारी नहीं हो सकी है। हाँ, एक बात की पक्की जानकारी है कि इधर का वर-पक्ष कन्या-पिता की धोती और पगड़ी उतार लेने को तैयार रहता है पर उनके यहाँ का कन्यापक्ष दहेज के लिए वर-पक्ष को जलील नहीं करता। जो हममें है सो उनमें नहीं है और जो उनमें है वह पूरे विश्व में नहीं है। लोक संस्कृतियाँ हमारी आधुनिकता के लिए ओछी है। परन्तु वे; उसकी महत्तम संप्रतीति पर मुग्ध हैं। हम परिवर्तनवादी हैं, वे अपनी पारंपरिकता को जीवन शैली का सर्वोत्तम अंग मानते हैं। आप कहेंगे-'हम उदारवादी हैं.....ब्रॉड माइन्डेड। वे कंजरवेटिव' नहीं। कतई नहीं। आपने घुटन और मरण के द्वार खोले हैं, उन्होंने जीवन को संजीदगी दी है। आपने हृदय से हृदय के बीच की दूरी कायम कर दी है, उन्होंने आज भी इसे निर्बाध रहने दिया है। अच्छा होता यदि धोती लोलुप पिता-पुत्र को उस समाज में सांस्कृतिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेज दिया जाता तो वर-बाजार के शेयर और सट्टे लुढ़क जाते। बिकवाली के जोर से चुनिंदा शेयर भी फीके रहते और शेष को सांप सूंघे रहता। मुक्ति का जयघोष करनेवाली लाइफ पार्टनरों को, स्वयंसेवी और समाज सेवी संस्थाओं को निश्चित रूप से यह व्यवस्था करनी चाहिए कि अब फिर से प्राइस इंडेक्स में उछाल नहीं हो। अन्यथा वधू-पिता से वर्द्धित दर पर डी.ए. की किश्त मांगी जाएगी और नहीं मिलने पर इंडियन ऑयल के सिलिंडर घरों में लीक होने लगेंगे तथा तेलशोधक कारखानों की पाइप वधुओं की देह तर करने लगेंगी।

'कोट-पैंट' और 'टाई' ने पीली धोती को, 'ताम-झाम' ने सादगी को, 'विशू' ने विनती को, पॉप म्यूजिक' ने मंगल गीतों को, 'डिसको' ने पारंपरिक लोक नृत्यों को और 'हैलो-हाय' ने करबद्ध नम्र-निवेदनों को मुख्यधारा से निकाल दिया है। रिश्ते 'टेंडर' बन गए हैं, आत्मिक लगाव अनुबंध हो गया है और कोर्ट की मुहर लगी डायवोर्स की पर्चियाँ वस्तु (?) पर मालिकाना हक देने और छीनने लगी हैं। लोकतंत्र है न? उसने अपने नागरिकों का पूरा ख्याल रखा है। बस! फुर्सत निकालकर, बहाने ढूंढ़कर कानून की नई-नई पर्चियाँ बनवाते जाइए। मस्ती से जीवन कट जाएगा! देर होने से असंतोष बढ़ता है। इसलिए जल्दी कीजिए। लोकमानस में उपनिषदों की अपौरुषेय रागिनियाँ यदि फिर से इदमित्यं का घोष करने लगीं अथवा यदि किसी ने फिर से 'भारत छोड़ो' का नारा दे दिया तो धन-जन-यौवन के बावजूद सुख-भोग के अरमान अधूरे रह जाएंगे।

संपर्क : बदरीनाथ वर्मा लेन, मीठापुर, पटना-1

स्थापित-1994 **शुभम् डेकोरेटर्स** दूरभाष : 282488

विवाह, त्यौहार आदि समारोह के अवसर पर पंडाल, शामियाना, कुर्सी, टेबुल, दरी, कॉफी, मशीन, बर्तन, विडियोग्राफी, कूक वगैरह उचित भाड़े पर उपलब्ध।

व्यवस्थापक : संजय कुमार सिंह/परमेश्वर प्र. सिन्हा

पोखरण का परमाणु परीक्षण : डॉ. कलाम का कमाल

रा. वि. प्रतिनिधि

1974 के बाद 11 एवं 13 मई, 1998 को पोखरण के पाँच परमाणु परीक्षण सही मायने में दुनिया का पहला पूर्णरूपेण स्वदेशी प्रतिभा का कमाल है । इसके पूर्व दुनिया के तमाम परमाणु शक्ति वाले ब्रिटेन, फ्रान्स, रूस, चीन, कोरिया, अमेरिका, पाकिस्तान तथा इजरायल जैसे देशों में से किसी ने भी अपने ही देश की प्रतिभा के बल पर विज्ञान एवं इसकी टेक्नोलॉजी को अपने देश में विकसित नहीं की । भारत ने पाचवें दशक के मध्य से ही इस टेक्नोलॉजी को विकसित करने का काम प्रारम्भ कर दिया था । इस परमाणु परीक्षण का श्रेय मुख्य रूप से भारत के दो वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम तथा चिदम्बरम को जाता है । वैसे पहले दौर में परमाणु वैज्ञानिक डॉ. होमी भाभा, विक्रम साराभाई और राजा रमन्ना जैसे अनेक भारतीय वैज्ञानिकों का इस प्रक्रिया में बहुत मौलिक योगदान रहा है । इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि डॉ. कलाम और चिदम्बरम किसी भी विदेशी विश्वविद्यालय में जाकर नहीं पढ़े । योगीराज अरविन्द दर्शन के प्रशंसक डॉ. कलाम भारतीय दर्शन के भी अच्छे अध्येता हैं । इसलिए ऐसे भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियों पर सीना तानकर जयगान करने की आवश्यकता है । जिन देशों ने हमारी एक सफलता पर भौं सिकोड़कर धमकियां दे डाली वे यह भूल जाते हैं कि भारतीय प्रतिभाएं अप्रत्यक्ष रूप से उन देशों की सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक स्थिति मजबूत कर रही हैं । परीक्षण के बाद भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने वाले बिल क्लिंटन को यह पता होना चाहिए कि इसी भारत से हजारों हजार वैज्ञानिकों, चिकित्सकों एवं अभियन्ताओं से उनके देश की ताकत बढ़ी है । यदि भारतीय डॉक्टर एवं वैज्ञानिक रातों रात अमेरिका एवं ब्रिटेन छोड़ दें तो वहां के कई अस्पतालों एवं अनुसंधान केन्द्रों में ताले पड़ जाएंगे ।

आज हमारी असली चिन्ता यह होनी चाहिए कि जिन वैज्ञानिकों ने हमारे देश की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाया है उन वैज्ञानिकों को भारतीय समाज में सही स्थान मिले । परन्तु आज स्थिति यह है कि इंजीनियरिंग तथा मेडिकल में डिग्री प्राप्त करने के बाद लोग भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में जाना अधिक पसंद करते हैं क्योंकि युवकों को यह अहसास हो रहा है कि समाज में आई.ए.एस. का अधिक महत्व है । देखना यह है कि जय जवान, जय किसान के बाद अटल जी का जय विज्ञान का नारा कहीं मात्र नारा बनकर ही न रह जाये ।

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो

शक्ति सम्पन्न देश होकर शांति की बात करना ही कहीं अधिक कारगर होता है, जैसा कि अन्य प्रमुख शक्ति सम्पन्न देश कर रहे हैं । 'क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो' के सिद्धान्त के अनुरूप विश्व शांति और निरस्त्रीकरण की बात करना तभी शोभा देता जब भारत खुद शक्ति सम्पन्न हो । परमाणु परीक्षण के बिना यह संभव नहीं था । भारत जैसे तीसरी दुनिया के देश का छठे परमाणु शक्ति सम्पन्न देश के रूप में उभरना विकसित देशों को हजम नहीं हो पा रहा है । निर्बल रहकर किसी को शांति का पाठ पढ़ाना कुछ अटपटा-सा लगता है । **रक्षा सलाहकार अब्दुल कलाम का यह कहना शत-प्रतिशत सही है कि मिसाइलों से युद्ध के समय हथियार और शांति के समय फूल भेज सकते हैं ।** जहाँ तक अमेरिका, जापान तथा विश्व बैंक के द्वारा आर्थिक प्रतिबन्धों का प्रश्न है उसकी परवाह किए बिना हमें अपने देश में ही आर्थिक स्रोतों की तलाश कर देश को गौरवपूर्ण स्थान दिलाया जाना सदैव प्रशंसनीय कदम होगा । आखिर देश का सिर तभी ऊंचा होगा जब हम आर्थिक प्रतिबंध झेलकर किसी बाहरी शक्ति के समय झुकेंगे नहीं । इस संदर्भ में भारत के प्रतिरक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस का यह कहना सर्वथा ठीक ही है कि परमाणु हथियारों को सेना में शामिल किए बिना परमाणु सम्पन्न कहलाने का कोई तुक नहीं । पर यह भी सच है कि जिस देश की लगभग आधी आबादी घोर गरीबी में जी रही हो, जिसकी अनपढ़ आबादी अफ्रीका के सहारा क्षेत्र की आबादी से ढाई गुना अधिक हो, जिसके चार वर्ष से ऊपर के आधे से ज्यादा बच्चे कुपोषित हों और जिस देश के मानव विकास सूचकांक 174 देशों में श्रीलंका से भी पीछे 135 वां हो, वह क्या कभी महाशक्ति बनने की बात कर सकता है ? जहाँ तक सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने का सवाल है, इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने के बावजूद फ्रान्स और चीन ने परमाणु विस्फोट किए । इतना ही नहीं, चीन ने हाल में कहा है कि वह परमाणु परीक्षण कर सकता है । फिर परमाणु प्रतिबंध का क्या मतलब रह जाता है ? सन्धि में यह भी तय नहीं है कि परमाणु सम्पन्न देश कबतक अपने हथियारों को नष्ट करेंगे । रूस और अमेरिका ने सन्धि के बावजूद अबतक न तो उसकी पुष्टि की और न ही हथियारों में कटौती की है । ये पांच परमाणु सम्पन्न राष्ट्र अपने हथियारों की धार तेज करते रहें और विश्व के शेष देश उनकी दया पर जीएं, यह कैसा न्याय है । अमेरिका को वास्तविकता स्वीकार करनी चाहिए । स्वयं अमेरिकी सांसदों ने कहा है कि विश्व निरस्त्रीकरण पर एक समान दृष्टिकोण अपनाया जाना ही श्रेयष्कर होगा ।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी कहना था कि कायरता की हद तक अहिंसक नहीं होना चाहिए । इससे यह सत्य है कि केवल शक्तिशाली राष्ट्र बनकर ही भारत सही मायने में अपनी सुरक्षा कर सकता है । और साथ ही विश्वशांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है । यदि एक कायर और दुर्बल राष्ट्र के रूप में भारत शांति की माला फेरता रहे तो उसे न तो सम्मान मिल सकता है और न ही वह अपनी सुरक्षा कर सकता है । शांति की पक्षधरता करने के लिए यह आवश्यक है कि भारत अपनी परमाणु नीति का पुनर्मूल्यांकन करे ।

सुधीर रंजन

अनुच्छेद 356 और राज्य सरकारें

❒ डॉ. साधुशरण

महामहिम राष्ट्रपति द्वारा बिहार की राबड़ी देवी सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की सिफारिश को अस्वीकार करने के पश्चात् विवेचना की दृष्टि से बौद्धिक जगत को भारतीय संविधान के आपातकालीन प्रावधानों से सम्बन्धित अनुच्छेद 356पर चिन्तन और विचारमन्थन का मुद्दा मिल गया है। इसी सन्दर्भ में विद्वान लेखक डॉ. साधुशरण ने संविधान सभा में हुई बहसों, डॉ. भीमराव अम्बेडकर के आश्वासनों, सरकारिया आयोग की सिफारिशों तथा बोम्मई केस के निर्णयों आदि पर विस्तृत चर्चाएं की है इस लेख में। विश्वास है हमारे सुधी पाठकों को इस ज्वलंत विषय पर कुछ सोचने और समझने में सहुलियत होगी। **-प्रधान संपादक**

सरदार पटेल ने स्वतंत्रता के पूर्व के भारतवर्ष को देखा था, राष्ट्र के अतीत को इतिहास के माध्यम से पढ़ा था, विधि-मर्मज्ञ होने के कारण संविधान निर्माण में सक्रिय हिस्सा लिया था और नए राष्ट्र के संघात्मक ढाँचे की रक्षा की थी। अतः वर्तमान संदर्भ में अनुच्छेद 356 की व्याख्या समीचीन है।

अनुच्छेद 356 की पृष्ठभूमि : पच्चास से अधिक पृष्ठों में अंकित संविधान सभा के वाद-विवाद से इसका निहितार्थ एवं प्रयोजन स्पष्ट होता है। दिनांक 3 एवं 4 अगस्त, 1949 को दो दिनों तक संविधान निर्माताओं ने भारत सरकार अधिनियम, 1935 की धारा 93 एवं प्रान्तीय गवर्नरों की विशिष्ट शक्तियाँ प्रदान करनेवाला 1931 के जारी श्वेतपत्र की स्थितियों को अस्वीकार करने का साहस नहीं जुटाया। संघात्मक व्यवस्था की स्वीकृति एवं ईकाइयों (राज्यों) को स्वतंत्र और स्वायत्त बनाने के बीच की स्थिति में रखने का निर्णय संघ सूची, राज्यसूची एवं समवर्ती सूची के विषयों की संख्या एवं उनके विषय से भी भासित हो जाता है। विस्तृत सूची से भी शायद वे संतुष्ट नहीं थे। अतः अनुच्छेद 352, 356 और 360 का प्रावधान उन्होंने कर डाला। संविधान सभा के वाद-विवाद की शंकाओं को स्वतंत्र भारत में अनुच्छेद 356 के 106 बार के प्रयोग की विविधता उजागर करते हैं।

संविधान भारत के राष्ट्रपति को अनुच्छेद 352, 356 एवं 360 द्वारा कुछ विशेष अधिकार प्रदान करता है। वाह्य आक्रमण, राज्य में संविधान तंत्र का विफल होना और वित्तीय गंभीर संकट से निबटने के लिए उपयुर्क्त प्रावधान रखे गए हैं। अनुच्छेद 356 कहता है कि–

(1) यदि राष्ट्रपति को किसी राज्य के राज्यपाल के प्रतिवेदन पर या अन्यथा समाधान हो जाय कि ऐसी स्थिति पैदा हो गई है जिसमें उस राज्य का शासन संविधान के उपबंधों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है तो राष्ट्रपति उद्घोषणा द्वारा

(2) उस राज्य की सरकार के सब या

कोई कृत्य राज्यपाल या राज्य के किसी निकाय या प्राधिकारी में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सब या कोई शक्ति अपने हाथ में ले सकेगा,

(3) घोषित कर सकेगा कि राज्य के विधानमंडल की शक्तियाँ संसद के प्राधिकार के द्वारा या अधीन प्रयोक्तव्य होगी,

(4) वह ऐसे प्रासंगिक और अनुषंगिक उपबंध बना सकेगा जो कि राष्ट्रपति की उद्घोषणा के उपबंध को प्रभावी करने के लिए आवश्यक या वांछनीय दिखाई दे।

अनुच्छेद 356 का छह बार संशोधन हुआ है, इस पर गहन चिन्तन के लिए तमिलनाडु सरकार ने 22 सितम्बर, 1969 को पी.बी. राजमन्नार की अध्यक्षता में तीन सदस्यों की एक समिति का गठन किया था, स्वयं भारत सरकार ने मार्च, 1983 में न्यायमूर्ति आर. एस. सरकारिया की अध्यक्षता में तीन सदस्यों की एक समिति बनाई थी, न्यायालयों में इस अनुच्छेद से संबंधित अनेक मुकदमें हुए हैं। उच्चतम न्यायालय के नौ न्यायाधीशों की एक पीठ ने विस्तार से (300 पृष्ठों में) इस अनुच्छेद पर विचार किया एवं निर्णय दिए-किन्तु इस अध्याय पर पूर्ण विराम लगता नहीं प्रतीत होता है। बोम्मई केस (पारा 219) में न्यायालय ने कहा कि संविधान की विफलता संबंधी अवस्थाओं की सूची को विस्तार से बनाना संभव नहीं है, किन्तु मूल रूप से न्यायालय ने पाँच मानदण्ड निर्धारित किए : (1) बड़े पैमाने पर कानून-व्यवस्था या जन-व्यवस्था का भंग होना, (2) किसी राज्य सरकार के कृत्यों का बड़े पैमाने पर कुप्रबन्धन, (3) भ्रष्टाचार या राज्यसत्ता का दुरूपयोग, (4) राष्ट्रीय एकीकरण व राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरा या राष्ट्रीय विखंडन में मदद करना, उसके घात में रहना या स्वतंत्र संप्रभु राज्य का दावा करना और (5) संविधान के आधार पर काम का दिखावा करते हुए संविधान को विकृत करना या अनेकता पैदा करना या व्यक्तियों के बीच अश्रद्धा भरकर प्रजातांत्रिक सामाजिक संरचना को तोड़ना।

राष्ट्र में आपातकाल की उद्घोषणा और राज्य में राष्ट्रपति शासन-इन दोनों में अंतर है।

शेष पृष्ठ 49 पर

अधर में लटका महिला आरक्षण विधेयक

रा. वि. संवाददाता

आधुनिक उपभोक्तावादी समाज ने वेश बदलकर थोड़ी सभ्यता की चादर ओढ़कर औरतों को लगभग उपस्थिति में रखने का प्रयास किया है, जिसमें अर्द्धसामंती परिस्थितियों तथा संस्कारों में जी रही औरतें भी जी रही हैं। पूरे मानव समाज में महिलाओं की आबादी लगभग आधी होने के बावजूद भी वह शोषित है, पीड़ित है, हिंसा की शिकार है और हर पल विलुप्तता की राह पर अग्रसर है। औरतों का बहुत छोटा-सा हिस्सा काफी कीमत चुकाकर मर्दवाद के हाथों से विद्रोह कर पाया है। लेकिन मर्दवाद यह कैसे पसंद करे कि औरतें अब सिर्फ पंचायतों और जिला परिषदों में बैठकर ही नहीं, विधान सभाओं तथा संसद में बैठकर भी पूरे समाज के भाग्य के बारे में उसी अधिकार से फैसला करने लगे, जो अभी तक पुरुषों का विशेषाधिकार रहा है। पिछले सत्र में महिला आरक्षण विधेयक का संसद में पेश नहीं होना पुरुषों की इसी मानसिकता की परिणति है।

महिलाओं को आरक्षण देने की बात इसलिए की जा रही है कि विधायिका में उनका ठीक से प्रतिनिधित्व हो। इस सन्दर्भ में तब तो यह भी देखना लाजिमी होगा कि अनुसूचित जातियों की, अनुसूचित जनजातियों की, पिछड़े वर्गों की और अल्पसंख्यक महिलाओं की नुमाइंदगी भी ठीक से हो पा रही है या नहीं। अगर नहीं हो पा रही है तो इन वर्गों की महिलाओं का आरक्षण क्यों नहीं दिया जाना चाहिए ? महिलाओं के प्रतिनिधित्व की बात हो तो सभी महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। यह बात इसलिए की जा रही है कि हमारा समाज बंटा हुआ है और राजनीतिक दलों पर जिस तरह की ताकतों का आधिपत्य है, वह आप से छिपी नहीं है। इन तथ्यों के आलोक में कमजोर वर्गों की महिलाओं को आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए और यह तभी सुनिश्चित होगा जब हम कानून में ऐसा इंतजाम करेंगे। **जिस देश में न्यायमूर्ति की यह स्थिति हो कि अपने अनुसूचित जाति के सहकर्मी के स्थानान्तरण होने पर उनके कमरे को पवित्र करने के ख्याल से गंगाजल से धुलवाया जाता है तो, वह समाज मानसिक रूप से आज भी कितना बंटा हुआ है, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है।**

महिला आरक्षण विधेयक के स्थगित किए जाने के बाद महिला सांसद तथा देश की पढ़ी-लिखी अभिजात्य वर्ग की उदासी का सबब कोई अनजान नहीं है। क्या यह सच नहीं कि महिलाओं का एक बड़ा तबका जिनकी संख्या 75 प्रतिशत से कम नहीं, इस रस्साकसी से अनभिज्ञ अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी की जद्दोजहद में मशगूल है। इसलिए यदि उन बेजुबानों की जुबान और उनके हितों की अनदेखी कर उन्हें 'एक महिला समाज' का ही हिस्सा मानकर विधेयक पारित कर दिया जाता तो उनकी तीन चौथाई आबादी के साथ न्याय नहीं होता। जमाने से सताए शोषित, दलित, पीड़ित तथा पिछड़ों के साथ न्याय होना चाहिए। यह सच है कि महिलाओं के आरक्षण का सवाल पूरे महिला समाज के हितों से जुड़ा है किन्तु महिला समाज की विसंगतियों को नजरअंदाज करके उन्हें एक ही धरातल पर रखकर देखना बड़ी चालाकी से एक खास वर्ग के हितों को तरजीह देना होगा। **या यों कहें कि एक व्यापक समाज की महिलाओं के हक को कुछ थोड़ी-सी 'एलिट' वर्ग की महिलाओं की झोली में डाल देना होगा।** जो लोग यह कहते हैं कि पूरा महिला समाज एक है, वे दरअसल बेहद चालाक किस्म के लोग हैं। झाड़ू लगानेवाली तथा निचले एवं मध्य तबके की गृहिणी महिला और 'ब्यूरोक्रेट' महिला एक कैसे हो सकती है खासकर उस समाज में जहां जाति और अर्थ जैसी लोह दीवारें उन्हें विभाजित किए हों। इस बात का अन्दाजा सबको है कि 33 प्रतिशत आरक्षण में यदि कोटा न निर्धारित किया जाय तो संसद या विधान सभाओं में कौन महिलाएं पहुंचेगी ? अभिजात्य और दलित तबके की या गरीब मजदूर और पिछड़े तबके की।

एक विचार यह है कि मंडलवाद की वजह से पिछड़ी जातियों की जो राजनीतिक ताकतें बढ़ी हैं, उसे मौजूदा विधेयक के समर्थन से पिछले दरवाजे से महिला आरक्षण के नाम पर ऊँची जाति की संख्या बढ़ाकर बैलेंस करना चाहते हैं। इसे प्रायः सभी राजनीतिक दलों के पिछड़े सांसदों ने देर-सबेर अनुभव किया है। कांग्रेस की कार्यसमिति में भी एक प्रस्ताव पारित कर इस विधेयक में पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक महिलाओं के कोटे के लिए संशोधन लाने का पिछले दिनों मन बनाया गया। समता पार्टी के रेल मंत्री श्री **नीतीश कुमार** ने स्पष्ट कहा कि उनकी पार्टी महिला आरक्षण में पिछड़ा कोटे की पक्षधर है। रक्षामंत्री **जार्ज फर्नांडीस** ने तो अन्नाद्रमुक सुप्रीमो सुश्री जयललिता को भी इस मुद्दे पर 'साउन्ड' किया। और तो और स्वयं भाजपा के कल्याण सिंह तथा उमा भारती ने भाजपा सांसदों को गोलबंद कर अन्दर ही अन्दर प्रधानमंत्री को चेतावनी दे डाली कि यदि पिछड़ों का कोटा तय नहीं हुआ तो वे मंत्री पद छोड़ देंगे।

इस प्रकार महिला आरक्षण में पिछड़े कोटे की मांग को लेकर दलीय सीमाएं तोड़कर पिछड़ी जाति के सांसदों में जो एकजुटता बनी उससे प्रधानमंत्री भी अचंभित हैं। संसद के पिछले सत्र में राजद तथा सपा सांसदों के धरना देने पर अन्य दलों के सांसदों का मूकदर्शक बने रहना भी इस बात का संकेत दे रहा था कि वे लालू-मुलायम की मांग का मौन समर्थक हैं। सपा के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव का मानना है कि जो ताकतें मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किये जाने का विरोध कर ही थीं वहीं ताकतें **महिला आरक्षण विधेयक के नाम पर अल्पसंख्यक, दलित व पिछड़े वर्ग की महिलाओं को आगे न आने देने के लिए षडयंत्र कर रही हैं। उनके अनुसार भाजपा की यह साजिश है कि** विपक्ष के बड़े नेताओं के चुनाव निर्वाचन क्षेत्रों को महिलाओं के नाम पर आरक्षित कर दिया जाय ताकि विपक्ष के नेता लोक सभा पहुंच ही न पाएंगे और भाजपा अपने ढंग से बहुमत हासिल कर लेगी।

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि संसद के पिछले सत्र में जिस तरह से सपा और राजद के नेताओं के द्वारा कानूनमंत्री की मेज पर से महिला आरक्षण विधेयक की प्रति फाड़ डाली गयी तथा विधेयक को पेश नहीं होने दिया गया वह लोकतन्त्र के सिद्धान्त के अनुरूप नहीं कहा जाएगा और उसका श्रेय लालू-मुलायम की जोड़ी ने लिया पर यह सिर्फ उनके रोके नहीं रुका **यह बात अब किसी से छिपी नहीं है कि मर्द सांसदों का एक बड़ा हिस्सा इस विधेयक को पारित होते देखना नहीं चाहता था। तमाम पुरुषों सांसदों को यह खतरा अनुभव होने लगा था कि अगली बार हो सकता है उनकी ही सीट महिलाओं के लिए आरक्षित हो जाये। इसलिए वे क्यों अपने ही गले में फंदा डालने की मूर्खता करें।** विरोध तो पंचायतों में महिलाओं को आरक्षण देने के विधेयक का भी हुआ था, मगर उसे फिर भी हमारी संसद ने पारित कर दिया था। तब इसकी सीधी चोट मर्द सांसदों पर नहीं पड़ रही थी। लेकिन इस बार महिलाओं को आरक्षण देने की लड़ाई मात्र सांसद ही नहीं

लड़ रहे थे, बल्कि इस लड़ाई के पीछे मर्दवादी पुरुषों की बड़ी फौज भी थी जो यह मानती थी कि औरतों को इतनी 'छूट' देना ठीक नहीं । आखिर इसलिए तो रालोमो के मात्र 37 सांसदों के धरना देने पर सभी सांसद मौन साधे रहे । पुरुष वर्चस्व की लड़ाई थी जिसे मर्द क्यों हारते और क्यों औरतों के लिए आरक्षण की ज्ञात कालीन, खुद बिछा देते ? सांसद ही नहीं तमाम मर्दवादी मर्द यह समझ चुके हैं कि औरत वह 'जिन्न' है जो एक बार बोतल से निकला तो इसे बोतल में फिर से बंद करना असंभव होगा । औरतों को इस बीच जो आजादियाँ मिली भी हैं, उनपर मर्दवाद का सख्त पहरा है ।

इस सन्दर्भ में एक बात और गौर करने की है कि आखिर राजनीतिक दलों, सांसदों एवं पुरुष प्रधान समाज की नीयत साफ होती तो महिलाओं की लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभाओं तथा विधान परिषदों के चुनाव में प्रत्याशी बनाने से किसने रोका था । वरिष्ठ पत्रकार नीरेन्द्र नागर का तर्क भी युक्ति संगत दिखता है । उनका कथन है कि राजनीति के मैदान में जहाँ डिग्रियाँ पढ़ाई-लिखाई वोट नहीं दिलाती, वहाँ कोई जरूरी नहीं कि कोई आभा चतुर्वेदी किसी भगवती देवी को अपनी शिक्षा- दिशा एवं साधनसम्पन्नता के बल पर मात दे ही देगी । उदाहरण के तौर पर बिना किसी आरक्षण के भी पिछड़े और अल्पसंख्यक अपनी लोकतान्त्रिक राजनीति के बलबूते बिहार में 54 में से 27 सीटें ले आए और सवर्णों को लगभग उसका आधा यानी 14 सीटें मिलीं । इस प्रकार उ.प्र. में कुल 85 सीटों में पिछड़े वर्ग को 18 और अल्पसंख्यक को 6 यानी कुल 24 सीटें मिलीं । इसके मुकाबले सवर्णों को वहाँ 44 सीटें मिलीं क्योंकि सपा तथा बसपा का तालमेल नहीं था । यदि सपा के 28 प्रतिशत और बसपा के 20 प्रतिशत वोटों को मिला दिया जाय तो भाजपा के 36 प्रतिशत वोट काफी कम पड़ जाएंगे । यानी लोकतान्त्रिक राजनीति यहाँ पर अपनी स्वाभाविक दिशा में जा रही है । केवल नेताओं के अहं उसके सही प्रतिफलन में बाधा बन रहे हैं । राजनीतिक विश्लेषक का मानना है कि यदि कांशीराम मुलायम एक हो जायें तो भाजपा को वहाँ 10-15 से ज्यादा सीटें नहीं मिलने वाली है । **उनके इस तर्क में भी दम दिखता है कि महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित हो जाने के बाद भी तो वोट वही लोग देंगे जो आज भी देते हैं । जो लालू या मुलायम के कहने पर उनकी पार्टी के किसी पुरुष प्रत्याशी को विजयी बनाते हैं, वे उन्हीं के कहने पर किसी महिला प्रत्याशी को क्यों नहीं जिताएंगे ? आखिर कांति सिंह या फूलन देवी को किसने जिताया था ?** सवाल है तो केवल राजनीतिक दलों द्वारा प्रत्याशी बनाने का । तात्पर्य यह कि बिना आरक्षणों के भी पिछड़ा-दलित राजनीति अपना विकास कर सकती है, कर रही है । अब कोई भी दल पिछड़ों, दलितों एवं अल्पसंख्यकों को दरकिनार कर सत्ता नहीं पा सकता ।

अनुच्छेद 356 और राज्य सरकारें

आम धारणा है कि राज्य में बहुमत शासन का अर्थ ही है कि राज्य का शासन संविधान के उपबंधों के अनुसार चल रहा है । राज्य सरकारें एक ओर संविधान एवं बहुमत शासन को समानार्थी बताने पर बल देती है, वहीं दूसरी ओर केन्द्र सरकार अनुच्छेद 356 को संघ सूची का एक विषय मानकर प्रयोग करती रही है इन दोनों स्थितियों को संविधान एवं उच्चतम न्यायालय गलत एवं दोषपूर्ण मानता है ।

विगत अवधि में केन्द्र द्वारा अनुच्छेद 356 की 106 बार उद्घोषणा से राज्य सरकारें भयभीत रहती हैं कि केन्द्र स्थित सत्तासीन दल इसका दुरूपयोग कर सकता है । कांग्रेस शासन में कई निर्णय विवादास्पद हुए हैं, क्योंकि उसने धड़ल्ले से इसका प्रयोगकर दुरूपयोग भी किया है । इस देश में मूल्यों की गिरावट से एक प्रवृति यह देखी जा रही है कि संविधान की तथाकथित प्रबुद्ध नेता एक राजनीतिक दस्तावेज की तरह व्याख्या करने लगे हैं, अन्यथा उत्तर प्रदेश और बिहार की स्थिति को समान तुला पर रखने की भूल वे नहीं करते । विगत अवधि में राष्ट्रपति द्वारा उत्तर-प्रदेश में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश को केन्द्रीय मंत्रीमंडल के पास पुनर्विचार हेतु लौटाने से अनुच्छेद 356 के दुरूपयोग की एक संभावना को रद्द किया गया । पच्चास वर्षों में यह पहला एवं इकलौता उदाहरण था और इस अंकुश को सराहा गया । यह एक संविधान-सम्मत निर्णय था । यूँ, 1994 में एस.आर. बोम्मई केस में सर्वोच्च न्यायालय में कई दृष्टिकोणों से अबतक का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय हुआ । केन्द्र स्थित सत्तासीन दल की इच्छा को वस्तुनिष्ठता में निर्णय लेने संबंधी सीमाएं डाली गईं ।

अभी सर्वोच्च न्यायालय में विचार हेतु अन्य स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, क्योंकि कोई ऐसा मुकदमा अबतक दायर नहीं हो सका है जिसमें अनुच्छेद 356 की समस्त परिस्थितियों को विद्यमान रहने पर भी केन्द्र सरकार ने अपना दायित्व नहीं निभाया हो और सर्वोच्च न्यायालय को वैसी स्थिति में हस्तक्षेप करने का आग्रह किया गया हो । संभव है सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित पाँच मानदण्डों के घोर उल्लंघन की स्थिति में भी कोई केन्द्र सरकार अनुच्छेद 356 को ठंढे बस्ते में डालकर अपने संवैधानिक दायित्व के निर्वहन में असफल रह जाय ।

दूसरी स्थिति यह भी हो सकती है कि अनुच्छेद 356 की आत्मा संसद या विधानमंडलों के मात्र संख्याबल की तुला पर स्वीकार किया जा रहा हो । ऐसा होने से निर्वाचनों एवं निर्वाचन के उपरान्त सरकार बनाने या उसे कायम रखने के लिए निकृष्ट कार्य किए जायेंगे । तब राष्ट्रवासियों को संवैधानिक न्याय नहीं मिल सकेगा । यदि

पृष्ठ 46 का शेष

संख्याबल पर अतिशय रौद्र-गर्जना कर मात्र भौतिक बल का एहसास कराया गया तो जिसके हाथ में संख्याबल की लाठी होगी, भैंस भी मात्र उसी की होकर रह जायेगी ।

सर्वोच्च संवैधानिक दायित्वों वाले आसनों पर बैठे व्यक्तियों का यह एक परम पुनीत कर्तव्य बनता है कि राष्ट्र को न्याय का शासन देने में अपनी क्षमता का सदुपयोग करें । डी. डी. बसु ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा विकसित जिन दो सिद्धान्तों की चर्चा की है उनमें-

(a) The Court is the exclusive and final interpreter of all provisions of the conststitution, and

(b) The Court has the duty to make the ideals enshrined in the constitution a reality and to meet the ends of social change in a welfare society का उल्लेख किया है ।

यदि इसे स्वीकार किया जाय तो अनुच्छेद 356 को प्रभावी बनाने हेतु तथ्यात्मक आलोक में अभी और निर्णय लेने की संभावना बची हुई है । संभव है, राष्ट्रीय बहस के उपरान्त राष्ट्र कोई ठोस उत्तर ढूंढ सके ।

संपर्क : विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
आर.पी.एस. महाविद्यालय
जैतपुर, मुजफ्फपुर

योग : शरीर और मन के विकास का वैज्ञानिक साधन

❒ विद्यावाचस्पति डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव

आधुनिक यान्त्रिक-वैज्ञानिक युग में विभिन्न तनावों के बीच जीनेवाले शरीर और मन से रूग्ण मानव के लिए योग का अभ्यास परमावश्यक है । मन और शरीर एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । अन्तर केवल यही है कि मन सूक्ष्म है और शरीर स्थूल । स्त्री-पुरुषों को मन और शरीर से स्वस्थ रहने में योग बड़ी मदद करता है । महंगी से महंगी चिकित्सा और औषधि से जो रोग दूर नहीं होता, उसे यौगिक क्रिया निश्चित रूप से और बिना किसी आर्थिक व्यय के निर्मूल कर देती है ।

योगाभ्यास की विधि मनुष्य को बहिरन्तः स्वस्थ और प्रसन्न रखने की एक ऐसी प्राचीनतम वैज्ञानिक प्रणाली है, जहां अभी तक आधुनिक विज्ञान की पहुंच नहीं हो पाई है । सच पूछिए तो, योग विज्ञान का कोई विकल्प ही नहीं है । यह अपने-आप में एक स्वतन्त्र विज्ञान है और आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा- पद्धति में, व्यापक जन-स्वास्थ्य की दृष्टि से एक सफलतम पूरक चिकित्सा-पद्धति की श्रेष्ठतम भूमिका का निर्वाह कर रहा है । ज्ञातव्य है कि मनुष्य के स्वाभाविक रूप से शारीरिक और मानसिक विकास में योग से भिन्न कोई और चिकित्सा प्रणाली या विधि सहायक नहीं हो सकती । शरीर और मन के सामंजस्य और सर्वतोमुखी विकास के लिए यौगिक क्रियाएं रामबाण सिद्ध होती हैं ।

योग की साधना-प्रक्रिया में हठयोग सर्वाधिक उपयोगी और व्यावहारिक है । योग की जिस विधि से शरीर की नाड़ियों की विशुद्धि होती है, उसे ही हठयोग कहते हैं : 'नाडीविशुर्हिठयोग लक्षणम् ।' हठयोग का शारीरिक स्वास्थ्य से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, साथ ही इससे मन को शुद्ध करके उसे विकसित करने में भी समीचीन सहायता मिलती है । स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ या शुद्धमन का निवास होता है ।

योगशास्त्र सम्पूर्ण विश्व को भारत की गौरवपूर्ण देन है । भारतीय योगी हजारों वर्षों से इसका अभ्यास करते आ रहे हैं । जो लोग हठयोग से केवल आध्यात्मिक अभ्युदय की बात करते हैं : उनका ख्याल बिलकुल एकांगी है । हठयोग की क्रियाएं मूलतः शारीरिक ऊर्जा और मानसिक चेतना की उपलब्धि के लिए हैं । सामान्य से सामान्य स्त्री-पुरूष भी अपने शरीर को स्वस्थ और मन को प्रसन्न रखने तथा नीरोग जीवन जीने के लिए यौगिक क्रियाओं को अपनाकर उनसे लाभान्वित हो सकते हैं और अनुद्विग्न या तनावरहित गार्हस्थ्य-जीवन जी सकते हैं ।

आधुनिक प्रदूषणबहुल युग के स्त्री-पुरुष सामान्यतः पाचन-क्रिया के अतिरिक्त मुख्यतः रक्त संचार की क्रिया, रक्तचाप, श्वास, मूत्र, स्नायु, ग्रन्थि, हड्डी और मांसपेशी की प्रक्रियाओं में उत्पन्न विकृतियों से परेशान रहते हैं । इनसे विमुक्ति के लिए योगाभ्यास अधिक सुलभ और सहज उपाय है ।

आयुर्वेदशास्त्र की उक्ति है : 'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।' अर्थात नित्य कर्तव्यों के सम्पादन के माध्यमों में शरीर का पहला स्थान है । 'विष्णुपुराण' का वचन है : 'मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो : । अर्थात मनुष्यों के बन्धन या कष्ट में पड़ने और बन्धन से मुक्त होने में उनका मन ही कारण होता है । इसलिए, योगशास्त्र में जिन आठ अंगों या अष्टांग का वर्णन है, उनमें प्रारम्भ के चार-यम, नियम, आसन और प्राणायाम की प्रक्रिया शरीर के स्वास्थ्य से सम्बद्ध है और उत्तरार्द्ध के चार-प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की प्रक्रिया मन के विकास से अनुबद्ध है ।

योगशास्त्र में योगासन को सर्वव्याधि विनाशक कहा गया है । हठयोग में आसन और प्राणायाम की ही प्रधानता है । आसन से शरीर की शुद्धि या स्वस्थता और प्राणायाम से मानसिक शुद्धि या स्थिरता होती है । सिद्धासन के विषय में कहा गया है कि मिताहारपूर्वक शुभानुयासी होकर लगातार बारह वर्ष यदि केवल सिद्धासन का अभ्यास किया जाय तो, सिद्धियाँ प्राप्त होने लगती हैं और शरीर-स्थित बहत्तर हजार नाड़ियाँ निर्मल हो जाती हैं । योगासन बहुसंख्य हैं, परन्तु चौरासीआसन मुख्य हैं । इनमें भी सिद्धासन, पदमासन, सिंहासन और भद्रासन ये चार प्रमुख हैं, जिनमें सिद्धासन सर्वश्रेष्ठ है ।

प्राणायाम का वास्तविक फल है-चित्त या मन की उद्विग्नता, तनाव और चंचलता का निराकरण और उसकी एकाग्रता । प्राणवायु के चंचल होने से ही चित्त में चंचलता या उद्विग्नता आती है । प्राणायाम के अभ्यास से धीरे-धीरे चित्त में एकाग्रता आने लगती है । इसलिए, चंचल चित्त को एकाग्र करने का एकमात्र उपाय प्राणायाम का अभ्यास है । शास्त्र का निर्देश है :

चले वाते चलं चित्तं निश्चले निश्चलं भवेत् ।

योगी स्थाणु त्वमान्पोति ततो वायुं निरोधयेत् ॥

योग के विघ्नों में रोग प्रमुख है । रूग्णता की स्थिति में योगाभ्यास अनुकूल नहीं होता । किन्तु, आसन की स्थिरता के बाद विधिवत् प्राणायाम का अभ्यास करने से रोग उत्पन्न नहीं होता । स्थिर भाव से सुखपूर्वक बैठने की प्रक्रिया को ही महर्षि पतंजलि ने 'आसन कहा है : 'स्थिरं सुख मासनम् ।' (योगसूत्र : साधनपाद) प्राणायाम से योग का मार्ग निर्विघ्न रहता है । अतः, आसन के समानान्तर ही प्राणायाम आवश्यक है ।

हठयोग में नाड़ी शोधन के लिए प्राणायाम मुख्य घटक है । प्राणायाम की परिभाषा में महर्षि तांजलि ने योगसूत्र में कहा है : 'श्वास प्रश्वास-योर्गति विच्छेद : प्राणायाम- : । (तथैव) अर्थात् श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति का विच्छेद या रूक जाना ही प्राणायाम है । बाहरी वायु का भीतर प्रविष्ट होना 'श्वास' है और भीतरी वायु का बाहर निकलना 'प्रश्वास' कहा जाता है ।

प्राणायाम में श्वास-प्रश्वास की निरन्तर होने वाली स्वाभाविक गति की तीन स्थितियाँ हैं-पूरक, कुम्भक और रेचक । श्वासपूर्वक वायु की गति का अभाव 'पूरक' प्राणायाम है, प्रश्वासपूर्वक वायु की गति का अभाव 'रेचक' प्राणायाम है और बाहरी एवं भीतरी दोनों वायुओं का संकोच या स्तम्भन 'कुम्भक' प्राणायाम है । प्राणायाम से बढ़कर और कोई तप नहीं है । जिस प्रकार सुवर्ण, रजत आदि धातुओं को अग्नि में तपाने से उनके मल जल जाते हैं, उसी प्रकार प्राणायाम के अभ्यास से

इन्द्रियों के मल या विकार नष्ट हो जाते हैं और प्रकाश या ज्ञान पर पड़ा हुआ आवरण क्षीण हो जाता है । महर्षि तांजलि ने 'योगसूत्र' में लिखा है : 'ततःक्षीयते प्रकाशावरणम् ।' (तथैव) ।

प्राणायाम का यह फल शारीरिक फल से भिन्न है । मुख्य फल तो 'धारणा' की योग्यता प्राप्त करना है । आसन और प्राणायाम के नियमपूर्वक अभ्यास से योगी का मन जब संस्कृत और दृढ़ हो जाता है, तभी वह 'धारणा' का अधिकारी होता है । चित्त की एकाग्रता अथवा चित्तवृति की किसी एक देश में स्थिति ही धारणा है : 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' । (महर्षि तांजलि : योगसूत्र, विभूतिपाद) यहाँ ध्यातव्य है कि प्राणायाम के बिना मन संस्कृत नहीं होता और मन के संस्कार के बिना धारणा नहीं बनती, अर्थात् चित्त दृढ़ अथवा एकाग्र नहीं होता । इस प्रकार शरीर की शुद्धि के लिए जहाँ आसन आवश्यक है, वहीं मन की शुद्धि और चित्त की दृढ़ता के लिए प्राणायाम अनिवार्य है ।

कुल मिलाकर, योग ऐसा विज्ञान है, जो मन को शरीर के परिवर्तनशील वातावरण के अनुकूल बनाता है । किसी भी शारीरिक रोग के उतार-चढ़ाव में मानसिक स्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है । 'योगवासिष्ठ' में लिखित परिभाषा के अनुसार योग शारीरिक और मानसिक अनुशासन की एक ऐसी वैज्ञानिक विधि है जो शरीर और मन को पूर्णतया नियन्त्रित करती है और दोनों में समत्व लाकर आत्मसन्तुलन उत्पन्न करती है (समत्वं योगउच्यंत'-गीता, 2.48) इससे स्पष्ट है कि शरीर और मन का तालमेल ही योग है । शरीर और मन की समता से उत्पन्न आत्मसन्तुलन समस्त नाड़ी-संस्थान ('नर्वस सिस्टम') के लिए अतिशय लाभदायक है । आसन के साथ प्राणायाम का नित्य सम्बन्ध शरीर और मन की नित्य यौगिक स्थिति का संकेतक है ।

योग भोजन-संयम की प्रेरणा देने के साथ ही कार्यशील रहने की क्षमता या शक्ति उत्पन्न करता है । मन और शरीर को पूर्णतया वश में रखता है । स्वस्थ शरीर में शुद्ध मन चेतना के उच्च स्तर पर पहुंचकर निचले स्तर की मानसिक क्रियाओं को नियन्त्रित करता है, जिससे निम्नगामिनी क्रियाओं के साथ निम्न मनोवृतियों का भी ऊर्ध्वारोहण हो जाता है ।

चेतना का ऊर्ध्वारोहण योग द्वारा प्राप्त शारीरिक और मानसिक विकास की ही उच्चतर भूमिका है । ऊर्ध्वारोहण का चरम विकास आत्मसाक्षात्कार में पर्यवसित होता है । अपने-आपको जान लेना ही आत्मसाक्षात्कार है । जिस मनुष्य को आत्मसाक्षात्कार अथवा आत्मज्ञान हो जाता है, उसका समस्त व्यवहार मर्यादित, नियत, उचित और परिमित हो जाता है । वह प्रत्येक स्थिति में 'युक्त', अर्थात् योग प्राप्त हो जाता है । 'युक्त (गीता 6.17) व्यक्ति के आहार-विहार, धर्म-कर्म, सोना-जागना आदि समस्त व्यापार मर्यादित हो जाता है । दूसरे शब्दों में कहें तो, उसका सबकुछ आत्माश्रित या ब्रह्ममय हो जाता है । वह हर प्रकार का कर्म करते समय, प्रत्येक अवस्था में अपने को ब्रह्म के साथ युक्त समझता है । वह जो कुछ भी करता है, यह जानकर करता है कि ब्रह्म ही उसकी आत्मा है, ब्रह्म ही उसका सर्वस्व है और वही उसके जीवन और कर्म का आधार है । इस प्रकार, मनुष्य स्वस्थ शरीर, शुद्ध मन और निर्मल आत्मा के विकास के साथ ब्रह्मतत्व से जुड़कर 'योग' शब्द को अक्षरशः अन्वर्थ करता है ।

सम्पर्क : पी.एन. सिन्हा कॉलोनी, भिखनापहाड़ी, पटना-6, दूरभाष : 665444

राष्ट्रीय विचार पत्रिका
सदस्यता / ग्राहक प्रपत्र

हम राष्ट्रीय विचार पत्रिका के वार्षिक दो वर्षीय/पाँच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्य बनाना चाहते हैं । वार्षिक/दो वर्षीय/पाँच वर्षीय/दस वर्षीय/आजीवन सदस्यता शुल्क...........................रुपये मनीऑर्डर/बैंक डाफट/चेक सं. ....दिनांक..................................भेज रहे हैं ।

हमारी प्रति निम्न पते पर भेजें ।

नाम.. पता..

....पिन कोड.......................

✂ इसे यहाँ से काटें

सदस्यता शुल्क

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

		भारत	विदेश
वार्षिक	-	50 रुपये	3 डॉलर
दो-वर्षीय	-	100 रुपये	5 डॉलर
पाँच-वर्षीय	-	250 रुपये	10 डॉलर
दस-वर्षीय	-	500 रुपये	18 डॉलर
आजीवन	-	1000 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	5000 रुपये	500 डॉलर

बैंक ड्रफ्ट/चेक 'राष्ट्रीय विचार मंच' के नाम देय होगा ।

राष्ट्रीय विचार मंच

		भारत	विदेश
वार्षिक	-	25 रुपये	3 डॉलर
आजीवन	-	500 रुपये	50 डॉलर
संरक्षक	-	1000 रुपये	100 डॉलर
संपोषक	-	2000 रुपये	200 डॉलर

प्रधान संपादक/संपादक /सह संपादक

राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 दूरः-0612 -228519, बिहार भारत

केरल के एक कम उम्र के कथाकार की कहानी

रावि प्रतिनिधि

केरल के एक 9 वर्षीय कथाकार अभिमन्यु की कथा निराली है । इतनी कम उम्र में वह बच्चों की पत्रिका 'मेइलपीली' का न केवल संपादक है बल्कि एक कहानीकार और प्रतिभाशाली अभिनेता भी । इसकी लघुकथाओं का एक कहानी संग्रह हाल में ही प्रकाशित हुआ है । इसे नृत्य नाटक कथकली से बेहद लगाव है । विद्वानों ने इसके 24 पृष्ठों के कथा-संग्रह को मुक्त कंठ से सराहा है । इस संग्रह के विषय वस्तु, शैली तथा शब्द चयन आदि अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं ।

उदीयमान इस बालक के पिता श्री विनय कुमार भी केरल के एक प्रख्यात लेखक हैं । इनका कहना है कि विलक्षण प्रतिभा के धनी इस बालक ने अपनी प्रथम कहानी उस समय लिखी थी जब वह पहली कक्षा का छात्र था । उन्होंने बताया कि झूठ बोलने की कला में अभिमन्यु को जबरदस्त महारत हासिल है । उसकी ज्यादातर कहानियां वस्तुतः झूठ का हसीन सृजन है । पिता के द्वारा संजोयी सारी पुस्तकों को इस बालक अभिमन्यु ने पढ़ डाला है । लापरवाह किस्म का यह बालक जल्द ही गुस्से में आ जाता है । किसके जैसा बनने का सवाल पूछने पर वह छूटते ही जवाब देता है-अपने जैसा । अरुंधती राय की तरह प्रतिष्ठा परक पुरस्कार की उसे ख्वाहिश नहीं बल्कि मलयालम साहित्य के संस्थापक के नाम पर स्थापित 'एझुत्चैचन' पुरस्कार से सम्मानित होना वह चाहेगा जो प्रति वर्ष मलयालम के सर्वश्रेष्ठ लेखक को दिया जाता है ।

भारतीय भाषा सम्मेलन का अधिवेशन सरकारी कामकाज में हिन्दी को अपनाएं

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना के सभागार में विगत 5 अक्टूबर'98 को आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन, नई दिल्ली की बिहार शाखा के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए बिहार के राज्यपाल श्री सुन्दर सिंह भंडारी ने कहा कि भारतीय भाषा को प्रतिष्ठापित करने का सवाल स्वाभिमान के साथ जुड़ी हुई चीज है । यह दुर्भाग्य की बात है कि आज समाज में 'डिस्टिक्ट क्लास कांशसनेस' पैदा हो गया है जो मानसिक गुलामी का प्रतीक है । उन्होंने पुनः कहा कि सरकार अपने कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को अपनाए ।

इस अवसर पर मुख्यवक्ता भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ. शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव** ने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान तथा मोह नहीं रखनेवाला व्यक्ति भारतीय नहीं हो सकता । महर्षि वाल्मिकी जन्म दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. हरिवंश लाल ने कहा कि भारतीय भापा सम्मेलन का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाना और विभिन्न भाषाओं के पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ करना है इस अधिवेशन का राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार श्री जिया लाल आर्य तथा डॉ. पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा ने भी सम्बोधित किया ।

बिहार के राज्यकर्मियों के लिए फिटमेंट कमेटी की सिफारिशें

वर्तमान वेतनमान	अनुशंसित वेतनमान
775-1025	(ए) 2550-55-2660-3200
	(बी) 2610-60-3150-65-3540
800-1150	(ए) 2610-60-3150-65-3540
	(ब) 2650-65-3300-70-4000
825-1200	2750-70-3800-75-4400
950-1400	3050-75-3950-80-4590
950-1500	3050-75-3950-80-4590
975-1540	3200-85-4900
1200-1800	4000-100-6000
1320-2040	4000-100-6000
1400-2300	4500-125-7000
1400-2600	5000-150-8000
1500-2750	5000-150-8000
1600-2780	5000-150-8000
1640-2900	5500-175-9000
1800-3330	5500-175-9000
2000-3500	6500-200-10500
2200-4000	8000-275-13500
2400-4150	8000-275-13500
3000-4500	10000-325-15200
3700-5000	12000-375-16500
4100-5300	14300-400-18300
4300-5550	14300-400-18300
4500-5700	14300-400-18300
5100-6300	16400-450-20000

शुभकामनाओं के साथ :

☎228519

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001

सूचनाओं से भरपूर तथा बिहार के कुर्मी समाज पर अद्यतन जानकारी हासिल करें, अब आधी से भी कम कीमत यानि मात्र 30 रुपये में **''बिहार के कुर्मी''** (निर्देशिका) खरीदकर या मनीआर्डर भेजकर ।

संपर्क करें :

एस. आर. पटेल, व्यवस्थापक

राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति समारोह का आयोजन

रावि प्रतिनिधि

विगत 3 अक्टूबर, 1998 को जगत जननी सीता की जन्म-स्थली सीतामढ़ी (बिहार) के देहाती क्षेत्र रून्नी सैदपुर स्थित उच्च विद्यालय के प्रांगण में **अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति विकास संस्थान, जबलपुर (म.प्र.) एवं विकास भारती, रून्नी सैदपुर (बिहार)** के संयुक्त तत्वावधान में **राष्ट्रीय साहित्य संस्कृति समारोह** का आयोजन किया गया। यह आयोजन चार सत्रों में सम्पन्न हुआ।

प्रथम सत्र के समारम्भ समारोह का उद्घाटन विद्यादायिनी वीणापाणी सरस्वती की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली के राजभाषा उपनिदेशक श्री सोमदत्त शर्मा जी ने जो समारोह के मुख्य अतिथि भी थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह को गौरवान्वित कर रहे थे कविवर पाण्डेय आशुतोष, डॉ. वी. सच्चिदानन्द, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा तथा शिवनारायण यादव। प्रारंभ में मान्य अतिथियों का स्वागत किया विकास भारती के सचिव श्री ईश्वर देव सिंह ने। संस्थान के महानिदेशक डॉ. रवीन्द्र शुक्ला (जबलपुर) ने समारोह की अध्यक्षता की।

इस सारस्वत समारोह में हिन्दी साहित्य के समर्पित जिन दो हस्ताक्षरों को शॉल तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया उनमें भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा श्रीमती मृदुला सिन्हा तथा जन संवेदनाओं की त्रैमासिक पत्रिका आज की कविता के संपादक डॉ. गिरिजाशंकर मोदी हैं। श्रीमती मृदुला सिन्हा ने मिथिला की बेटी तथा बहु होने में अपने को गौरवान्वित महसूस करती हुई अपने उद्गार इन पंक्तियों से व्यक्त किए-

सम समता सम्मान चाहिए/भीख नहीं अधिकार चाहिए, नारी को नारी रहने दो/नारी को सम्मान चाहिए। इसी प्रकार डॉ. गिरिजाशंकर मोदी के उद्गार की पंक्तियाँ-रेत है तो पास ही होगी नदी......। श्रोताओं की संवेदनाओं को कुरेदी। इस सत्र में मंच का सफल संचालन किया संस्थान की महासचिव डॉ. आशा शुक्ला ने अपनी ओजपूर्ण शैली में। सच तो यह है कि उन्होंने अपनी वाणी के जादू से श्रोताओं को बाँधे रखा।

इस अवसर पर संस्थान के केरल इकाई के संयोजक तथा हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. ए. जे. अब्राहम की लिखी पुस्तक नैतिक मूल्य परख एवं सुझाव, स्थानीय पत्रिका 'वर्तिका' तथा श्री अमरनाथ मेहरोत्रा के कहानी-संग्रह का लोकार्पण क्रमशः सुपरिचित नवगीतकार राजेन्द्र प्र. सिंह, डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह, पर्यावरण विशेषज्ञ तथा जबलपुर के चर्चित साहित्यकार श्री संजीव सलिल के कर कमलों द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री सोमदत्त शर्मा ने इस बात को लेकर अतिप्रसन्न थे कि समारोह का नारा था 'चलो गांव की ओर'। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि लोगों को यदि संस्कार, सभ्यता, संस्कृति, अतीत का गौरव, रीति-रिवाज देखना है तो गांवों में जायें। जहाँ के लोगों में न तो छल है और न कपट। इसीलिए तो गांधी जी ने कहा था-'भारत की आत्मा गांवों में बसती है।' नवयुवकों का चरित्र-निर्माण, लोगों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करना तथा समाज की कुवृतियों पर विजय पाना ही हम साहित्यकारों का उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने चेतावनी देते हुए पुनः कहा कि साहित्य को व्यापार मत बनने दो, अपनी लेखनी से ग्रामीणों की आवाज लिखो, धनिया, झुनिया के दुःख-दर्द लिखो। डॉ. शुक्ला ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि लोगों के विचार में बदलाव हो, ऐसा प्रयास हम साहित्यकारों को करना चाहिए। मूल भारतीय की संस्कृति की झलक हमारी रचनाओं से मिलनी चाहिए। जो हम करें पूरी ईमानदारी से करें ताकि समाज को प्रेरणा मिल सके। प्रथम सत्र के अन्त में विभिन्न प्रतियोगिता के विजेता दस बच्चे-बच्चियों को पुरस्कृत किया गया। धन्यवाद ज्ञापन की औपचारिकता निभाई श्री विमल कुमार परिमल ने।

सहारोह के दूसरे सत्र में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसका विषय था "राष्ट्रीय कविता : तब और अब"। इस विचार संगोष्ठी में 'आज की कविताएं के संपादक डॉ. गिरिजा शंकर मोदी तथा 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर ने उक्त विषय पर अपने आलेख पढ़े। स्वाधीनता संग्राम के वक्त वंकिम, तिलक, 'निराला', महादेवी, पंत, गुप्त, दिनकर, 'नेपाली', बेनीपुरी, रूद्र, सुभद्रा आदि के सरल, सुबोध राष्ट्र गीतों की चर्चा करते हुए श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि उनके गीत आजादी के दीवानों के कंठहार तो थे ही, वे स्फूर्ति व जोश पैदा करने वाले थे। 'शहीदों की टोली निकली', 'सुजलां सुफलां आदि गीत परिवेश में गूंजते रहे। पर आज की कविताओं में राष्ट्र के प्राणों की न तो वास्तविक धड़कन और जन-आकांक्षाओं की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है और न यह राष्ट्र की नब्ज बन पा रही है।

नरकटियागंज के सशक्त कथाकार श्री राजेन्द्र सिन्हा जनवादी कवियों पर कड़ा प्रहार करते हुए उन्होंने खेद प्रकट किया कि अब कविता को भी राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय में बांट कर इसे भक्ति-रस, वीर-रस, श्रृंगार-रस आदि से दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रारम्भ में संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्र. सिंह ने विषय प्रवर्तन करते हुए विस्तार से भाषा, साहित्य, कविता आदि के इतिहास तथा उसके क्रमिक विकास की चर्चा की। इसके मुख्य अतिथि थे बिहार के आरक्षी उपमहानिरीक्षक श्री विनोद मणि दिवाकर। विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, श्री सोमदत्त शर्मा, डॉ. उपाध्याय तथा डॉ. अब्राहम ने भी विषय पर बालते हुए अपनी कविताएं सुनाई। मंच का संचालन किया भारत सरकार, प्रकाशन विभाग के श्री राकेश रेणु ने।

समारोह के तीसरे सत्र में स्थानीय नेहरू युवा केन्द्र के सौजन्य से उसके कलाकारों द्वारा विविध रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। पटना के श्री राजकुमार प्रेमी ने भी हिन्दी, मगही तथा भोजपुरी में अपने गीत सुनाए। संचालन किया नेहरू युवा केन्द्र के श्री चौधरी जी ने।

चतुर्थ सत्र में रात बारह बजे से एक भव्य कवि सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जो सुबह पाँच बजे तक चला। देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे जिन कवियों ने सुधी श्रोताओं को अपने गीतों, गज़लों एवं अपनी कविताओं का सुधा-रस-पान कराया उनमें सर्वश्री सोमदत्त शर्मा, राकेश रेणु (दिल्ली), डॉ. मुनिलाल उपाध्याय 'सरस' (बस्ती), डॉ. मेहता नगेन्द्र सिंह, चन्द्रप्रकाश माया, वासुदेव मिश्र, राजकुमार प्रेमी (पटना), पाण्डेय आशुतोष, ऋषिकेश (बगहा), डा. ए.जे. अब्राहम (केरल), डॉ. आई.ए. सिद्दिकी नाजिब (गाजीपुर), डॉ. गिरिजाशंकर मोदी (बांका), डॉ. रजी अहमद, श्रीमती मोहिनी सिन्हा 'आशा' (इलाहाबाद), डॉ. राम लखन राय (समस्तीपुर), डॉ. हीरालाल सहनी, शेखर श्रीवास्तव (दरभंगा) आदि का नाम उल्लेखनीय है। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता जहाँ सुपरिचित कवि पाण्डे आशुतोष ने की वहीं प्रारम्भ में संचालन किया डॉ. आई.ए. सिद्दिकी ने तथा बाद में डॉ. आशा शुक्ला ने।

सब मिलाकर यह कहा जा सकता है कि देहाती क्षेत्र में इस तरह लगातार बीस घंटे तक साहित्यक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन न केवल सराहनीय है वरन् अनुकरणीय भी। राष्ट्रीय विचार पत्रिका की ओर से आयोजक द्वय के सिरमौर डॉ. विनोद कुमार सिन्हा तथा डॉ. आशा शुक्ला को इस आयोजन के लिए बधाई तथा इसकी सफलता को अमलीजामा पहनाने वाले रून्नी सैदपुर के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी श्री शिवनारायण यादव को तहे दिल से धन्यवाद।

–हीरालाल सहनी

केरल के एक कम उम्र के कथाकार की कहानी

रावि प्रतिनिधि

केरल के एक 9 वर्षीय कथाकार अभिमन्यु की कथा निराली है । इतनी कम उम्र में वह बच्चों की पत्रिका 'मेइलपीली' का न केवल संपादक है बल्कि एक कहानीकार और प्रतिभाशाली अभिनेता भी । इसकी लघुकथाओं का एक कहानी संग्रह हाल में ही प्रकाशित हुआ है । इसे नृत्य नाटक कथकली से बेहद लगाव है । विद्वानों ने इसके 24 पृष्ठों के कथा-संग्रह को मुक्त कंठ से सराहा है । इस संग्रह के विषय वस्तु, शैली तथा शब्द चयन आदि अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं ।

उदीयमान इस बालक के पिता श्री विनय कुमार भी केरल के एक प्रख्यात लेखक हैं । इनका कहना है कि विलक्षण प्रतिभा के धनी इस बालक ने अपनी प्रथम कहानी उस समय लिखी थी जब वह पहली कक्षा का छात्र था । उन्होंने बताया कि झूठ बोलने की कला में अभिमन्यु को जबरदस्त महारत हासिल है । उसकी ज्यादातर कहानियां वस्तुतः झूठ का हसीन सृजन है । पिता के द्वारा संजोयी सारी पुस्तकों को इस बालक अभिमन्यु ने पढ़ डाला है । लापरवाह किस्म का यह बालक जल्द ही गुस्से में आ जाता है । किसके जैसा बनने का सवाल पूछने पर वह छूटते ही जवाब देता है-अपने जैसा । अरूंधती राय की तरह प्रतिष्ठा परक पुरस्कार की उसे ख्वाहिश नहीं बल्कि मलयालम साहित्य के संस्थापक के नाम पर स्थापित 'एझूवैचन' पुरस्कार से सम्मानित होना वह चाहेगा जो प्रति वर्ष मलयालम के सर्वश्रेष्ठ लेखक को दिया जाता है ।

भारतीय भाषा सम्मेलन का अधिवेशन सरकारी कामकाज में हिन्दी को अपनाएं

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना के सभागार में विगत 5 अक्टूबर'98 को आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन, नई दिल्ली की बिहार शाखा के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए बिहार के राज्यपाल श्री सुन्दर सिंह भंडारी ने कहा कि भारतीय भाषा को प्रतिष्ठापित करने का सवाल स्वाभिमान के साथ जुड़ी हुई चीज है । यह दुर्भाग्य की बात है कि आज समाज में 'डिस्टिक्ट क्लास कांशसनेस' पैदा हो गया है जो मानसिक गुलामी का प्रतीक है । उन्होंने पुनः कहा कि सरकार अपने कामकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को अपनाए ।

इस अवसर पर मुख्यवक्ता भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति **डॉ. शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव** ने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं के प्रति सम्मान तथा मोह नहीं रखनेवाला व्यक्ति भारतीय नहीं हो सकता। महर्षि वाल्मिकी जन्म दिवस पर आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. हरिवंश लाल ने कहा कि भारतीय भाषा सम्मेलन का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को सम्मानजनक स्थान दिलाना और विभिन्न भाषाओं के पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ करना है इस अधिवेशन का राज्य निर्वाचन आयुक्त, बिहार श्री जिया लाल आर्य तथा डॉ. पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा ने भी सम्बोधित किया ।

बिहार के राज्यकर्मियों के लिए फिटमेंट कमेटी की सिफारिशें

वर्तमान वेतनमान	अनुशंसित वेतनमान
775-1025	(ए) 2550-55-2660-3200 (बी) 2610-60-3150-65-3540
800-1150	(ए) 2610-60-3150-65-3540 (ब) 2650-65-3300-70-4000
825-1200	2750-70-3800-75-4400
950-1400	3050-75-3950-80-4590
950-1500	3050-75-3950-80-4590
975-1540	3200-85-4900
1200-1800	4000-100-6000
1320-2040	4000-100-6000
1400-2300	4500-125-7000
1400-2600	5000-150-8000
1500-2750	5000-150-8000
1600-2780	5000-150-8000
1640-2900	5500-175-9000
1800-3330	5500-175-9000
2000-3500	6500-200-10500
2200-4000	8000-275-13500
2400-4150	8000-275-13500
3000-4500	10000-325-15200
3700-5000	12000-375-16500
4100-5300	14300-400-18300
4300-5550	14300-400-18300
4500-5700	14300-400-18300
5100-6300	16400-450-20000

शुभकामनाओं के साथ :

सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन

☎228519

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001

सूचनाओं से भरपूर तथा बिहार के कुर्मी समाज पर अद्यतन जानकारी हासिल करें, अब आधी से भी कम कीमत यानि मात्र 30 रुपये में **"बिहार के कुर्मी"** (निर्देशिका) खरीदकर या मनीआर्डर भेजकर ।

संपर्क करें :

एस. आर. पटेल, व्यवस्थापक

'एड्स वेश्यावृति का परिणाम'

-डॉ. भागवत प्रसाद, अप्रवासी भारतीय चिकित्सक

जब कोई अप्रवासी भारतीय पैंतालीस साल तक अपनी जिन्दगी इंगलैंड और अमेरिका में गुजारने के बाद भी अपनी भारतीय नागरिकता न छोड़े तथा तकरीबन प्रतिमाह 20-25 हजार रुपये के बृद्धापेन्शन से वंचित रहना पसन्द करे तो इसका अर्थ है कि उसके दिल में कहीं-न-कहीं भारत की मिट्टी से प्यार अवश्य है । यही है भारतीय संस्कृति की विशेषता । पश्चिमी देशों में तामझाम तथा आधुनिक युग की सारी सुख-सुविधाएं भले मौजूद हों पर भारत की सोंधी मिट्टी की गंध अप्रवासी भारतीयों को यहाँ खींच ही लाती है ।

बिहार राज्य के नालन्दा निवासी डॉ. भागवत प्रसाद अमेरिका में किडनी के चर्चित चिकित्सक हैं जिन्हें अपनी मातृभूमि की पवित्र धरती से इतना लगाव है कि वे प्राय: प्रति वर्ष अपनी जन्मभूमि में आकर इसकी खुशबू से विभोर हो जाते हैं । पिछले 22 अप्रैल '98 को भारत आगमन पर 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' की ओर से पाटलीपुत्र नगरी में डॉ. प्रसाद का अभिनन्दन किया गया तथा उसके अगले दिन पत्रिका के सहायक संपादक ने उनसे मिलकर अमेरिका तथा भारत के चिकित्सा क्षेत्र सहित अनेक मसलों पर पत्रिका के लिए उनके विचार जानने का प्रयास किया । अपने को भारतीय कहने में गर्व महसूस करने वाले डॉ. प्रसाद राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्के हिमायती हैं । आखिर तभी तो यहां की आम जनता में धड़ल्ले से 'पापा', 'बेबी', 'थैंक यू', 'सौरी' आदि अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग को उन्होंने ढोंग तथा ढकोसलाबाजी कहकर कटाक्ष किया । प्रस्तुत है यहाँ डॉ. प्रसाद के साथ सुधीर रंजन की बातचीत के कुछ अंश ।

23 तारीख की अहले सुबह पटना के लोहियानगर स्थित **डॉ. भागवत प्रसाद के समधी श्री सिद्धेश्वर प्र. सिंह** के निवास में जब उनसे मिलने ड्राइंग रूम में मैंने प्रवेश कर सादर नमस्कार किया तो चेहरे पर मुस्कुराहट लिए बड़ी विनम्रता से दोनों हाथों को जोड़कर उन्होंने अभिवादन स्वीकार करते हुए मुझे तथा पत्रिका के प्रधान संपादक को बैठने का इशारा किया । उम्र के छ: दशक पार करने के बाद भी उनके चेहरे पर जो रौनक तथा प्रसन्नता मैंने देखी तो मुझे लगा कि यह शख्स इतनी व्यस्तता के बावजूद तनाव से मुक्त है । औपचारिकतावश कुछ खेम-समाचार के बाद मैंने बिना कोई भूमिका के उनसे पूछा-**आपको चिकित्सा के क्षेत्र में आने के लिए किस चीज ने प्रभावित किया ?**

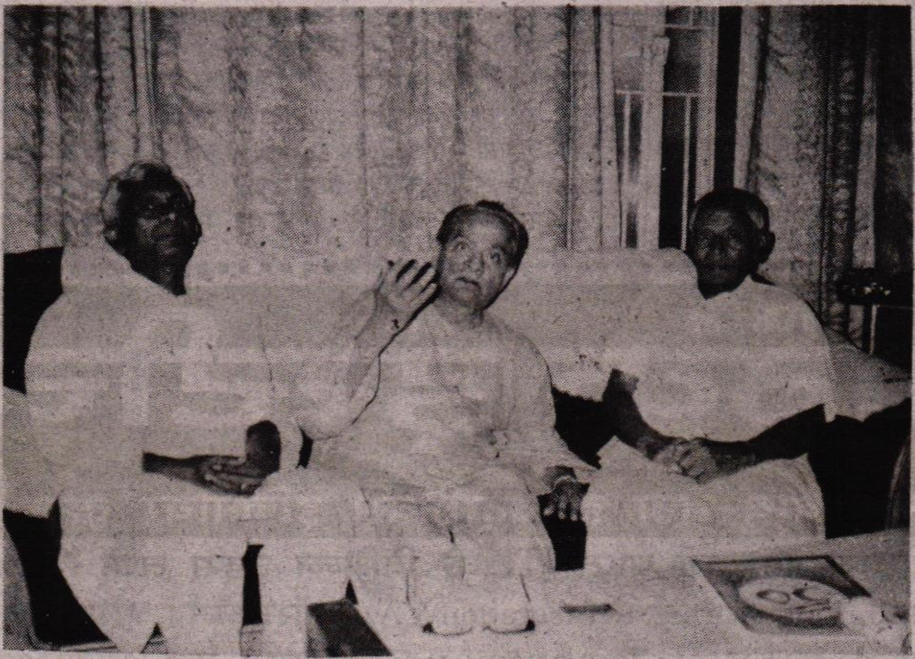

साक्षातकार में डॉ. भागवत प्रसाद प्रश्नों का उत्तर देते हुए (बीच में), उनके बाईं ओर पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर तथा दाईं ओर डॉ. प्रसाद के समधी श्री सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह

आन्तरिक इच्छा तथा डॉक्टर बनकर सामाजिक सेवा के अपने संकल्प को साकार करने की लालसा ने मुझे चिकित्सा के क्षेत्र में कदम बढ़ाने को बाध्य किया ।

चिकित्सा के क्षेत्र में आप कैसा महसूस करते हैं ?

काफी संतोष है मुझे इस पेशे में आकर क्योंकि जितनी मानव सेवा इस क्षेत्र में रहकर की जा सकती है उतनी किसी अन्य क्षेत्र में नहीं । पर बिहार के परिप्रेक्ष्य में चिकित्सा के हालात चिन्ताजनक हैं । यह मात्र व्यवसाय बनकर रह गया है ।

ऐसा कहा जाता है कि शाकाहारी की अपेक्षा मांसाहारी को हृदय रोग ज्यादा होता है । इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?

यह बिल्कुल सत्य है कि मांसाहारी शाकाहारी की अपेक्षा अधिक हृदय रोग से ग्रसित होते हैं । इसका आभास तो ऋषि-मुनियों को था । आधुनिक विज्ञान ने तो

इसे सिद्ध भी कर दिया है ।

एड्स एक खतरनाक रोग है इसे अब लोगों ने मान लिया है । भारतीयों में यह तेजी से फैलता जा रहा है । इसके निदान में आपके क्या सुझाव हैं ?

एड्स के मामले में भारत न. 1 पर है । पाँच वर्ष पूर्व पहला केस मुम्बई में मिला था । इसके कारणों में वेश्यावृति प्रमुख है । पिछले वर्ष के अन्त तक लगभग 30 लाख लोग भारत में एड्स के शिकार हो चुके हैं । इस रोग से ऐसी आग लगेगी कि भारत तबाह हो जाएगा जैसा कि अफ्रीका में हो गया है । यहाँ न तो तन है और न मन । जहाँ अमेरिका में एक एड्स के रोगी पर 75 हजार डॉलर प्रतिवर्ष खर्च किया जाता है । वहीं अगर भारत में इस हिसाब से खर्च किया जाय तो बिहार जैसे राज्य का सारा राजस्व उसी में समा जाएगा । **इसलिए भारत में यह रोग लाइलाज है । वेश्यावृति पर पूर्ण रोक ही इसका एकमात्र निदान है ।**

आप अपने जीवन में किस व्यक्ति या घटना से प्रभावित हुए हैं ?

गाँधीजी की हत्या से ।

आपकी प्रिय जगहें और पसंदीदा खाना क्या है ?

राजगृह भगवान बुद्ध के कारण प्रिय जगह है । मैं सभी प्रकार का खाना पसन्द करता हूँ । पांच वर्ष पूर्व तक मैं मांसाहारी था । अब मैं शाकाहारी हूँ ।

आप किस बात से ज्यादा डरते हैं ?

नैतिकताओं एवं मर्यादाओं की गिरावट से ।

क्या अमेरिका में भारतीय कहने पर आप गर्व महसूस करते हैं ?

हाँ, 45 वर्ष देश से बाहर रहने के बाद भी मेरी भारत की नागरिकता कायम है । मात्र अमेरिका की नागरिकता ग्रहण करने पर 20-25 हजार डॉलर देय पेन्शन मुझे मंजूर नहीं ।

किडनी की चिकित्सा में विशेषज्ञ आप अमेरिका में माने जाते हैं । किडनी की चिकित्सा में विशिष्टता प्राप्त करने की बात आपके दिमाग में कैसे आई ?

यह तो आन्तरिक इच्छा ही थी । इंगलैंड प्रवास के दौरान Adinmara Infirmary जो दुनिया का सबसे बड़ा किडनी Transfer का केन्द्र था उसमें जाने का मुझे अवसर मिला । वहाँ तीन साल के (Medical Postgraduation) चिकित्सा में स्नातकोत्तर करने के पश्चात् State University of New York में जाकर एम.डी. कर लिया । तबसे अमेरिका में ही किडनी की चिकित्सा करने लगा ।

भारतीय समाज पर आपके कुछ विचार जानना चाहूंगा ?

भारतीय समाज में ढोंग और ढकोसलाबाजी ज्यादा है । यहाँ धुलाई घर को White House बेटी को Baby कहने में गर्व का अनुभव करते है, यह दुखद स्थिति है । अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रेम न होकर अंग्रेजी का प्रयोग ढकोसलाबाजी है । Sorry या Thankyou का प्रयोग यहाँ खेसारी के खेत में भी होता है ।

आप बिहारवासी हैं । बिहार में चिकित्सा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों को आप किस रूप में लेते हैं ?

केवल इतना ही कह सकता हूँ कि यहाँ चिकित्सा नाम की कोई चीज नहीं है ।

बिहार के मुख्यमंत्री पद पर श्रीमती राबड़ी देवी प्रथम महिला मुख्यमंत्री के रूप में विराजमान हैं । आपकी कोई प्रतिक्रिया ?

बिहार में शासन नाम की कोई चीज नहीं है । यहाँ गुंडे, मवाली का ही राज है । लोकतंत्र ऐसे हाथों में रहने के कारण बिल्कुल मखौल बन गया है । **पत्रिका के प्रधान संपादक श्री सिद्धेश्वर जी ने अन्तिम प्रश्न पूछा-भारत में दम तोड़ती हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं तथा पाठकों की घटती मानसिकताओं के दौर में भी 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है । आपकी प्रतिक्रिया से अवगत होना चाहूंगा ।**

पत्रिका काफी सुन्दर, स्तरीय और पठनीय है । इसकी रचनाओं ने मुझे आकृष्ट किया है । राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह एक अहम भूमिका निभाएगी, ऐसी उम्मीद है । हिन्दी से दिलचस्पी होने के परिणामस्वरूप मैं अमेरिका में रहकर भी इसके संवर्द्धन तथा नियमित प्रकाशन के लिए कुछ करूंगा जो वक्त बताएगा ।

डॉ. भागवत प्रसाद के स्पष्ट विचार तथा हिन्दी के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान पर प्रधान संपादक तथा मैंने उनके प्रति आभार व्यक्त कर उनसे विदा लिया ।

Govt. Regd. 301/84-85 Phone : 353958

पाठक इंस्टीच्यूट

(भूतपूर्व वायु-सेना इलेक्ट्रानिक्स इंजिनीयर द्वारा संचालित)

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ITI के विभिन्न ट्रेड्स तथा Computer, Radio, T.V., V.C.R., House Wiring, Refrigeration & A/C ट्रॉसफॉर्मर, पंखा एवं मोटरवाइंडिंग, Electrical & Fitter Technicians कोर्स का प्रशिक्षण केन्द्र !

AIR FORCE, RAILWAY & POLYTECHNIC COACHING FACILITY ALSO AVAILABLE

25% discount for Girls and Handicapted Candidates

लुप्त होते छोटानागपुरी जंगल और उभरता पर्यावरण संकट

❑ डॉ. एच.एन. सिंह

विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति के साथ असंख्य ज्यादतियाँ की हैं। ऐसी ज्यादतियाँ आज भी जारी है। बिहार के दक्षिणी क्षेत्र में वनों के व्यावसायीकरण के कारण बर्बरता के साथ प्राकृतिक संसाधनों का दोहन हुआ है। वनवासियों पर इसका बड़ा विषादपूर्ण और निराशाजनक प्रभाव पड़ा। झारखण्ड के समक्ष सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण को लेकर है। परिस्थिति के तंत्र को लेकर है। इन्हें विनाश के ग्रास होने से बचाना क्या सहज है? दक्षिण बिहार के ही एक विद्वान प्राध्यापक डॉ. एच.एन. सिंह ने अपने इस विद्वतापूर्ण लेख में इस बात का खुलासा किया है।–प्रधान संपादक

बिहार का दक्षिणी पठारीय भाग छोटानागपुर कहलाता है। पहले इसके अन्तर्गत पाँच जिले हुआ करते थे–राँची, हजारीबाग, पलामू, धनबाद और सिंहभूम। अब इन्हें विभाजित करके बारह जिले बनाये गये हैं–राँची, लोहरदगा, गुमला, पलामू, गढ़वा, हजारीबाग, चतरा, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, पूर्वी सिंहभूम एवं पश्चिमी सिंहभूम।

सम्पूर्ण छोटानागपुर जंगलों एवं पहाड़ों से भरा हुआ होने के कारण व्यापक संदर्भ में इसे झारखण्ड नाम से भी अभिहित किया जाता है। सघन वन-जंगलों से आच्छादित होने के कारण बेतला और हजारीबाग जैसे राष्ट्रीय उद्यान वन्य-प्राणियों के आश्रय स्थल बने हुए हैं।

सन् 1991 की जनगणना के अनुसार सम्पूर्ण छोटानागपुर का भौगोलिक क्षेत्र 65,589 वर्ग किलोमीटर तथा वन्य क्षेत्र 21,035.58 वर्ग कि.मी. एवं जनसंख्या 1,72,77,202 है।

हमारे देश में पेड़-पौधों, पुष्प, पहाड़, पशु-पक्षी, जानवर, नदियाँ वन आदि को पूजने की एक सुदीर्घ और समृद्ध परम्परा रही है। महाकाव्यों और धार्मिक ग्रन्थों में वृक्षों को देवी-देवताओं के निवास-स्थल के रूप में स्वीकार किया गया है। प्राचीनकाल में वृक्ष लगाना और तथा उनकी रक्षा करना पुनीत काम माना जाता था। लोग वृक्षों की पूजा करते थे और सोचते थे कि अगर इन्हें काटेंगे या नष्ट करेंगे तो उसे दण्ड का भागी बनना पड़ेगा। इसी कारण हमारी प्राचीन संस्कृति को 'अरण्य' संस्कृति कहा गया है। उस समय मानव और प्रकृति के बीच पूर्णतः वैज्ञानिक तथा संतुलित सम्बन्ध कायम किया गया था। वनों का सम्बन्ध मानव से इतना तादात्म्य और मधुर रहा है कि इसे मां तक की संज्ञा दी गई। छोटानागपुरी जन-जीवन में प्रकृति और मानव के इस मधुर सम्बन्ध को करमा और सरहुल त्योहारों में दृष्टिगत किया जा सकता है। प्रकृति के प्रति अनुराग हमारे जीवन में इस प्रकार घर कर गया है कि हम प्रकृति से अलग अपने अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकते। प्रकृति के हम अविभाज्य

अंग हैं। जिस प्रकार शरीर और आत्मा का सम्बन्ध है उसी प्रकार मानव और प्रकृति का है।

परन्तु, दुखद बात यह है कि पिछले पचास वर्षों में स्वतंत्रता के बाद देश के वन-क्षेत्र में लगातार गिरावट आयी है और इस समय देश के कुल भू-भाग के 22.9 प्रतिशत के क्षेत्र में वन बच गये हैं जबकि 1952 की राष्ट्रीय वन-नीति में यह भी तय किया गया है कि वन-क्षेत्र को लगातार बढ़ाने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस नीति में यह भी कहा गया है कि पहाड़ी क्षेत्र का वन-क्षेत्र 60 प्रतिशत होना चाहिए। परन्तु, बिहार में 16.8 प्रतिशत वन-क्षेत्र रह गया है। यह बात छोटानागपुर के संदर्भ में भी घटित होती है। जो छोटानागपुर झाड़-जंगलों के लिए प्रसिद्ध था, आज वृक्षों और वनों की अन्धाधुन्ध कटाई के कारण अपनी प्राचीन वन्य-अस्मिता को निरन्तर खो रहा है।

छोटानागपुरी जंगलों के लुप्त होने के कारण है बढ़ती जन-संख्या, औद्योगीकरण, स्वार्थपूर्ति, विकास, आधुनिकीकरण, भौतिकवादी एवं भोगवादी प्रवृत्ति इत्यादि। इसके अतिरिक्त वन-पदाधिकारी, ठेकेदार और जनता भी जंगल लुप्त होने में मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं। विगत दशक में 'कोल्हान रक्षा संघ' एवं 'झारखण्ड पार्टी द्वारा चलाये गये जंगल काटो आन्दोलन' के दौरान साल-सखुए के वृक्षों की बेदर्दी से कटाई की गई जिससे कोल्हावन-क्षेत्र को काफी नुकसान पहुँचा है। उस आन्दोलन से तीस हजार एकड़ के साल वृक्ष नष्ट किये जा चुके हैं। परन्तु, आगे चलकर लोगों को महसूस हुआ कि इस प्रकार का आन्दोलन व्यर्थ और निरूद्देश्य है तो आन्दोलन की गति धीमी हो गई।

कई जंगलों में अवैध लकड़ियों की कटाई के साथ-साथ कीमती लकड़ी के लिए वन-विभाग के कुछ पदाधिकारी भी वन-सम्पदा की तस्करी में अन्तर्लिप्त पाये गये हैं। जब रक्षक ही भक्षक बन जाए तो वन की वंश-वृद्धि की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

लकड़ी तस्करी में समाज के कुछ सफेदपोश व्यक्तियों की अहम भूमिका रही है। वस्तुतः नशीले पदार्थों के तस्करी की भांति विगत अनेक वर्षों से छोटानागपुर में लकड़ी तस्करी का व्यवसाय फलता-फूलता रहा है। फलतः बेशकीमती पेड़ों की चोरी-छिपे कटाई हो रही है। इसी क्रम में डोमचांच स्थित वर्षों से बन्द पड़ी सी.एम.आई. फैक्ट्री शिवसागर में तस्करों ने अनेक पेड़ काट डाले।

वर्ष 1980 में हजारीबाग के पूर्वी वन प्रमण्डल के पेटरवार क्षेत्रान्तर्गत बगियारी स्थित जंगल में वृहत स्तर पर वृक्षारोपण किया गया था और उसमें घने जंगल हो गये थे। किन्तु, हड़ताल के दौरान स्वार्थी तत्वों ने पूरे जंगल का सफाया कर दिया। निश्चय ही ऐसी घटनाओं में लकड़ी तस्करों तथा वन-कर्मियों की भूमिका रहती है। इसी प्रकार बारू वन-विभाग के कल्याणपुर नामक जंगल में भी लगभग 60 प्रतिशत जंगल काटे गये हैं। पेटरवार वन-क्षेत्र मुख्यालय के कई जंगलों में अवैध ढंग से वृक्ष कटाई हुई है।

गिरिडीह जिले के नवाडीह प्रखण्ड अन्तर्गत बिसी जंगल है जिससे करोड़ों रुपये के साल वृक्ष सिर्फ तीन दिन में बेचे गये। इस प्रकार हम देखते हैं कि आये दिन छोटानागपुर, चाईबासा, खूंटी, डाल्टनगंज, हजारीबाग, चतरा आदि स्थानों में अवैध लकड़ी-तस्करी की घटनाएँ घटित हो रही हैं।

छोटानागपुर में जंगल लुप्त होने में जनता का भी विशेष योगदान रहा है। गाँवों की निरन्तर बढ़ती आबादी के कारण भी जंगल क्षतिग्रस्त होते जा रहे हैं। वन्य-भूमि को काटकर कृषि-योग्य भूमि तैयार की जा रही है। फलतः जंगलों का दायरा सिमटता जा रहा है। ग्रामीणों को जंगल से अपनी निजी आवश्यकता हेतु जलावन और चारा का तो हक है। परन्तु, अज्ञानतावश ये दतुवन, करील जैसी चीजों को तोड़कर वृक्ष की वंश-वृद्धि नष्ट करते जा रहे हैं। इन्हें उन क्षतिग्रस्त जंगलों को पुनः विकसित करने का बोध नहीं है।

छोटानागपुर मे विपुल मात्रा में खनिज द्रव्य मिलने के कारण भी वन और पहाड़ों को विनष्ट किया जा रहा है। वन-क्षेत्र में नये-नये कल-कारखाने स्थापित किये जा रहे हैं। परिणामतः जंगलों और पहाड़ों का दायरा कम होता जा रहा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छोटानागपुरी जंगलों के लुप्त होने में जनता लकड़ी-तस्कर एवं वन-सम्पदा अधिकारियों की त्रिकोणात्मक भूमिका है। इसके साथ-साथ आधुनिकीकरण के कारण जंगल लुप्त होने के कारण को नकारा नहीं जा सकता।

पेड़ों या जंगलों के काटे जाने से हमारे समक्ष अनेक समस्याएँ आ खड़ी हुई हैं। उनमें से एक प्रमुख समस्या है-पर्यावरण की। बहुत संख्या में वृक्षों और वनों के काटे जाने से पर्यावरण की समस्या मानव-समाज के समक्ष सुरसा की भांति मुंह बाये खड़ी है। यह समस्या केवल छोटानागपुर की ही नहीं है, बल्कि विश्वव्यापी समस्या है। विश्व के सभ्य समाज और वैज्ञानिक इस पर चिन्तन-मनन करने लगे हैं और उसके भावी खतरे से सजग भी। हमें पर्यावरण के उभरते संकट के मूल कारणों को जानना होगा और निराकरण के उपाय ढूंढ़ने होंगे।

पृथ्वी के पर्यावरण को आज के रूप में आने के लिए करोड़ों वर्षों का समय लगा है। जैव विकास के क्रम में ही कुछ वनस्पतियों तथा जन्तुओं का विकास हुआ है। काफी संख्या में पेड़ों और जंगलों के काटे जाने से प्रकृति काफी असंतुलित हो गई है। हमारे देश में हर साल बाढ़ या इन दोनों में से किसी एक समस्या से देश का कोई न कोई भाग पीड़ित रहता है। इसका कारण है-पर्यावरण में आया बदलाव। जो बदलाव कई सौ वर्षों में आना चाहिए था, वह विगत कुछ वर्षों के अन्दर हमारी स्वार्थपूर्ण प्रकृति के कारण आ गया है जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है। इसी का परिणाम है कि कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि जैसी समस्याओं से हम घिरे हैं। जो जंगल बादल को रोककर पानी बरसाते हैं, उनके नष्ट होने पर बादल बिना बरसे चले जाते हैं।

बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण मानव-समाज ने आज वृक्षों के वास्तविक मूल्यों का बिना समझे स्वार्थपूर्ति हेतु निरन्तर ह्रास किया है। वस्तुतः पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ प्रकृति मानव के लिए अद्वितीय भेंट है। जो भी समाज प्रकृति की इस अनूठी धरोहर को विनष्ट करने में संलग्न है, वह अब भी अपने अस्तित्व की निर्भरता से अनभिज्ञ है। वह नहीं जानता कि मानव-कल्याण तथा स्वास्थ्य के लिए वृक्ष प्रकृति का अमूल्य वरदान है। वनों का विनाश अधिकांशतः कृषि विस्तार के लिए हुआ। लेकिन वनों के बिना कृषि सम्भव नहीं है। वनों का अस्तित्व समाप्त होने से मानव-समाज का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। ऐसा माना जाता है कि-"वृक्ष नहीं तो वृष्टि नहीं, वृष्टि नहीं तो सृष्टि नहीं।" बाढ़ की विभीषिका, मिट्टी का कटाव, तपती चट्टान की उष्णता, सबका निवारण ये वृक्ष ही करते हैं। वर्षा को संतुलित करना, गर्मी-सर्दी को संतुलित करना, हवा और पानी के वेग को रोककर मिट्टी के कटाव-बहाव को रोकना वृक्षों और वनों का काम है।

वृक्ष आक्सीजन बैंक है। कार्बन-डाय-ऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन पैदा करता है। सड़कों पर बढ़ते वाहनों की उगलती विषाक्त हवा, बढ़ते कल-कारखाने की चिमनियों से निकलने वाले कार्बन के कण वायुमंडल को नित्य विषाक्त बना रहे हैं, वहीं प्रतिवर्ष एक करोड़ की बढ़ती जनसंख्या के लिए बढ़ती ऑक्सीजन की आवश्यकता आज भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए चिन्ता का विषय है। वायुमंडल में बढ़ने वाले कार्बन-कणों को आत्मसात् करने वाले वृक्ष हैं। एक हेक्टर वन प्रतिवर्ष औसतन 3 मिट्रिक टन अशुद्ध वायु को ग्रहण कर 2 मिट्रिक टन ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

आज विकास और आधुनिकीकरण के नाम पर मानव-समाज अपने प्राकृतिक पर्यावरण को विनष्ट कर रहा है। पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के उस वातावरण और परिवेश से है जिससे हम घिरे हुए हैं। हम मानव-जीवन को जिन दशाओं और परिस्थितियों से घिरा हुआ पाते हैं, इनमें से कुछ दशाएँ प्राकृतिक हैं। जैसे-वायु, जल, भूमि, वन, तापमान, मौसम आदि। व्यापक संदर्भ में पर्यावरण के अन्तर्गत सामाजिक और सांस्कृतिक दशाएँ भी आती हैं जो मानव को पग-पग पर प्रभावित करती हैं। इन सभी प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दशाओं की सम्पूर्णता को पर्यावरण कहा जाता है।

आबादी का दबाव, विज्ञान की प्रगति तथा औद्योगीकरण के कारण गाँव शहरों में परिवर्तित हो रहा है साथ-साथ गाँवों का विकास भी। कोयला और पेट्रोल दोनों प्रकार के ईंधनों के दहन से निकलने वाली सल्फर डाइ ऑक्साइड गैस ज्यादा देर तक गैस अवस्था में रहती है। यह गैस वातावरण से प्रतिक्रिया

करके सल्फ्यूरस एवं सल्फ्यूरिक अम्ल बना देती है जिसके कारण अम्ल वर्षा होती है। सल्फर डाइ-ऑक्साइड पौधों की श्वसन एवं प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया में व्यवधान पैदा करता है। इस गैस के विषैले प्रभाव के कारण पत्तियों का क्लोरोफिल नष्ट हो जाता है जिससे उनकी वृद्धि रुक जाती है। इस अम्ल वर्षा से खेती भी काफी प्रभावित होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार स्वच्छ पर्यावरण एवं संतुलित परिस्थिति के लिए समस्त भूभाग का एक तिहाई भाग वनों से आच्छादित होना चाहिए। पेड़-पौधों और वनस्पतियों के बिना मानव का काम नहीं चल सकता। जन्म से मृत्यु तक जंगल की लकड़ी हमारा साथी है। वनों के विनाश के साथ मानव का विनाश जुड़ा है।

वर्तमान में मानव-जाति अपनी सुख-सुविधा में वृद्धि के लिए वनों का अविवेकपूर्ण कटाव करती जा रही है। परिणामत: वनों का क्षेत्रफल लगातार सिकुड़ता जा रहा है। वनों के ह्रास से पर्यावरण असंतुलित होने लगा है। हवा, पानी, मिट्टी जो वन पर आधारित हैं, उन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार विगत दशकों में अनवरत वन-विनाश के कारण न केवल वर्षा की मात्रा, भूमिगत जल-स्तर एवं जल-स्रोतों में भी कमी आयी है बल्कि बाढ़, सूखा, भूस्खलन तथा प्राकृतिक आपदाओं में भी वृद्धि होती जा रही हैं जो मानव-जीवन के अस्तित्व के लिए गम्भीर खतरे का संकेत है।

प्राकृतिक संसाधनों में वनों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। वनों से हमें एक ओर इमारती लकड़ी, ईंधन, चारा, लाह, जड़ी बूटियाँ, फल-फूल तथा विविध प्रकार की उपयोगी सामग्रियाँ मिलती हैं तो दूसरी ओर जल, वायु, भूक्षरण तथा रेगिस्तान के फैलाव को रोकने, प्राकृतिक सौन्दर्य बढ़ाने एवं पर्यावरण की सुरक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण सहायता मिलती है। वह ऑक्सीजन उत्सर्जन, मृदा-नियंत्रण, जल-चक्र नियंत्रण, आर्द्र-नियंत्रण, पक्षी, कीट पौधे आदि के जीवन-संरक्षण, वायु प्रदूषण पर नियंत्रण से निरन्तर लाभान्वित करता है। सांस लेने के लिए समस्त जीवधारियों को साफ-सुथरी हवा की आवश्यकता होती है जो पेड़-पौधे ही पैदा करते हैं।

यह सर्वविदित है कि वृक्ष जहरीली वायु को शुद्ध वायु में बदल देते हैं। वन तथा वृक्ष वर्षा कराने में सहायक होते हैं। इस वन-सम्पदा के महत्व को निश्चय ही हमारे पूर्वजों ने पहचाना होगा। यही कारण है कि आम, महुआ, पीपल, करम, तुलसी, कदम्ब, साल आदि वृक्षों को वृक्षों की श्रृंखला में शीर्ष स्थान पर रख कर श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा की है। इन वृक्षों का सम्बन्ध किसी न किसी धर्म से जोड़ा है ताकि इनके अस्तित्व को बचाया जा सके। ऋग्वेद में कहा गया है–

"वृक्षाद् वर्षति पर्जन्य पर्जन्यदन्न सम्भव:अन्नाद भवन्ति भूतानि" अर्थात् वृक्ष से वर्षा, वर्षा से अन्न और अन्न से जीवन सम्भव है। अत: निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि पेड़ों और वनों का महत्व प्राचीनकाल से ही हमारे जीवन में रहा है। वन एवं पर्यावरण के महत्व पर विचार व्यक्त करते हुए स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा था–'मानव का अस्तित्व जीव-जन्तुओं और वनस्पति के अस्तित्व पर निर्भर है।'

जिस पर्यावरण संकट से सम्पूर्ण विश्व आक्रान्त है हमारा छोटानागपुर भी इससे अछूता नहीं है। छोटानागपुर में उभरते पर्यावरण संकट की ओर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि यह प्रदेश ही हमारे देश का ऐसा प्रदेश है जिसमें नाना प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। छोटानागपुर रत्न-गर्भा होने के कारण यहाँ नित नये कारखाने खुल रहे हैं और एक औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित हो रहा है। फलत: यहाँ की जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। साथ-साथ आधुनिकीकरण और विकास के नाम पर जंगलों का विनाश किया जा रहा है। हालांकि भूभाग के अनुपात में जंगलों का अनुपात अभी भी एक तिहाई है। यदि इस आनुपातिक वन-क्षेत्रों की सुरक्षा नहीं की गई या कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई तो निकट भविष्य में छोटानागपुरी जन-जीवन को भी पर्यावरण के संकट का सामना करना पड़ेगा।

सम्पर्क : प्राध्यापक, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
लोअर बर्दवान कम्पाउण्ड, राँची
दूरभाष : 316672

राष्ट्रीय विचार पत्रिका

विज्ञापन दरें

आवरण पृष्ठ (रंगीन)

	एक बार	चार या अधिक
1. अन्तिम पृष्ठ	6000 रुपये	5000 रुपये
2. द्वितीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
3. द्वितीय आधा पृष्ठ	2500 रुपये	2200 रुपये
4. तृतीय पूर्ण पृ.	4500 रुपये	4000 रुपये
5. तृतीय आधा पृ.	2500 रुपये	2200 रुपये

भीतरी पृष्ठ

	एक बार	चार या अधिक
6. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	1500 रुपये	1200 रुपये
7. रंगीन आधा पृ.	800 रुपये	700 रुपये
8. साधारण पूर्ण पृ.	1000 रुपये	800 रुपये
9. साधारण आधा पृ.	600 रुपये	500 रुपये
10. साधारण चौथाई पृ.	400 रुपये	300 रुपये

विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :
विज्ञापन व प्रसार प्रबंधक : राष्ट्रीय विचार पत्रिका, 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष : 228519

राष्ट्रीय विचार मंच के बढ़ते कदम

प्रस्तुति : श्री दिलीप कु. सिन्हा

'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के अंक-2 का लोकार्पण-समारोह

मंच के तत्वावधान में विगत 9 अप्रैल'98 को पटना के बोरींग रोड चौराहा स्थित मां भगवती कॉम्प्लेक्स के फ्लैट नं. 604 में कवयित्री रूबी भूषण के सौजन्य से 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के अंक-2 का लोकार्पण पटना कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष **डॉ. श्यामनन्दन शास्त्री** के द्वारा हुआ। इस अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि तथा **'आख्यायिनी' मासिक पत्रिका, नई दिल्ली के संपादक डॉ. भगवती शरण मिश्र, प्रो. महेन्द्र प्र. यादव राजस्थान के पूर्व महालेखाकार श्री डी.एन. प्रसाद, डॉ. शिवनारायण, डॉ. शिववंश पाण्डेय** आदि विद्वतजनों ने पत्रिका को अपनी शुभकामनाएं दीं। समारोह की अध्यक्षता **सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रामबुझावन सिंह** ने की। प्रारम्भ में मंच के उपाध्यक्ष डॉ. एस.एफ. रब ने स्वागत भाषण तथा श्री राजकुमार प्रेमी ने स्वागत-वन्दना प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी में कविवर गोपी वल्लभ सहाय, राय प्रभाकर प्रसाद, डॉ. मेहता नागेन्द्र सिंह, विजय गुंजन, चन्द्र प्रकाश माया आदि कवियों ने अपनी कविता से श्रोताओं को सराबोर किया। मंच का संचालन श्री सिद्धेश्वर तथा धन्यवाद-ज्ञापन रूबी भूषण ने किया। समारोह के अन्त में श्री इन्दुभूषण तथा श्रीमती रूबी भूषण के सौजन्य से आमंत्रित अतिथियों, कवियों एवं सुधीश्रोताओं को साहित्यिक सहभोज भी दिया गया।

डॉ. अम्बेदकर जयंती के अवसर पर विचार संगोष्ठी-

भारतीय संविधान के निर्माता बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेदकर के 106वें जयंती-समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच के द्वारा विगत 14 अप्रैल, 1998 को सन्ध्या 5 बजे मंच के पुरन्दरपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय प्रांगण में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय था **"साहित्य एवं संस्कृति में दलित अस्मिता की पहचान"**। इस विषय पर वी.डी. इवनिंग कॉलेज, पटना के हिन्दी प्राध्यापक **प्रो. कैलाश स्वच्छन्द** तथा जनवादी लेखक संघ, पटना के अध्यक्ष **श्री हरीन्द्र विद्यार्थी** के द्वारा दो आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री विद्यार्थी के आलेख को अलग से इस पत्रिका के 'साहित्य' स्तम्भ में प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध समीक्षक **डॉ. शिवनारायण** की अध्यक्षता में आयोजित इस संगोष्ठी में प्रस्तुत दोनों आलेखों पर उपस्थित प्रबुद्धजनों के द्वारा जीवन्त बहस हुई तथा अध्यक्ष ने बहस का निचोड़ देते हुए कहा कि **एक आधुनिक धर्म निरपेक्ष समतामूलक समाज के निर्माण का सपना भारत में अभी मरा नहीं है। भारतीय समाज में मुक्ति की छटपटाहट अभी बनी हुई है। अंधेरे से लड़ने की ताकत अभी मौजूद है। मौजूदा समाज व्यवस्था की सड़न को दफनाने का अंतहीन सिलसिला अभी जारी है।**

गोष्ठी का संचालन कर रहे मंच के महासचिव **श्री सिद्धेश्वर** ने कहा कि पिछले पाँच छः वर्षों में उत्तर भारत के दलित-पिछड़ों में आयी जागृति के परिणामस्वरूप दलित साहित्य को धीरे-धीरे स्वीकृति मिलने लगी है। और वैसे भी स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. रामबुझावन सिंह ने सत्ता पर चोट करते हुए संकीर्णता की ओट

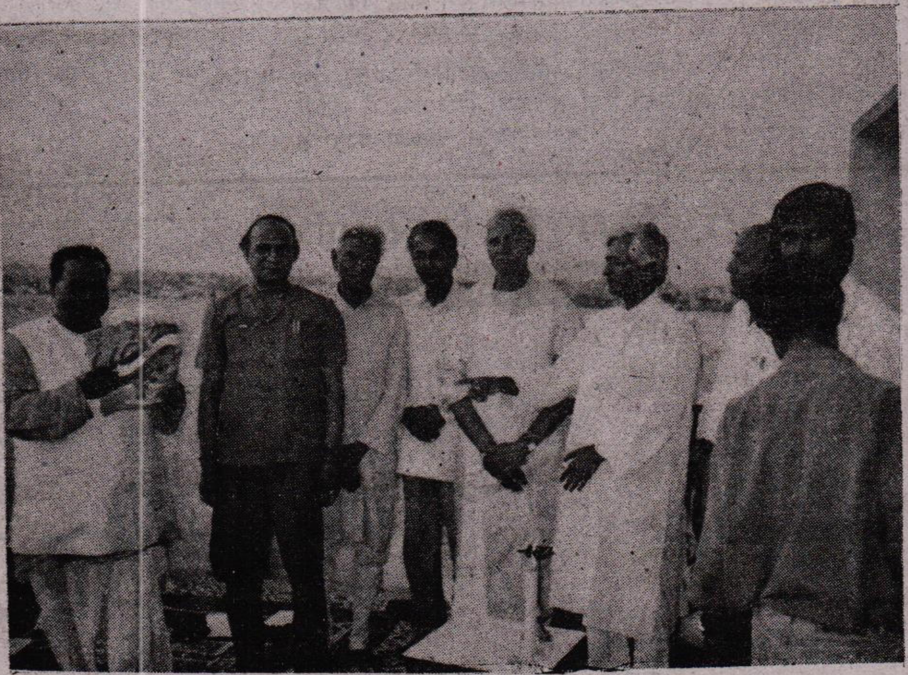

9 अप्रैल'98 को 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के अंक-2 का लोकार्पण करते हुए प्रो. श्यामनन्दन शास्त्री तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. भगवती शरण मिश्र, प्रो. राम बुझावन सिंह, गोपी वल्लभ सहाय

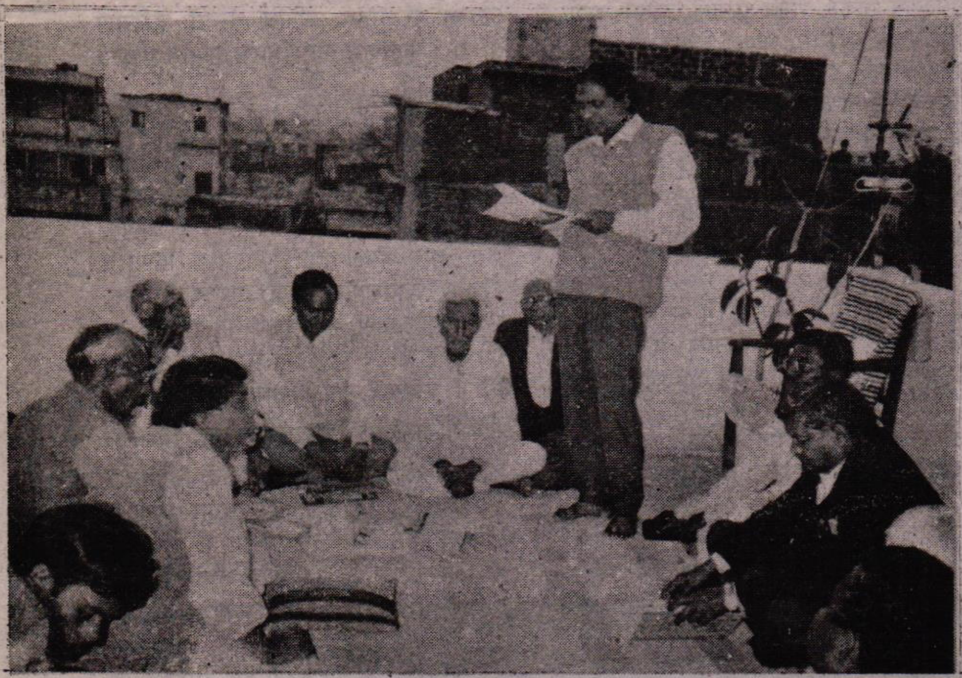

मंच के जयनगर स्थित प्रतिनिधि डॉ. राजकुमार गुप्ता ने विचार गोष्ठी में पधारे अतिथियों तथा श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया ।

मंच की दिल्ली शाखा द्वारा काव्य-संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय विचार मंच की दिल्ली शाखा द्वारा विगत 23 अगस्त एवं 29 सितम्बर'98 को मंच के संरक्षक श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव भारत के अपर उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के दिल्ली स्थित चाणक्य पुरी निवास में सुरुचिपूर्ण काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें जिन कवियों ने अपने काव्य-सुधा-रस का पान दिल्ली के सुधी श्रोताओं को कराया उनमें कविवर राजेन्द्र अवस्थी, संपादक 'कादम्बिनी', आर.एस. प्रसाद, भारत भूषण पंडित, कुंवर मनजीत सिंह, राजगोपाल सिंह, डॉ. राजेन्द्र गौतम, नरेन्द्र लाहड़, श्री श्रवण राही, आत्माराम फोन्दणी 'कमल', मो. जैनुद्दीन अंसारी तथा डॉ. बद्रीकान्त झा का नाम उल्लेखनीय है । गोष्ठी की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र अवस्थी ने की तथा प्रमुख श्रोताओं में उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता संजय सिंह तथा मंच के सचिव श्री सीताराम सिंह भी उपस्थित थे । कार्यक्रम का संचालन किया श्री अवधेश कुमार सिन्हा ने ।

डॉ. शिवनारायण की सद्यः प्रकाशित पुस्तक

से कुर्सी का आखेट करना सत्ता पर बैठे हुक्मरानों ने अपनी आदत बना डाली है । राष्ट्रीय विचार पत्रिका के सह संपादक **श्री कामेश्वर मानव** ने अपने धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में कहा कि जो दलितोत्थान को महज एक नारा समझ रहे हैं वे भूल में हैं । दीवारों पर लिखे को उन्हें पढ़ने तथा अपनी मानसिकता में उसके अनुरूप बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए ।

मंच की जयनगर शाखा द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय विचार मंच की जयनगर शाखा के तत्वावधान में विगत 7 जुलाई'98 को राष्ट्रीय विचार पत्रिका के संपादक डॉ. हीरा लाल सहनी की अध्यक्षता में भेलवाटोल जयनगर में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 'भारत में राष्ट्रीय भावना का ह्रास' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए अध्यक्ष डॉ. सहनी के साथ-साथ प्रो. सुरेन्द्र सिंह, कमलेश ठाकुर, अजय कुमार गुप्ता, इन्द्र मोहन मिश्र, डॉ. धनिकलाल यादव, विलट सहनी, विपिन कुमार सिंह, शत्रुघ्न कुमार झा तथा वीरेन्द्र सिंह आदि वक्ताओं ने प्रायः इस बात पर चिन्ता जाहिर की कि वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीयता की भावना का ह्रास इस देश में तेजी से हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप आज देश संकट की स्थिति से गुजर रहा है । ऐसे समय में राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच की 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' का प्रकाशन वन्दनीय है । इसके माध्यम से राष्ट्रीय भावना के विकास हेतु जयनगर के प्रबुद्धजनों ने अपेक्षित सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया ।

"काला गुलाब" का लोकार्पण-

राष्ट्रीय विचार मंच के तत्वावधान में विगत 9 सितम्बर'98 को सोन भवन स्थित राज्य निर्वाचन आयोग के सभागार में हिन्दी साहित्य के समीक्षक **डॉ. शिवनारायण** की सद्य: प्रकाशित काव्य-संग्रह **'काला गुलाब'** का लोकार्पण बिहार के पूर्व मंत्री **डॉ. पुर्णेंदु नारायण सिन्हा** ने किया । प्रारम्भ में श्री **राजकुमार प्रेमी** के मंगलाचरण के बाद **डॉ. सतीश राज पुष्करणा** के द्वारा आगत अतिथियों एवं सुधी श्रोताओं का अभिनन्दन एवं स्वागत किया गया । इस अवसर पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि **डॉ. अमर कुमार सिंह, प्रो. राम बुझावन सिंह, डॉ. राजवंश पाण्डेय, डॉ. रंगी प्र. सिंह, श्री विनोद मणि दिवाकर, प्रो. वैद्यनाथ शर्मा तथा कविवर सत्यनारायण** ने 'काला गुलाब' पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ. **शिवनारायण** को अपनी शुभकामनाएं दीं । गीतकार श्री **विशुद्धानन्द** ने इस पुस्तक के लेखक के कुछ गीतों का सस्वर पाठ किया । मंच के अध्यक्ष **श्री जिया लाल आर्य** ने अध्यक्षता की । मंच का संचालन श्री सिद्धेश्वर तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. एस.एफ. रब ने किया ।

मंच की दरभंगा शाखा द्वारा 'बापू' याद किए गए

राष्ट्रीय विचार मंच की दरभंगा शाखा की ओर से विगत 2 अक्टूबर'98 को गांधी जयन्ती समारोह का आयोजन स्थानीय गांधी नगर में स्थित साहित्यालोक में किया गया जिसकी अध्यक्षता शाखा के अध्यक्ष श्री जागेश्वर महतो ने की । 'बापू' को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करनेवालों में सर्वश्री डॉ. रामेश्वर प्र. वर्मा, डॉ. ब्रह्मदेव प्र. कार्यी, कपिल प्रभाकर, निरंजन, बालेश्वर मंडल, नन्द किशोर राय, रामचन्द्र निर्मोही, डॉ. नवल किशोर, इंदिरा प्रसाद, डॉ. उमेश उत्पल, लक्ष्मण सहनी, अरविंद कुमार मंडल, रामकृष्ण ठाकुर, शंकर प्रलामी, शेखर कुमार श्रीवास्तव, शशिधर भगत, दिनेश प्र. कल्प, प्रयाग सहनी, डॉ. कृष्णचन्द्र झा, डॉ. दिनेश्वर रवि, प्रो. नरेन्द्र नारायण सिंह आदि प्रमुख थे । डॉ. हीरा लाल सहनी ने बापू को काव्य-सुमन अर्पित करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया ।

मंच की मधुबनी शाखा द्वारा बापू की जयंती

गत 2 अक्टूबर'98 को मंच की मधुबनी शाखा की ओर से चकदह में महात्मा गांधी की जयंती **डॉ. खुशी लाल मंडल** की अध्यक्षता में मनाई गई । बापू को श्रद्धा अर्पित करने वालों में सर्वश्री रामलखन मंडल, प्रो. मुनेश्वर यादव, प्रो. विनोद विश्वास, गणेश मंडल, रामविलास सहनी, राम पुकार यादव, प्रो. कैलाश प्रसाद, विपिन कु. पांडेय, राजेन्द्र कुमार, उपेन्द्र शर्मा, सियाराम यादव, विश्वनाथ प्रधान आदि का नाम उल्लेखनीय है । धन्यवाद ज्ञापन प्रीतम कुमार मुखिया ने किया ।

मंच की समस्तीपुर शाखा द्वारा लोकनायक की जयंती

गत 11 अक्टूबर'98 को मंच की समस्तीपुर शाखा के तत्वावधान में सोनवर्षा चौक स्थित नेहरू युवा केन्द्र में लोकनायक जयप्रकाश की जयंती मनाई गई । इसकी अध्यक्षता **डॉ. रामलखन राय** ने की । इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे **डॉ. हरिवंश तरुण** । कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय गीत से हुआ ।

लोकनायक के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने वालों में डॉ. नारायण दास, डॉ. रघुवंश प्र. 'रसिक', ई. योगेन्द्र पोद्दार, रवीन्द्र ठाकुर, वासुदेव ठाकुर 'सरस', कैफ़ अहमद कैफी, विद्या सुमन, ममता देवी, कुमार रेखा, विष्णुदेव केडिया, शिवशंकर सहनी, यदुनंदन रसिक, नन्द किशोर शर्मा, चन्द्रभूषण सहनी आदि का नाम उल्लेखनीय है । अंत में श्री रामनारायण राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया ।

अप्रवासी भारतीय डॉ. भागवत प्रसाद का अभिनन्दन

मंच तथा पत्रिका की ओर से विगत 22 अप्रैल, 1998 को मंच के पुरन्दरपुर (पटना) स्थित केन्द्रीय कार्यालय परिसर में अप्रवासी भारतीय तथा सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. भागवत प्रसाद का अभिनन्दन करते हुए समारोह के अध्यक्ष श्री जिया लाल आर्य ने कहा कि लगन, चरित्र, अध्यवसाय और विद्या-बुद्धि के बल पर ही डॉ. प्रसाद अमेरिका तथा भारत में एक लब्ध प्रतिष्ठित चिकित्सक हुए तथा यशस्वी बने । मंच के संचालक श्री सिद्धेश्वर ने डॉ. प्रसाद के प्रति अपने उद्गार में कहा कि इनके व्यक्तित्व में मधुरिमा, निश्छल स्नेह, हार्दिकता तथा उदारता सरीखे देवोपम गुण हैं । इस अवसर पर जिन प्रबुद्धजनों ने डॉ. प्रसाद के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की उनमें सर्वश्री डॉ. शिवनारायण, कामेश्वर मानव, हरिहरनाथ, इ. डी.एन. सिंह, डी.एन. प्रसाद, सिद्धेश्वर प्र. सिंह आदि का नाम उल्लेखनीय है । मंच की नालंदा शाखा के संयोजक श्री अक्षय कुमार ने डॉ. प्रसाद को मंच तथा पत्रिका की ओर से एक अभिनन्दन-पत्र समर्पित करने के पश्चात् उपस्थित अतिथियों तथा सुधी श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया ।

श्रद्धांजलि

काश ! 'अनहद गरजे' शिव प्रसाद सिंह पूरा कर पाते

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा 'दिल्ली दूर है', 'गली आगे मुड़ती है', 'मानसी गंगा किस किसको नमन करूँ', 'अंधकूप', 'औरत', 'कोहरे', 'एक यात्र सतह के नीचे', 'राग गुजरी', 'नीला चाँद', एवं 'अलग-अलग वैतरणी' आदि कालजयी कृतियों के सृजनहार श्री शिव प्रसाद सिंह अब हमारे बीच नहीं रहे । उनका निधन 28 सितम्बर, 1998 को हो गया।

सर्जन की अगाध उर्जा से भरपूर श्री सिंह अस्पताल में शैय्या पर पड़े-पड़े लोगों को अक्सर कहा करते थे मुझे जल्दी घर ले चलो ताकि कबीर पर केन्द्रित उपन्यास 'अनहद गरजे' पूरा कर सकूँ । मृत्यु के दिन तक उनकी चेतना में शायद कबीर रहे हों । शव यात्रा से लेकर चिता की आग मद्धिम होने तक काशीनाथ सिंह, ज्ञानेन्द्र पति, विधानिवास मिश्र, शुकदेव सिंह, अवधेश प्रधान, बच्चन सिंह सहित अनेक लेखकों ने एक ही चिन्ता व्यक्त की कि 'काश / ईश्वर ने उन्हें कबीर पर आधारित उपन्यास 'अनहद गरजे' पूरा कर लेने दिया होता ।' पर खुदा को वह मंजूर नहीं था। 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' परिवार उस दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करता है।

भारत सरकार, कर्मचारी राज्यबीमा निगम के अधिकारी तथा राष्ट्रीय विचार मंच के आजीवन सदस्य **श्री नरेश प्रसाद** को अचानक हमसे छीनकर भगवान को क्या मिला, यह मुझे नहीं मालूम पर मंच तथा पत्रिका का एक निष्ठावान सदस्य हमेशा-हमेशा के लिए चला गया जिसकी भरपाई तत्काल सम्भव नहीं ।

नियति के क्रूर हाथों ने जिस शख्स को एक सड़क दूर्घटना में विगत 11 अक्टूबर 1998 को हमसे तथा इस पत्रिका के एक जीवन्त शुभेच्छु **नरेश प्रसाद उर्फ महेन्द्र प्रसाद** थे जिनके हृदय में इसके लिए कुछ करने की तमन्ना थी । स्वाभाविक है कि ऐसे उदारहृदयी सदस्य को खोकर पत्रिका तथा मंच के सभी सदस्य मर्माहत हैं । स्व. प्रसाद **मे. गोल्डेन पोलिमेक्स (इण्डिया) लि., पटना सिटी** के संचालक थे ।

अभी इस हादसे के बाद आँखों के आँसू बन्द भी नहीं हो पाए थे कि एक और कर्मठ एवं निष्ठावान **बीरेन्द्र कुमार** विगत 14 अक्टूबर 1998 को हमारे बीच से उठकर चला गया वहाँ जहाँ से कोई लौटकर आता नहीं । स्व. वीरेन्द्र रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय में वरीय लेखाकार थे।

इन दोनों की याद भर से आँखों में आँसू–

सुख के आँसू दुखी, मित्रों की जाया के,
भर आए आँखों में, इन दोनों की माया से।

नरेश एवं वीरेन्द्र आज हमारे बीच नहीं है पर उनकी सृजनात्मक उपलब्धि के क्षणों की स्मृति तो है । पत्रिका परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जगन्नियंता से प्रार्थना है कि वह शास्वत आत्मा को चिर शांति तथा शोक-संतप्त परिवार को इस दारूण व्यथा को सहने की शक्ति प्रदान करे ।

पत्रिका-परिवार

बिहारी बाबू : सत्रह रन पर नॉट आउट

रावि मुम्बई संवाददाता

बिहारी बाबू के नाम से मशहूर अभिनेता व नेता शत्रुघ्न सिन्हा अपनी शादी की 17वीं साल गिरह के अवसर पर विगत 9 जुलाई, 1998 को मुम्बई में आयोजित एक समारोह में काफी खुश नजर आ रहे थे। समारोह में उनकी पत्नी पूनम सिन्हा के साथ-साथ सुपुत्र लव-कुश एवं उनकी दुलारी बेटी सोनाक्षी मेहमानों के आवभगत में जुटी थीं। अभिनेत्री जीनत अमान से लेकर माधुरी दीक्षित तथा उनके साथ अन्य नायिकाएं एवं सहयोगी कलाकार उपस्थित हो चुके थे। निहलानी, जैकी श्राफ और प्रेम चोपड़ा का आगमन भी हो चुका था।

बिहारी बाबू ने अपने ही अन्दाज में मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा-"भइया 17 वर्ष हो गए, हंसी-खुशी साथ रहते। हमें किसी की नजर नहीं लगी। हमारा परिवार आज भी एक है।" इसी बीच अप्रत्याशित रूप से वेस्ट इंडीज के क्रिकेटर विलियम रिचर्डस अपनी मित्र नीना गुप्ता और बेटी मोबाशा के साथ शत्रु भइया को बधाई देने पहुंचे यहां तो ठहाका लगाते हुए बिहारी बाबू ने कहा-भाई यहाँ तो शतक पर शतक, चौका-छक्का लगाने वाले के सामने मैंने तो अभी 17 रन ही बनाएं हैं, लेकिन नॉट आउट हूँ।"

गायक दलेर मेहदी को 2.50 करोड़ रूपये का रेकर्ड रकम

मुम्बई संवाददाता

म्यूजिक कम्पनी मैग्नासाउण्ड ने गायक दलेर मेंहदी को ढाई करोड़ रूपये में अनुबन्धित कर भारत के गैर फिल्मी संगीत की दुनिया में किसी गायक को दी जाने वाली रकम का एक रेकर्ड कायम किया है। उनके पहले एलबम 'बोल ता रा रा' ने नया रेकर्ड बनाया था जिसकी अकेले केरल में ही एक लाख तक कैसेट बिक गए थे। इनके पूर्व ए.आर. रहमान तथा लकी अली को सोनी म्यूजिक ने कथित तौर पर क्रमशः एक करोड़ तथा पचहत्तर लाख रूपये में अनुबन्धित किया था।

आपका यह सोचना वाजिब है कि आखिर दलेर इतने रुपयों का क्या करेंगे ? अजी हुजूर ! उन्होंने इस रकम को खर्च करने का तरीका ढूंढ निकाला है। राजधानी दिल्ली में बढ़ते-प्रदूषण से दुःखी होकर मेंहदी ने शीघ्र ही 250 स्कूली बच्चों के साथ दिल्ली भर में छह लाख पौधे लगाने का कार्यक्रम बनाकर उन्होंने दिल्ली को हरा-भरा बनाने में काफी दिलचस्पी दिखाई है। दाद देना होगा इनकी दिलचस्पी को। कितने लोग हैं ऐसी अभिरूचि के लोग हमारे देश में खासकर इस उपभोक्तावादी संस्कृति के पीछे भागते दौर में गायक दलेर मेंहदी को रा.वि. पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई।

राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत के धनी कवि प्रदीप

मुम्बई संवाददाता

आज से कई दशक पूर्व लता मंगेशकर के स्वर से निकले **"ए मेरे वतन के लोगों जरा आँख में भर लो पानी"...**के जिस गीत को सुनकर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की आँखों में पानी भर आया था, उस गीत के रचयिता को सालों साल किसी ने नहीं जाना, पहचाना। वह गुमनाम गीतकार कोई और नहीं रामचन्द्र नारायण द्विवेदी यानी कवि प्रदीप ही हैं। वर्ष 1998 का फिल्म जगत का सबसे सम्मानीय दादा साहेब फाल्के पुरस्कार कवि प्रदीप को देकर 'देर आए दुरूस्त आए' वाली कहावत को चरितार्थ करता है। **कवि प्रदीप का यह सम्मान उन कवियों को प्रेरित करेगा जो वीर रस तथा राष्ट्रीय भावना को ही अपनी कविताओं में उतारते हैं।**

देश में वीर रस तथा राष्ट्रभक्ति के भाव को प्रमुखता न देकर केवल हास्य-व्यंग्य और श्रृंगार को ही पसन्द किया गया। फलतः न केवल हम अपनी जड़ों और संस्कृति से कटने लगे बल्कि यहां आज अनेक विचारों की विकृति समाज में पैदा हो गयी। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि राष्ट्रीय भावना किसी भी राष्ट्र का प्राण है। प्राण रहेंगे तो जीवन्तता बनी रहेगी। इस तत्व के जीवन्त गीतकार कवि प्रदीप को देर से सही, पुरष्कृत कर सरकार ने अपनी गलती स्वीकार सुधार ली है। आज इसी राष्ट्रीय भावना को सतत् गतिशील बनाए रखना है।

देशभक्त क्रान्तिकारी कवि को जिस राष्ट्रीय पुरस्कार से सरकार ने नवाजा है यह वही कवि हैं जिसके गीतों को बच्चन हर समय गाया करते थे-**"आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है, दूर हटो ऐ दुनियावालों हिन्दुस्तान हमारा है।"** पर अफसोस इस बात का है कि सरकार अच्छे लोगों का स्मरण वयोवृद्ध होने पर ही करती है, यह कथन है कवि प्रदीप का।

देश के विभाजन के बाद और उस दौर की विषम परिस्थितियों के मद्देनजर-**'चल चल रे नौजवान'** के लिए कवि प्रदीप ने एक गीत लिखा था जो आज भी प्रभोवोत्तेजक है-

मंजिल सभी की एक है, राहें अलग-अलग,
वो एक हैं, पर अपनी निगाहें अलग-अलग।
मंदिर में है भगवान तो, मस्जिद में खुदा है,
किसने कहा-हिन्दू से मुसलमान जुदा है।

फिल्मों में कवि प्रदीप सम्भवतः पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने देशभक्ति के गीतों को हिन्दी फिल्मों में रचा और प्रतिष्ठित किया। 6 फरवरी, 1915 में मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के बड़नगर नामक स्थान में जन्में रामचन्द्रनारायण द्विवेदी 'प्रदीप' ने 1939 में **'कंगन'** फिल्म के चार गीत लिखे। उन गीतों में से तीन को उन्होंने स्वर प्रदान किया। फिर 1940 में फिल्म **'बंधन'** के लिए उनके द्वारा लिखे गए **'चना जोर गरम', चल-चल रे नौजवान, हम तो अलबेले, पियु, पियु बोल** आदि गीतों को काफी लोकप्रियता मिली। 1943 में फिल्म **'किस्मत'** के उनके गीत **"आज हिमालय की चोटी से...."** ने पूरे देश में धूम मचा दी और राष्ट्रीय भावना को जन-जन तक पहुंचाया। फिल्म 'जागृति' के लिए कवि प्रदीप ने जिन गीतों की रचना की वे सभी के सभी उच्चकोटि के हैं देखें-

'इस देश कों रखना मेरे बच्चों संभाल के,
हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के,

1998 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित

देश के गौरव : अमर्त्य सेन

❒ डॉ. अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

'जहाँ लोकतांत्रिक सरकारें नहीं हैं उन देशों में भी अकाल पड़ता है। पर उन देशों में जहाँ औपनिवेशिक शासन, तानाशाही अथवा एक दलीय प्रणाली का शासन है, वहाँ की सरकारें बच जाती हैं। देश में लोग मर रहे हैं, लेकिन सरकार को कोई चिन्ता नहीं होती। उधर लोकतांत्रिक देशों में इसके विपरीत असर पड़ता है और सरकारें गिर जाती हैं। चुनाव हार जाने के भय से कई दफा सरकार विदेशों से मदद लेकर जनता को राहत पहुँचाती है और अकाल का प्रभाव कम हो जाता है। 'ये विचार हैं नोबेल पुरस्कार विजेता भारतीय अर्थशास्त्री प्रो. अमर्त्य सेन के जिन्होंने एक निजी टेलीविजन चैनल को दिये गये साक्षात्कार में व्यक्त किये।

प्रो. अमर्त्य कुमार सेन नोबेल पुरस्कार पाने वाले छठे भारतीय हैं। नोबेल प्रशस्ति-पत्र के अनुसार 'कल्याणकारी अर्थशास्त्र को श्री सेन के योगदान और उनके सैद्धान्तिक दृष्टिकोण के प्रयोग ने दुर्भिक्ष के लिए उत्तरदायी आर्थिक प्रक्रियाओं की हमारी समझदारी में इजाफा किया है। उन्होंने आर्थिक विज्ञान के केन्द्रीय क्षेत्रों में अनेक उल्लेखनीय योगदान किये हैं और अनुसंधानकर्ताओं की भावी पीढ़ियों के लिए अध्ययन के नये क्षेत्र खोले हैं। अर्थशास्त्र और दर्शन के उपकरणों के संयोजन से उन्होंने महत्वपूर्ण आर्थिक समस्याओं पर विचार-विमर्श को एक नैतिक आयाम दिया है। श्री सेन ने बहुमत के शासन, व्यक्तिगत अधिकार और व्यक्तिगत कल्याण के बारे में सूचना की उपलब्धता जैसी समस्याओं का अध्ययन किया है। श्री सेन का प्रायः समस्त कार्य विकासात्मक अर्थशास्त्र से संबंधित रहा है और यह प्रायः समाज के निर्धनतम लोगों के कल्याण के प्रति लक्षित रहा है। उन्होंने वास्तविक दुर्भिक्षों का भी अध्ययन किया है।

चौंसठ वर्षीय प्रो. सेन कैंब्रिज में ब्रिटेन के 'ट्रिनिटी कॉलेज में शिक्षण कार्य करते हैं। 1933 में बंगाल में जन्में भारतीय नागरिक श्री अमर्त्य कुमार सेन 'हारवर्ड यनिवर्सिटी' में अर्थशास्त्र और दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर रह चुके हैं। प्रो. सेन ने 1974 में बांग्लादेश में पड़े अकाल तथा भारत-बांग्लादेश और सहारा के देशों में अन्य आपदाओं का अध्ययन किया। श्री सेन ने सामाजिक चयन के सिद्धान्त, कल्याण और गरीबी की परिभाषा तथा अकाल के अध्ययन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज भारत के इन महान सपूत की विराट उपलब्धि से सारा देश गौरवान्वित हुआ है। इससे यह बात प्रमाणित हो गयी है कि इस देश में प्रतिभा की कमी नहीं है। अगर सही सुविधा और असवर मिले तो कला और विज्ञान समेत कर्म के हर क्षेत्र में इस देश के नौजवान आगे बढ़कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में सक्षम हैं।

संपर्क : संपादक, 'अलका मागधी' पुराना जक्कनपुर, पटना

क्यों दिल दे बैठे मंडेला ग्रेसा को ?

रावि प्रतिनिधि

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोध के सुप्रीमो डॉ. नेल्सन मंडेला मोजाम्बिक के पूर्व राष्ट्रपति समोरा मशेल की विधवा ग्रेसा मशेल से क्यों दिल लगा बैठे, यह समझना कठिन नहीं है। स्मरणीय है कि समोरा मशेल जिनकी मृत्यु अक्टूबर'96 में एक वायुयान दुर्घटना में हो गयी थी की विधवा ग्रेसा मशेल सौम्यता और गर्मजोशी से भरपूर हैं और अपने शारीरिक यौवन को बरकरार रखने में सक्षम रही हैं।

यह समाचार तब सुर्खियों में आया जब 52-वर्षीय ग्रेसा मशेल को 19 जुलाई, 1998 को राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला से शादी करने के पश्चात अफ्रीकी स्वतन्त्रता आन्दोलन के दो महान नेताओं की पत्नी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। बुद्धिजीवी ग्रेसा मशेल अफ्रीकी स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग ले चुकी है। डॉ. मंडेला से उनकी पहली मुलाकात 1990 में हुई पर दोनों का रोमांस मंडेला की दूसरी पत्नी वीनी के तलाके के बाद हुआ। किन्तु यह सार्वजनिक सितम्बर'96 में तब हुआ जब पेरिस में दोनों का एक-दूसरे के साथ हाथ में हाथ डालकर टहलते हुए तस्वीर ले ली गयी थी।

18 जुलाई, 1998 को अपने जन्म दिवस की 80वीं वर्षगांठ मनाने के दौरान डॉ. मंडेला ने अपना तीसरा विवाह रचाया तथा 52 वर्षीया ग्रेसा मशेल के साथ परिणय सूत्र में बंधे। अफ्रीकी राष्ट्रपति की शादी की घोषणा अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष और वहां के उपराष्ट्रपति थाम्बो माबेकी ने की।

'रॉयल टेम्बु' आदिवासी समूहों के प्रमुखों की अनुमति लिए बगैर शादी रचाने तथा परम्पराओं के खिलाफ काम करने के कारण डॉ. मंडेला ने पूर्वी केप गांव के कुनू कस्बे में जाकर माफी मांगा जिससे उनकी विनम्रता तथा खुशमिजाज होने का परिचय मिलता है।

कद जितना छोटा, दिल उतना ही बड़ा

गृहमंत्री के रूप में श्री लाल बहादुर शास्त्री पहली बार आगरा जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर जनता और अधिकारी पहले ही पहुंच गए थे। ट्रेन रूकते ही शास्त्री जी चुपचाप उतरें और बाहर जाने लगे। तभी एक सिपाही ने रोका, 'ठहरो ! मंत्री आने वाले हैं। एक तरफ खड़े हो जाओ। मंत्री जी चले जाएं तब जाना।'

एक अन्य सिपाही ने शास्त्री जी को पहचान लिया। उसने सिपाही के कान में कहा-'यही तो मंत्री जी हैं।' पहले सिपाही को विश्वास नहीं हुआ। 'अरे यार ! यह मजाक का समय नहीं है। हमारे मंत्री जी छोटे कद के कैसे हो सकते हैं।

तभी वहाँ स्वागत में आए लोग पहुंच गए। सिपाही की हालत पतली हो गई। इस घटना का पता उच्चाधिकारियों को लगा तो उन्होंने तुरंत सिपाही के विरूद्ध कार्रवाई करने का फैसला कर लिया। शास्त्री जी ने अधिकारियों को संदेश भिजवाया, सिपाही के खिलाफ कोई कार्रवाई न की जाय। उनका कोई कसूर नहीं है, वह तो अपनी ड्युटी निभा रहा था। उक्त सिपाही बोल पड़ा-इनका कद जितना छोटा है, दिल उतना ही बड़ा है।

शरद पवार के बयान स्वागत योग्य

संसद में प्रतिपक्ष के नेता शरद पवार ने कहा है कि वर्तमान परिस्थितियों में वाजपेयी सरकार को गिराने के प्रयास से देश में अव्यवस्था और अस्थिरता फैल जाएगी। उससे अराजकता फैल जाएगी। कांग्रेस अभी न तो वामदलों और ना ही लालू-मुलायम के बहकावे में आ रही है यह उसकी परिपक्वता की गवाही देता है। भाकपा के सुरजित सिंह जैसे, नेताओं के आह्वान पर शरद पवार का कहना था कि सत्ता में आने पर जैसे ही कांग्रेस आर्थिक मसलों पर अपने ढंग से कुछ फैसला करना प्रारम्भ करेगी, इस का रुख बदल जाएगा। भाजपा के सहयोगी दलों को फोड़कर यदि कांग्रेस सरकार बना भी लेती है तो उसका हस्र वही होगा जो संयुक्त मोर्चे अथवा वाजपेयी की सरकार की हो रही है। जयललिता जो शर्तें वाजपेयी जी पर थोंप रही हैं; क्या गारंटी है कि कांग्रेस पर वह नहीं थोपेंगी ? फिर वामपंथी तथा राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चा के लोग जो उछल-उछल कर सरकार को गिराने के लिए आह्वान कर रहे हैं, वे कितने दिन तक उनके साथ रहेंगे इसकी भी कोई गारंटी नहीं है।

डी. लिट्. उपाधि का परित्याग

पटना, 16 अक्टूबर'98। साहित्यकार डॉ. ब्रह्मदेव प्र. कार्यी (रीडर, हिन्दी-विभाग, सी. एम. कॉलेज दरभंगा) ने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा आर्थिक एवं मानसिक रूप से उत्पीड़ित किये जाने के कारण अपनी डी. लिट्. उपाधि अपराह्न 4.20 बजे बिहार के महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति को भारत के राष्ट्रपति महोदय को संबोधित एवं निवेदित ज्ञापिका के साथ समर्पित कर दिया।

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस (रूपक सिनेमा के पूर्व)
बाकर गंज, पटना-800 004
दूरभाष : 662837

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)
दूरभाष : 65769, फैक्स : 65123

आधुनिक आभूषण के निर्माता
नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी तथा
हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा आयोजित

लौह पुरुष सरदार पटेल

के १२३वें जयंती-समारोह

के अवसर पर

हमारी शुभकामनाएं –

प्रकाश टॉकिज

फुलवारीशरीफ

पटना–801505

GOLDEN

GOLDEN POLYMEX (INDIA) LIMITED

Regd. Office :
Uma Shanker Lane, Mogalpura, Patna City-800008
Ph. : 640212, 640015, Fax : 0612-644525

Mfrs. Of :

High Barrier - Extruded Multilayar Films
H.M., LLDPE, LDPE Bags, Gravure
&
Flexo Printing etc.